



॥ श्रीश्रीनारायण नमः

अथ

पवित्र श्रीमोक्षनविजयविगचिन नमंदा
सुन्दरीनो गण प्रारंभः ॥

प्रभु चरणांयुजरज तणी, बज्जीने होय दोक ॥
मायो बली जग जेहनो, बिदु अहरने श्लोक ॥ १ ॥
धारक अतिशय गढ़वा, जिन सुरगिरि परं धीर
॥ हुं प्रणमुं ते धीरने, गौतम जास वजीर ॥ २ ॥
कवि सुरतरु शोभायवा परचूत तनया पूत ॥ ज्ञान
बंझने बंझिका, कृपा करी अति नूत ॥ ३ ॥ जड
ताखय मुझा जणी, जनु रूपा स्वयमेव ॥ शब्दोदधि
तारण तरी, सा जारति प्रणमेव ॥ ४ ॥ गुरु गुण
मणि हारावली, धरियें हृदय तटेण ॥ कीधो तजी
पिपीलिका, मत्त मतंग जळेण ॥ ५ ॥ जिन गुणहर
जारति सुगुरु, प्रणमी चरण रसेण ॥ धर्मोद्यम कीजे
सदा, सवि सुख लहियें जेण ॥ ६ ॥ चार जेद ते
धर्मना, दान शील तप जाव ॥ तेहमां शील विशेष
ठे, कष्ट रत्नागर जाव ॥ ७ ॥ चहुश्रवण शीलें करी,

(२)

थयो कुसुमनी माल ॥ पावक पण पाणी थयो, शीलें
सिंह शीयाल ॥ ७ ॥ शीलरूप सन्नाहथी, मन्मथ
नृपनां वाण ॥ वेधी न शके वदने, रे मन मृषा म
जाण ॥ ८ ॥ शीलतणे अधिकार अथ, नमया सुंदरि
चरित्र ॥ रचीश शास्त्र अनुसारथी, वर्णव करी
विचित्र ॥ ९ ॥ सांजलजो श्रोता नरो, मित्र पुत्र
स्थिर लाय ॥ पण पीतां करतां रखे, महिषी किन्नर
न्याय ॥ १० ॥

॥ ढाल पहेली ॥ देशी चोपाइनी ॥

जंबूद्वीप जोयण एक लाख, साधक त्रिगुणी परि
धिनी जाख ॥ क्षेत्र सात तिहां अति विस्तार, ना
म मात्र कहुं तास विचार ॥ १ ॥ जरह औरवय पांच
सैं ठवीश, ठकला तास उवरी सुजगीश ॥ हेम ऐरण्य
ठे सहस्रग इगसत्त, पण जोअण पण कला पमत्त
॥ २ ॥ आठ सहस्र चउसय एकवीश, एक कला
हरि रम्यक जगीश ॥ तित्तिस सहस्र ठसय चूल ने
ह, चार कला ए मान विदेह ॥ ३ ॥ ठ कुलगिरि ए
द्वीप मजार, तास तणो हवे कहिश विचार ॥ जो
यण एक सहस्र वावन्न, वार कला हिमशिखरी मन्न
॥ ४ ॥ महा हेमवंत रूपी चार हजार, छुसय दश

जोयण दश कला विस्तार ॥ निपथ नील तोराहस
 झगसत, दोय चला ए गिरि पमन ॥ ५ ॥ सत्त पित्त
 पट कुलनिरि दाख, मेळतां होय जोयण एक लाख
 ॥ जिनघर वचनं करीचें प्रमाण, तेहथी को नहिं अधि
 को जाण ॥ ६ ॥ हवे जरहेजन पद वेदर्न, मनुज लो
 क शोचानो गर्ज ॥ वन उपवनने गहन विशेष, तर
 णि किरण करी न शके प्रवेश ॥ ७ ॥ अति उत्तंग
 शिखर गिरि तणां, खडबडे वहेतां रह रवितणा ॥
 जरे तसमानुं निजरणां जखेख, मानुं गंगाधर प्रक
 ट्यो अनेक ॥ ८ ॥ अवनी वनिता जाल समान, रति
 रमणीयक देश प्रधान ॥ नगरी वर्धमाना युतिदरी,
 अलकानी शोचा रहि परी ॥ ९ ॥ शंकाये लंका वा
 पडी, मूकी सुरनगरी घापडी ॥ सासय नगरीयें वं
 दिका, नू जामिनी कुंकुम विंदिका ॥ १० ॥ मंदिर
 सुंदर गढ मढ पोल, सोहे विजय तणी तिहां उज ॥
 वर्ण अढार वसे गुणवंत, निज निज धर्म सदा निव
 हंत ॥ ११ ॥ अतिहि कृपण महिसुर तिस्या, विह्वर तो
 क्षीरोदधि जिस्यां ॥ कडूइ वाणी साकर जिसी, ते
 हनी उपमा दीजे कीसी ॥ १२ ॥ एहवा मूढ रहे गह
 गही, अवगुण सुणवो शीख्या नहीं ॥ हृदय कठोर

(४)

जेहबुं नवनीत, हरिचंद्र नृप सरसी अप्रतीत ॥१३॥
 उना इंडुकिरण सारिखा, निर्धन धनद जिस्या पार
 ख्या ॥ वांका कमलनालिके तीर, निःस्नेही जिम ज
 ल ने खीर ॥ १४ ॥ निरुपकार जेम रंजाखंज, अप्रि
 य तो जेम देवी जंज ॥ दुःखीयां जेम दो गुंदक दे
 व, विरुआं कामदेव अजिनेव ॥ १५ ॥ व्यवहारी
 व्यापारी वसे, धर्म कारजें सवि धस मसे ॥ परउप
 कारी परम प्रवीण, जिनवर वचन थकी लयलीन
 ॥ १६ ॥ पजणी प्रथम ढाल रस मणी, नर्मदा सुंदरी
 सुचरित्र तणी ॥ आगल वात रसाल विशेष, कहे
 हवे मोहन तिहां नरेश ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रतिपादे पुरजन जणी, संप्रति नामें झूप ॥
 रह्यो दर्प तजी काम नृप, देखी सुंदर रूप ॥१॥ हरवा
 दुर्जनमहिघटा, अतुलीबल शार्दूल ॥ परिजन हंस
 रमाडवा, अजिनव गंगाकूल ॥ २ ॥ अरियण सहिं
 ता झूप बल, सेवे गिरिदरी झूप ॥ जेम जल विह
 तो ग्रीष्मथी, वसे रहे जई कूप ॥ ३ ॥ ख्याग त्याग
 वाचा अचल, न्यायें निपुण नरिंद ॥ धवलीकृत दि
 ग दश जिणें, करी उदय जस चंद ॥ ४ ॥ रति रू

(५)

पा पहरागिणी, रतिसुंदरी नामेण ॥ कीधो मुख
आजासथी, जांखो उमुपति जेण ॥ ५ ॥ एक पक्ष
उज्ज्वल करे, नज्जचर चंद्र प्रसिद्ध ॥ राणीमुख को
ई अपर शशी, बिहु पक्ष उज्ज्वल कीध ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

प्रवहण तिहांथी पूरीथुंरे लाल ॥ ए देशी ॥
नगरचूपण सरिखो तिहां रे लाल, वृषजसेन सा
थेंश ॥ गुणवंता रे ॥ रयणायर सरिखो धने रे ला
ख, जलदधि दाता विशेष ॥ गुं० ॥ १ ॥ सांजल
जो श्रोता जना रे लाल ॥ शीखतणो संबंध ॥ गुं० ॥
सरस वचन रचना तिसी रे लाल, जेम सोनूने सु
गंध ॥ गुं० ॥ सां० ॥ जलवट थलवटना करे रे
लाल, ड्रव्य वलें व्यवसाय ॥ गुं० ॥ महिपति पण
माने घणुं रे लाल, धने वश कोण न थाय ॥ गुं०
॥ सां० ॥ ३ ॥ सोनुं रुपुं सामहुं रे लाल, मणि मा
णिकना पुंज ॥ गुं० ॥ कर धरे मोती दासीयो रे
लाल, परिहरि जाणी गुंज ॥ गुं० ॥ सां० ॥ ४ ॥ वी
रमती तस गेहिनी रे लाल, लाजें नृतलोचन ॥
गुं० ॥ शीख धर्मनी जाणीयें रे लाल, अजिनव नृ
मि जतन ॥ गुं० ॥ सां० ॥ ५ ॥ पतिजक्ति चंद्रान

नी रे लाल, कोपनो नहिं संसर्ग ॥ गु० ॥ गुणमणि
 खाणी गोरडी रे लाल, रूपकला अपवर्ग ॥ गु० ॥
 सां० ॥ ६ ॥ विलसे विविध ते दंपती रे लाल, सां
 सारिक सुखचोग ॥ गु० ॥ रामा राम नीरोगता रे
 लाल, लहीयें पुण्य संयोग ॥ गु० ॥ सां० ॥ ७ ॥ वे
 अंगज ठे तेहने रे लाल, वीरसेन सहदेव ॥ गु० ॥
 दिनकर हिमकर सारिखा रे लाल, जोडे परम गुण
 मेव ॥ गु० ॥ सां० ॥ ८ ॥ ऋषिदत्ता बेटी सहजथी
 रे लाल, किन्नरी सुंदरी अणुहार ॥ गु० ॥ बालपणें
 सघली कला रे लाल, शीखी पूर्वसंस्कार ॥ गु० ॥
 सां० ॥ ९ ॥ ऋषिदत्ता विहु सहजथीरे लाल, हसेय
 रमेय अति प्रेम ॥ गु० ॥ सोहे वे मोती वच्चें रे लाल,
 राती चूनी जेम ॥ गु० ॥ सां० ॥ १० ॥ वीरमती
 निजपुत्रीने रे लाल, वेसाडे उत्संग ॥ गु० ॥ नित्य
 आचूषण नव नवां रे लाल, स्थापे नेहें अंग ॥ गु०
 ॥ सां० ॥ ११ ॥ बालुडां जस आंगणें रे लाल, धूल
 धूसर नरमंत ॥ गु० ॥ कारागार आगार ते रे लाल,
 जाणीयें अहो पुण्यवंत ॥ गु० ॥ सां० ॥ १२ ॥ हवे
 अनुक्रमे वधती थई रे लाल, बाला मायारूप ॥ गु०
 टाले नहिं निज देहथी रे लाल, लज्जादौम अनूप ॥

गु० ॥ सां० ॥ १३ ॥ जनकें जणवा पावरीरे लाल,
 सा अध्यापक गेह ॥ गु० ॥ जैनधर्म नलो अन्यसे
 रे लाल, लघुधर्मथी धरी नेह ॥ गु० ॥ सां० ॥ १४ ॥
 जीसे अहिंसा तटिनी तटे रे लाल, लीधो विनय
 कज गंध ॥ गु० ॥ चाखी समकित सूखडी रे लाल,
 जाण्यो जैनप्रबंध ॥ गु० ॥ सां० ॥ १५ ॥ निष्ठा एक जि
 नधर्मनी रे लाल, मिथ्यात्वथी प्रतिकूल ॥ गु० ॥ वि
 कथा सयें विरमी रही रे लाल, जेम दल गलित
 तांबूल ॥ गु० ॥ सां० ॥ १६ ॥ पुत्री माही पेखीने
 रे लाल, हरखे तात अतीव ॥ गु० ॥ तात प्रभृति स
 हु को करे रे लाल, धर्मकथा ते सदैव ॥ गु० ॥
 सां० ॥ १७ ॥ जेहवी संगति कीजीए रे लाल, तेह
 वा गुणनी केल ॥ गु० ॥ कुसुमनी संगतिथी तेजें रे
 लाल, पाम्युं नाम फुलेल ॥ गु० ॥ सां० ॥ १८ ॥
 पामी वीरमती सुतारे लाल, यौवनवय सुकुमाल ॥
 गु० ॥ मोहनविजयें वर्णवीरे लाल ॥ बीजी ढाल र
 साल ॥ गु० ॥ सां० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

सा पुत्री नवयौवना, देखी चिते तात ॥ पुरमें को
 इ महेज्यसुत, जोइ करुं जामात ॥ १ ॥ पुर स

वर कारणे, जोयुं करी तलास ॥ पण वर पुत्री सारि
 खो, न मढ्यो कोइ तास ॥ २ ॥ मिथ्यादृष्टि नयरमें,
 अठे घणा धनवंत ॥ तस घर तनुजा आपतां, मन
 नवि धारे संत ॥ ३ ॥ केम दे श्रावक बाळिका,
 मिथ्यात्वीने गेह ॥ केम दीजे चंमालने, वुंदा तरु
 ससनेह ॥ ४ ॥ मणि न जडे कोइ लोहमें, म्हेली कुंदन
 पत्र ॥ वृषजसेन एम मनमें, आलोचे एकत्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

हारे माहरे जोबनीयानो लटको दहाडा चार
 जो ॥ ए देशी ॥ हारे हवे आव्यो ए हवे रूपचंद्र
 पुरहुत यो ॥ वारु रे रुद्रदत्त नामा वाणीयोरे लो ॥
 हारे कांइ करवा वाणिज्य वर्द्धमान पुरमांहि जो,
 दोइने करियाणुं लोकें प्रमाणीयोरे लो ॥ १ ॥ हारे
 तेणे वेची साटी सयण वसाणानी कोडिजो, कीधा
 रे तेणे गांठे दाम सोहामणा रे लो ॥ हारे जस पु
 ण्य सखाइ ठे तेहने शी खोड जो, एके के पगळे रे
 पुंज मणितणा रे लो ॥ २ ॥ हारे तेणे पहेरी अंबर
 सखरां चहूटामांहि जो, हिंडे ते मोडामोडे ठेलशुरे
 लो ॥ हारे परदेशीनी परगाममें एहिज रीति जो,
 फोगटीयो थड फूले धोची वेळशुरे लो ॥ ३ ॥ हारे तेणे

जमतां जमतां पुरमां कीधो मित्र जो, कुबेरदत्त नामा
 एक व्यवहारीयोरे लो ॥ हारे तस मांहोमांहे बाजी
 पूरण प्रीति जो, ससनेही नेहीनी वात ठे ज़ारीयोरे
 लो ॥ ४ ॥ हारे एम जांखुं कुबेरे अहो अहो मित्र
 रुद्रदत्त जो, बंधाणी तुमसेंती माया आकरीरे लो ॥
 हारे तुम्हे परदेशीडा कामणगारां लोक जो, पंखीनी
 पेरे जाउं न मिलो फरीफरीरे लो ॥ ५ ॥ हारे मेंतो
 मित्रजी माहरा कहींयें आ पुरमांहि जो, नेहडलो
 नवि कीधोरे कोइथी एवडोरे लो ॥ हारे मारी विन
 ति मानो आबो मंदिरमुक्त जो, कांइ जो पोताना
 करीने त्रेवडोरे लो ॥ ६ ॥ हारे हुं तो जाणीश की
 धी मुक्ते करुणा जोर जो, प्राहूणला तुम जेहवा
 किहांथी आंगणोरे लो ॥ हारे तुम जेहवा नरथी
 क्यांथी एक घडी गोठ जो, जेह तेहथी वातडली
 करतां नवी बने रे लो ॥ ७ ॥ हारे तुम्हे इहां तो
 रहेता हशो कोइकने गेह जो, तेहथी शुं घर जूं
 कहोजी आपणुरे लो ॥ हारे तुमे रहेशो तेता दिन
 करशुं गुजराण जो, फेरीने शुं कहींयें तुहने घणुं
 घणुरे लो ॥ ८ ॥ हारे कोइ वातनो अंतर त्रेवडो
 माहरा राज जो, करशुं जे काइ थाशे अमथी चा

करीरे लो ॥ हारे अमें लेशुं सो सो लोटणां तुम्ह
 हजूर जो, कहियें ठे पयललीया साहिव अनुसरी
 रे लो ॥ ए ॥ हारे तव वोढ्यो ततहिण रुद्रदत्त
 हित लाय जो, जाइजी तुम्हें जांखुं ते अमें शिर
 धखुं रे लो ॥ हारे कांइ तुम अम मेलो हूँ पूरव
 लेख जो, दैवे ए मनगमतुं काम जलुं कखुं रे लो ॥
 ॥१०॥ हारे जो तुमचो हेत ठे अम उपर परिपूर्ण
 जो, अलगा रहीयाथी तोइयें हूंकडा रे लो ॥
 हारे जूँ गयण घनावन उमहे जूतल मोरजो,
 मंके रे ते तांडव रसवशे रूपडारे लो ॥ ११ ॥ हारे
 जुँ किहां दिनकरने किहां कैरववन्न जो, तोहीपण
 विकसे ते साचा नेहथी रे लो ॥ हारे कांइ क्यारे
 कोइथी टाढ्यो पण न टलंत जो, मानेतो मनमे
 लो होय जेहथी रे लो ॥ १२ ॥ हारे तुमें राजी जो
 ठो मुकथी आवे गेह जो, तो तुमने किमा डु
 हबुं कहो ओडे गजेरे लो ॥ हारे एम कहीने रुद्र
 दत्त आव्यो मित्रने गेह जो, लाखेणी मनुहारो ते
 सखरी सजेरे लो ॥ १३ ॥ हारे रहियो ते परदेशी
 मित्रना मंदिर मांदि जो, पोताना कुटुंबनी परे सह
 अइ रखां रे लो ॥ हारे ते खाये पीये निरय नवला

आहार जो, किणहि परे पर करीने नयी ब्रह्मो रे
 लो ॥ १४ ॥ हारे ते वेगो रुद्रदत्त एक दिन गोमम
 जार जो, जूए पुरकेरी शोभा नयणयी रे लो ॥ एतो
 मोहन विजयें जांखी ब्रीजी ढाल जो, स्नेहाली
 हितकारी मीठी बाणियेंरे लो ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

दीवी रुतदत्त एहवे, कपिदत्ता सोत्साह ॥ स
 खीयां संगें परवरे, घाबिने गले वांहि ॥ १ ॥ घाला
 सघली विविहपरें, हसती रमती त्यांहि ॥ एक एकने
 ताली दीये, चाले चहूटा मांहि ॥ २ ॥ जाणे शा
 बक हंसना मानसरोवर पंति ॥ खेले मुख करी के
 सरा, तिम बाला शोजंति ॥ ३ ॥ सा देखी परदेशी
 यो, चिते चित्थी एम ॥ खेचरपुत्री नगरमां रमवा
 आवी केम ॥ ४ ॥ के शुं प्रगटी पन्नगी, पुहवीतल
 यी एह ॥ एतो कौतुक सारिखुं, दीसे ठे ससनेह ॥
 ॥ ५ ॥ एहवे तिणहिज अवसरे, मूर्धागत थयो
 तेह ॥ धडहडीने धरणी ढव्यो, जिम गिरिवर शि
 खरेह ॥ ६ ॥ मूर्ति देख्यो मित्रने, आव्यो कुवेर
 वरवीर ॥ कीध सचेतन ततखिणें ढोली मंद
 समीर ॥ ७ ॥

करीरे लो ॥ हारे अमें लेशुं सो सो लोटणां तुम्ह
 हजूर जो, कहियें ठे पयललीया साहिव अनुसरी
 रे लो ॥ ए ॥ हारे तव वोढ्यो ततदिण रुद्रदत्त
 हित लाय जो, जाइजी तुम्हें जांख्युं ते अमें शिर
 धख्युं रे लो ॥ हारे कांइ तुम अम मेलो हूउं पूरव
 देख जो, दैवे ए मनगमतुं काम जलुं कख्युं रे लो ॥
 ॥१०॥ हारे जो तुमचो हेत ठे अम उपर परिपूर्ण
 जो, अलगा रहीयाथी तोइयें ठूंकडा रे लो ॥
 हारे जूउं गयण घनाघन उमहे झूतल मोरजो,
 मंके रे ते तांडव रसवशे रूपडारे लो ॥ ११ ॥ हारे
 जुउं किहां दिनकरने किहां कैरववन्न जो, तोहीपण
 विकसे ते साचा नेहथी रे लो ॥ हारे कांइ क्यारे
 कोइथी टाढ्यो पण न टलंत जो, मांनेतो मनमे
 लो होय जेहथी रे लो ॥ १२ ॥ हारे तुमें राजी जो
 ठो मुऊथी आवे गेह जो, तो तुमने किमए ड
 हवुं कहो थोडे गजेरे लो ॥ हारे एम कहीने रुद्र
 दत्त आव्यो मित्रने गेह जो, लाखेणी मनुहारो ते
 सखरी सजेरे लो ॥ १३ ॥ हारे रहियो ते परदेशी
 मित्रना मंदिर मांहि जो, पोताना कुटुंबनी परे सहु
 थइ रह्यां रे लो ॥ हारे ते खाये पीये नित्य नवला

(११)

आहार जो, किणहि परे पर करीने नबी लखी रे
 लो ॥ १४ ॥ हारे ते बेगो रुद्रदत्त एक दिन गौणम
 जार जो, जूए पुरकेरी शोना नयणयी रे लो ॥ एतो
 मोहन विजयें जांखी श्रीजी डाल जो, रनेझांखी
 हितकारी मीठी बाणियेंरे लो ॥ १६ ॥ सर्व गाथा
 ॥ दोहा ॥

दीठी रुतदत्त एहवे, कृपिदत्ता सोरसाह ॥ स
 खीयां संगें परवरे, घाखिने गले घांदि ॥ १ ॥ चाला
 सघली विविहपरें, हसती रमती त्यांदि ॥ एक एकने
 ताली दीये, चाले चहूटा मांदि ॥ २ ॥ जाणे शा
 वक हंसना मानसरोवर पंति ॥ खेले मुख फरी के
 सरा, तिम चाला शोजंति ॥ ३ ॥ सा देखी परदेशी
 यो, चिते चित्थी एम ॥ खेचरपुत्री नगरमां रमचा
 थावी केम ॥ ४ ॥ के शुं प्रगटी पद्मगी, पुद्गीतल
 थी एह ॥ एतो कौतुक सारिखुं, दीसे ठे ससनेह ॥
 ॥ ५ ॥ एहवे तिणहिज थवसरे, मूर्धागत थयो
 तेह ॥ धडहडीने धरणी ढढ्यो, जिम गिरिवर शि
 खरेह ॥ ६ ॥ मूर्ति देख्यो मित्रने, थाव्यो कुवेर
 वरवीर ॥ कीध सचेतन ततखिणें, ढोली मंद
 समीर ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

रंग रहो रे रस रहो रे फूल गुलाबरो ए देशी ॥
 बांधव कहो ए शुं हतुं, मूर्खा पाम्या एमहो रसीया
 रे मित्रजीरे जांखो मया करो ॥ ए आंकणी ॥ ते
 कारण मूजने कहो, जाण्युं जाये जेम हे ॥ २० ॥ १ ॥
 वगर कहे केम जाणीयें, पारका मननी वात हे ॥
 २० ॥ खोली मन साचुं कहो, जेम जाणुं परमार्थ
 हे ॥ २० मी० ॥ २ ॥ जे कांइ मूजथी सीकरो, ते
 तो करीश हुं काम हे ॥ २० ॥ वचन कुबेरदत्तनां सु
 णी, बोळ्यो रुद्रदत्त ताम हे ॥ २० ॥ मी० ॥ ३ ॥ अ
 हो अहो सज्जन माहरा, अकथ कथा ठे एह ॥ २०
 ॥ तो तुम आगलें जाखीयें, जो तुमथी होये तेह हे
 ॥ २० ॥ मी० ॥ ४ ॥ नहिं तो कुण नांखे कहो, जल
 मे कंचन जाल हे ॥ २० ॥ दुःख ते आगल दाखीये,
 जे टाले तत्काल हैं ॥ २० ॥ मी० ॥ ५ ॥ ते तो कोइ
 नहिं जगतमें, जे जाणे परपीर हे ॥ २० ॥ गोष्टि ज
 ली तेहथी कही, मनमेलू जे वीर हे ॥ २० ॥ मी० ॥ ६ ॥
 रोग होवे तो वैद्यने, दाखीयें करी उपाय हे ॥ २० ॥
 पण ए अंतर गत तणी, कोइ थकी न कलाय ॥ २०
 ॥ मी० ॥ ७ ॥ ते माटे तुमने किसुं, कहीयें कहो म

हाराज हे ॥ २० ॥ मन ए जाणे माहरुं, वात सवे
 शिरताज हे ॥ २० ॥ मी० ॥ ७ ॥ बोढ्यो कुबेरदत्त
 फरी, कहो कहो मनमें हूंस हे ॥ २० ॥ जो न कहो
 मुज आगलें, तो ठे तमने सूंस हे २० ॥ मी० ॥ ८ ॥
 वचन सुणी एम मित्रनां, जांखे रुद्रदत्त जांख हे ॥
 २० ॥ हमणां इहां वेगो हतो, हुं आपणे गोख हे
 ॥ २० ॥ मी० ॥ १० ॥ तेहवे में दीठी घालिका, कि
 जरी सरखी एक हे ॥ २० ॥ विस्मय हुं पामी रह्यो
 देखी रूपविवेक हे ॥ २० ॥ मी० ॥ ११ ॥ विधाता
 ए केम घडी शक्यो, एहवे रूपे एहरे ॥ २० ॥ एक
 ज वक्र विलोकतां, नवलो कीधो नेह रे ॥ २० ॥
 मी० ॥ १२ ॥ वाला ए प्रेमनी सांकली, सांकली
 गइ ततखेव रे ॥ २० ॥ काम शिलीमुख देइ गइ,
 किणही न जाण्यो जेद हे ॥ २० ॥ मी० ॥ १३ ॥
 साले ठे नट सालसी, कण कण हियडा मांहिहे
 ॥ २० ॥ वसती नगरीमां गइ, चित्त चोरीने आंहि
 हे ॥ २० ॥ मी० ॥ १४ ॥ ए पुत्री ठे केहनी, मित्र
 कहो मुजतेह हे ॥ २० ॥ जिम ते वाला जोयवा,
 पोंहचूं तेहने गेह हे ॥ २० ॥ मी० ॥ १५ ॥ त्रिण
 दीठे ते घालिका, कांइ एह न सूहाय हे ॥ २० ॥

जलथी ते मीन वियोगीजं, तेहनी शी गति थाय
 हे ॥ २० ॥ मी० ॥ १६ ॥ कुबेरदत्त हवे बोलशे,
 बाणी अतिहिं रसाल हे ॥ २० ॥ मोहनविजये सोहा
 मणी, जांखी चोथी ढालरे ॥ २० ॥ मी० ॥ १७ ॥
 सर्वगाथा.

॥ दोहा ॥

कुबेरदत्त हवे मित्रने, जाखे वचन सुरंग ॥ रे
 जाई ए शो कस्यो, खोटो चित्त उमंग ॥ १ ॥ वृषजसे
 ननी पुत्रिका, ए ऋषिदत्ता नाम, आज लगण पर
 णी नथी, सुकलीणी गुणधाम ॥ २ ॥ जैनधर्म सम
 कित धरो, ठे कन्यानो तात ॥ तेणें करी करतो न
 थी, मिथ्यात्वी जामात ॥ ३ ॥ समकितधारी एह
 वो, जो वर मलशे कोय ॥ तो ए तस परणावशे,
 दूधें पयतल धोय ॥ ४ ॥ तुमने अमने त्रेवडे, मि
 थ्यात्वीनुं रूप ॥ तो तस पुत्री उपरे, खोटी न करो
 चूंप ॥ ५ ॥ काम ए मुजथी नवि होये, रे सूरिजन
 महाराज ॥ ढालच खोटी नहि दीजं, ढाजें विणसे
 काज ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए दे

शी ॥ रुद्रदत्तनी सुणी वाणी, तदा ठानो रह्यो ॥ पा
 ठो अक्षर एक, फरीने नवि कह्यो ॥ आलोचे मन
 मांहि, उपाय कोइ करुं ॥ कपटें पण साग्रेंश तणी
 पुत्री वरुं ॥ १ ॥ जो इण अवसर मादरी, बुद्धि न
 केळवुं ॥ तो पठे आवशे काम, कहे ठल खेलवुं ॥
 मित्र थकी तो एह, कारज नवी उघडे ॥ तो निः
 स्वारथ कोण, पूंठे एहनी पडे ॥ २ ॥ हुं हवे माद
 री मेले, प्रपंच करुं वही ॥ पण श्रुपिदत्ता एह, बरेवी
 में सही ॥ निर्गत जे गजदंत, फरी पेसे नहीं ॥ के
 की पीठ सुरंग, मटे नही लोकहिं ॥ ३ ॥ उद्यम वि
 ण ए काम, किस्ती परें सीजशे ॥ ज़ारी होशे कंठ
 ल, जेम जलें जौजशे ॥ रण धण कण गुणमाट, बिलंब
 न कीजीये ॥ लासर जाखी वात, तेणे न पतीजीयें
 ॥ ४ ॥ ए जिनधर्म श्रावक, केरी बालिका ॥ एह
 ना जिननी वाणी, तणी प्रतिपालिका ॥ हूं तो श्राव
 क धर्मनो, मर्म जाणुं नहीं ॥ मन तो बरवा काज,
 रहुं ठे उम्मही ॥ ५ ॥ तेमाटे हवे साधु, समीपें
 जाइने ॥ शीखूं गृहस्थ आचार, के उद्यम लाइने ॥
 पठे श्रुपिदत्ता तात, तणे संगें रहुं ॥ जोगवी कन्या
 तास, बरी वांछित लहुं ॥ ६ ॥ उख्यो करी आलोच,

रुद्रदत्त एहवे ॥ पहेरी वस्त्रने जूषण, जे अंगें फवे ॥
 पहोतो पूठत पूठत, तेह उपासरे ॥ वंदी वेगो ताम,
 के साधु उपाश रे ॥ ७ ॥ गुरु पूठे महानुजाव, क
 हो कीहां रहो ॥ दीसो ठो गृहस्थ विवेकी, जखो
 विनय बहो ॥ सांजलो तो कांइ धर्म, कथा संजला
 वियें ॥ एके अक्षर सांजलीये, जो इहां आवीयें ॥
 तव बोल्यो रुद्रदत्त, हसी कपटें करी ॥ जी स्वामी
 उपदेश, दीयो मुजहित धरी ॥ धर्म कथाने काज,
 आव्यो तुं तुम कन्है ॥ सीकें जेहूथी काज, आदे
 सो ते मुने ॥ ८ ॥ आरंभ्यो उपदेश, गुरु तस आ
 गले ॥ ते पण कपटी नीचे, नयणे सांजले ॥ गुरु क
 हे सखली वस्तु, अधिर करी जाणीयें ॥ स्वार्थजुत
 संबंध, करीने प्रमाणीयें ॥ ९ ॥ ए संसार असार
 नां, कोइ कोइनुं नही ॥ साचो एक थीं जिनधर्म,
 सखाई ठे सही ॥ जीव करेते पाप, कुदंबने पोष
 वा ॥ एए जोगवनां पाप, न आवे संतोषवा ॥ १० ॥
 तरला तोय तरंग, तिम्यो धनगावो ॥ वाजीगरना
 गनो जव धारवो ॥ धन धरणी धान, न कोइ
 गयो ॥ जिहां जइ जगन्यो लांछि, जिहां तेह
 ययो ॥ ११ ॥ सुगनुमाने ॥ १२ ॥

रीबडो ॥ तेम घन तृण्णा माटे, अटे ए जीवडो ॥
 जेणे जिमणे हाथे, करी धन वापसुं ॥ तेणे नुरगति
 छार, सहि करी आचसुं ॥ १३ ॥ दान थकीज गृ
 हस्थ, करे शुचि आतना ॥ दुष्कर तप तपि शुद्ध,
 हूये महातमा ॥ समकित रत्न अमूल, तणो खप
 कीजीये ॥ वली उपशमरस खाद, करीने पीजीये ॥
 १४ ॥ एम निसुणी उपदेश, कहे रुद्रदत्त हसी ॥
 अहो गुरु समकितवात्त, हवे चित्तमां घसी ॥ पांच
 मी ढाल रसाल, आनंद उपजावती ॥ मोहन विजये
 रंग, कही मन जावती ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रुद्रदत्त कर जोडीने, चांखे गुरुने हेव ॥ सूधो
 श्रावक मुजकरो, दीन दयालु देव ॥ १ ॥ दिन एता
 झूलो जम्यो, पाम्यो हवे जिनधर्म ॥ शीखवो श्राव
 कनी क्रिया, दया करी गुरु हर्म ॥ २ ॥ मूक्युं हवे
 मिथ्यात्वने, दीन पिता महाराज ॥ उदय थयो
 समकिततणो, अंतरंग दिनराज ॥ ३ ॥ सुगुरुये
 जाण्युं ए सुगुण, दिसे मानव कोय ॥ लाज वरुं श्रावक
 करी, जेम लहुं कर्मी होय ॥ ४ ॥ श्रावकधर्म तणी
 क्रिया, सयल शीखावी ताम ॥ रुद्रदत्त हरख्यो हिं

ये, सफल हशे हवे काम ॥ ५ ॥ जेम करिवरें पी
धी सुरा, जेम पाखख्यो मृगराज ॥ तेम कपटी ठाकें
चढ्यो, वरवाने ससमाज ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठहरी ॥

राजा जो मिले ॥ ए देशी ॥ रुद्रदत्त विषये थ
यो लीन, मांस पेशीथी जेहवोज मीन ॥ धिक् धिक्
कामने ॥ जेणे धूत्यो अखिल संसार, धिक् धिक् का
मने ॥ एथांकणी ॥ नर सुर असुर अपर पण जाण,
कामें तास मनावी थाण ॥ धि० ॥ १ ॥ कौशिक दिन
कर वायस चंद, देखी न शके कहे कविचंद्र ॥ धि० ॥
पण कामी जन रजनी दीस, पेखे नहि नहिं ए जग
दीश ॥ धि० ॥ २ ॥ पंचानन करिवर अहि थोक,
जीते जुजवदर्थी बहु लोक ॥ धि० ॥ जे जरा जीरु
जीते धरी ठेक, नर कोडीमां कोइक एक ॥ धि० ॥ ३ ॥
परशस्त्र ठेदे मूर सपराण, पण ठेदे कोइ मनमथ वा
ण ॥ धि० ॥ कामे कुण कुण न कर्यां काम, कामे
न गंज्या तास प्रणाम ॥ धि० ॥ ४ ॥ हवे रुद्रदत्त
रूपिसंग निवारि, हूड कपट आवक लेणी चार ॥
धि० ॥ आठ्यो वृषजसन लोणे गेहू, मिलियो कपटी
आली नेहू ॥ धि० ॥ ५ ॥ नीपट घणी कीची मनुहार,

दीधुं आसन सार्थेशे तिवार ॥ धि० ॥ किहांची आठ्या
 जाशो किहां मित्र, नाम कहो तुम कवण पवित्र ॥
 धि० ॥ ६ ॥ इण मंदिर करुणा करी केस, जांखो
 जेह्यी जाणुं जेम ॥ धि० ॥ वोख्यो कपटी श्रावक
 तेय, अंबर ठेहडो मुहडे देय ॥ धि० ॥ ७ ॥ नयर
 अमारुं ए संसार, लाख चोराशी योनि आगार ॥
 धि० ॥ जीव संसारी ठे ते मूऊ, तुम्ह ते शुं राखी
 ये गुघ ॥ धि० ॥ ८ ॥ अनुक्रमें जैन नगरमें दीठ,
 चारित्रधर्म नृप जेटो ईठ ॥ धि० ॥ सद्योधनामा
 तास प्रधान, दीधुं मुजने छावश व्रत दान ॥ धि०
 ॥ ९ ॥ परणाववा मांडी दश वाल, पण में मन न
 करुं ततकाल ॥ धि० ॥ कीधो श्रावक मुजने तेण,
 जिनजक्तियुत परम गुणेण ॥ धि० ॥ १० ॥ इम
 नीसुणी चिते सार्थेश, पूरण अ श्रावक सुविशेष
 धि० ॥ अहो अहो जिनधर्मो वडजाग, परणीते
 परण्यो ठे कहेवो वैराग ॥ धि० ॥ ११ ॥ धन धन
 एहने सवि सुख होय, जव्य प्राणी दीसे ठे कोय
 धि० ॥ पुनरपि पूठे सार्थ एवाच, अहो धार्मिक तमें
 वोख्या साच ॥ धि० ॥ १२ ॥ ए पुर घर नृप मंत्री
 ज्ञात, ए तो तमे कही ज्ञाननी वात ॥ धि० ॥ पण -

द्रव्यथी कहो नगरी नाम, सांजलियें श्रवणे गुण
 धाम ॥ धि० ॥ १३ ॥ आग्रह सार्थेशकेरो जाणि, बोख्यो
 धूरत निगुण अयाण ॥ वसिये रूपचंद्रपुर गाम, श्रावक
 रुद्रदत्त माहरुं नाम ॥ धि० ॥ १४ ॥ इहां तुं आव्यो
 तुं वाणिज्य काज, तुमने श्रावक सुण्या महाराज ॥
 धि० ॥ साधमीनी सगाइ जाणि, आव्यो तुं मलवा
 इहां सुविहाण ॥ धि० ॥ १५ ॥ अमने मिथ्यात्वी
 नो न रुचे संग, जेस हंसने गमे न काककुरंग
 ॥ धि० ॥ हरख्यो वृषजसेन ततकाल, पण नवि जाणे
 माया जाल ॥ धि० ॥ १६ ॥ धोळुं ते जेतुं दीतुं दूध,
 धूर्तनी जक्ति विशेषें प्रतिवुद्ध ॥ धि० ॥ पन्नणी रुडी
 ठही ढाल, मोहनविजयें थइ उजमाल ॥ १७ ॥
 सर्वगाथा ॥

॥ दोहा ॥

रुद्रदत्त सार्थेशथी, करे धर्मनी वात ॥ कोइ
 जाणें जाणे नहीं, कपट राईमात्र ॥ १ ॥ वृषजसेन
 सार्थेश करे, व्रत पोसइ पंचरक्षाण ॥ सामायिक
 खोटे मनें, ते धूरत महिराण ॥ २ ॥ साथे थइ सा
 र्थेशने, ते आवे गुरु पास ॥ शिर धूणे ने सुणे कथा,
 जेस अद्रि नाद विलास ॥ ३ ॥ जिम प्रभुजी स्वामी

तहत्त, धन साधू उचरंत ॥ मुख भीगे धीगे हिये,
 रुद्रदत्त कपट बहंत ॥ ४ ॥ पूठे बली बलाणमां,
 वारु गहन विचार ॥ माह्यो थई वेसे बचें, जोजो
 कपट आचार ॥ ५ ॥ दंजी मुख घोले दूरसुं, हिये
 हलाहल होय ॥ पूठसहित फणिचृत प्रत्यें, शिखी
 गलंतो जोय ॥ ६ ॥ रुद्रदत्त हवे अनुक्रमें, कहे
 सार्थपने ताम, हवे देजो मुज आगना, तो पोहो
 चुं निज गाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

गढ बुंदीरा हाडा बहाला, चखण न देशुं ॥ ए
 देशी ॥ निसुणी सार्थेश रुद्रदत्त मुख वाणी, चा
 लशे सयण सयाणो हो ॥ रूपचंद्रपुरवासी हो मि
 ब्रजी माहरा, चखण न देशुं ॥ ए आंकणी ॥ एह
 वो सनेही बाहलो किहांथकी मलशे, धर्मी सुजग
 सपराणो हो ॥ रू० ॥ १ ॥ एतो सनेही प्यारो मु
 ऊधरे आव्यो, जेम आलसुघर गंगा हो ॥ रू० ॥
 बीजा घणाए मलशे निगुण नहेजा, कुटिल जलंठ
 अनंगा हो ॥ रू० ॥ २ ॥ मिथ्यामतने एणे सुहणे
 न दीगो, केवली वयणे रातो हो ॥ रू० ॥ एहवो
 विचारी जगमांहि न कोई, केणे मिपें रहे ए जा

तो हो ॥ रू० ॥ ३ ॥ पुत्री जो माहरी एने परणा
 वुं, जोईए तेहवो जमाई हो ॥ रू० ॥ नाव नदी जो
 गें ए वर मखियो, पुत्रीनी पूर्ण कमाई हो ॥ रू० ॥
 ४ ॥ एहने मूकीने बीजा केहने परणावुं, तो सरे
 काज प्रमाणे हो ॥ रू० ॥ ए कपिदत्ता वखतें आ
 कण्यो, आव्यो वर इण टाणें हो ॥ रू० ॥ ५ ॥ पूवुं
 एहने जइ गोद बिठाई, जो मुऊ विनति माने हो
 ॥ रू० ॥ एहवुं आलोची रुद्रदत्त जणी पूठे, सारथप
 जइने ठाने हो ॥ रू० ॥ ५ ॥ पुत्री अमारी साजन
 तमें हवे परणो, ए ठे अरज अम केरी हो ॥ रू० ॥
 सेवा करुं साजन अमथी जे आशे, ना न कहेजो
 फेरी हो ॥ रू० ॥ ७ ॥ अमचा हियामां साजन तु
 म गुण बसिया, तेणे करी कहीये ठे ताणी हो ॥
 रू० ॥ पुत्री अमारी साजन ठे दृढधर्मी, जोडी ए
 सरस समाणी हो ॥ रू० ॥ ७ ॥ एम मूणीने साज
 न रुद्रदत्त दुरग्यो, आपणा मनथी विचारे हो ॥
 रू० ॥ जिण उदेंसे साजन कपट करुं लुं, कीधुं पा
 धरुं ते किरतारें हो ॥ रू० ॥ ८ ॥ आज अमीरसं
 जलधर वृद्धो, सुंद माग्यो पड्यो पानो हो ॥ रू० ॥
 काकनालीतो साजन न्याय अयो ए, दूठ कोइक तमा

सो हो ॥ २० ॥ १० ॥ कण्ठक विलंबी साजन रु
 द्रदत्त बोझो, शाहजी अमें परदेशी हो ॥ २० ॥
 जाण्या विहूणा साजन पुत्री केम देशो, जूठ हृदय
 गवेपी हो ॥ २० ॥ ११ ॥ सार्यपति जाले साजन
 तुमने पिठाण्या, ठो साधर्मिक मोरा हो ॥ २० ॥
 रूप गुणे करी साजन जातिज जाणी, तेणेकरी क
 रीये ठिप निहोरा हो ॥ २० ॥ १२ ॥ कन्या बग्या
 बिण तुमें किहां जाशो, चूलामणी नवि कीजे हो
 ॥ २० ॥ कपटी पयंपें साजन वारु बरेशुं, केम तुम
 ने डुहवीजे हो ॥ २० ॥ १३ ॥ हरख्यो सुणीने सार्य
 प निज घरे आव्यो, कीधी सखर सजाई हो ॥
 २० ॥ छत्र लेवाये साजन चोरी बनावे, बहेचें बीच
 बधाई हो ॥ २० ॥ १४ ॥ धवल मंगल साजन सखर
 सोहाये, सोदेखां सखरां गवाये हो ॥ २० ॥ वाय
 वरघोडे साजन क्षीध जमाई, तोरण मोतीडे बधा
 ई हो ॥ २० ॥ १५ ॥ होम हवन साजन तव निरमा
 ई, छिजमुख वेद पढाई हो ॥ २० ॥ चार मंगल
 साजन तिहां वरताई, अजिगत फेरा फराई हो ॥
 २० ॥ १६ ॥ कपट श्रावक साजन साहस हेजे,
 रुपिदत्ता परणाई हो ॥ २० ॥ ढाल सुरंगी साजन

सातमी जांखी मोहन वचन सवाई हो ॥रू॥१७॥

॥ दोहा ॥

परणी कपटी श्रावकें, रुषिदत्ता तेणीवार ॥ उ
त्सव महोत्सव करी घणा, वरत्या जयजयकार ॥
॥ १ ॥ धन बहु दीधुं दायजे, कापड झूषण कोडि ॥
रुद्रदत्त दंन्नी तणा, पहाँता सघला कोरु ॥ २ ॥
दंन्नी सा कन्या वरी, गयो कुवेरदत्त पास ॥ वात
कही सघली तिसे, आणी मन उद्धास ॥ ३ ॥ केह
वि परणी कपटें करी, श्रावक पुत्री आज ॥ ठे मु-
जरो तुम मित्रने, अहो मित्र महाराज ॥ ४ ॥ कुवेर
दत्त समरथ थइ, हस्थो करतल आस्फाल ॥ कहे
धन्य धन्य तुऊ बुझिने, कपट सरोवर पाल ॥ ५ ॥
दिन केते कपटी हवे, हाथ करी निजदाम ॥ शीख
ग्रहे ससराकने, विनय करीने ताम ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

सारे आंगणेहो राज, ठेला मारु वावडीजी ॥ ए
देशी ॥ जो जो कपटी हो राज, कहे करजोडीने
जी ॥ निज ससराने हसी तेह, गुणवंता जी ॥ मूज
दीजें हो राज, सदन चणी शीखडी जी ॥ ए आंक
णी ॥ इहां आव्यां हो राज, दिवस केइ थइ गया

जी ॥ तुम साथें थयो बहु नेह ॥ गु ॥ मू० ॥ १ ॥
 माहरे मंदिर हो राज, जोतां हशे जे वाटडी जी ॥
 बली आवशुं इण पुरमांहे ॥ गु० ॥ दिशि खाट्या
 हुं हो राज, इहां तुम शुं मलीजी ॥ घणुं जाणजो
 थोडा मांहि ॥ गु० ॥ मू० ॥ २ ॥ अम लायक हो राज,
 होय कारिज जि कोजी ॥ लखी मोकलजो तुम्हे
 तेह ॥ गु० ॥ अमथी अंतरहो राज, तुमे मत रा
 खजो जी, थें तो नवल निवाहो नेह ॥ गु० ॥ मू० ॥
 ॥ ३ ॥ तिहां रह्या पण हो राज, अमें हुं तमारडा
 जी, तुमे कीधा महोटा अम्म ॥ गु० ॥ माहरे नयरे
 हो राज, किवारे पधारशो जी, जो न आवो तो
 तुमने सम्म ॥ गु० ॥ मू० ॥ ४ ॥ एणी पुरमांहे हो
 राज, अम सुखीया थया जी, रखे मूको कदीरे वी
 सार ॥ गु० ॥ तुम जहेवा हो राज, धर्म सनेही
 नवि मीले जी, कुंण मलशे अमथी एवार ॥ गु० ॥
 मू० ॥ ५ ॥ जिनयात्रा हो राज, समयें संजारशुं
 जी ॥ तुमे साह जी सुगुण विश्राम ॥ गु० ॥ एम
 कपटी हो राज, करे खटपट घणीजी ॥ सूणी यो
 ल्यो धृपजसेन ताम ॥ गु० ॥ मू० ॥ ६ ॥ किहां चा
 लशो हो राज, करी प्रीत एवडी जी ॥ मूखे कहो

ठो जी जाशुं हवे ॥ गु० ॥ अम उपरें हो राज, यह
 जाउं सुखें जी ॥ पण चवण न देशुं हेव ॥ गु० ॥
 मू० ॥ ७ ॥ फरी गोठडी हो राज, किहांथी तुमार
 डीजी ॥ ए तो वनतां बनी गइ गोठ ॥ गु० ॥ अमे
 कोइथी हो राज, नहीं तो करां प्रीतडी जी, जे पव
 ने न पडे कोठ ॥ गु० ॥ मू० ॥ ८ ॥ तुमे स्वामी हो
 राज, अठैं अमीरस बोलता जी ॥ तेणें माहरुं हेखवुं
 हीर ॥ गु० ॥ नहिं तो कोइने हो राज, धीरुं केम
 बांहुडी जी ॥ अमें श्रावक धर्मी धीर ॥ गु० ॥ मू० ॥ ९ ॥
 अमें तमने हो राज, दीधी एक पुत्रिका जी, कि
 स्यो पडदो राख्यो नांहि ॥ गु० ॥ एम निःस्नेही हो
 राज, तुमे पर देखीया जी ॥ बोठो हली मली ठेइ
 दूसाइ ॥ गु० ॥ मू० ॥ १० ॥ नली जाणी हो राज,
 तुमारी प्रीतडी जी, हवे चाखो ठो माया लाय ॥
 गु० ॥ सुंदर मंदिर हो राज सवि, ते तुमारदां जी
 तमें रहो रहो महाराय ॥ गु० ॥ मू० ॥ ११ ॥ तव
 रज्जुदल हो राज, बोख्यो हसी साहसुं जी ॥ हउ
 केन नहीं ठे काम ॥ गु० ॥ अमें खागर हो राज,
 बेमारी बाणीया जी ॥ अउ कारन बहुलां धाम
 ॥ गु० ॥ मू० ॥ १२ ॥ बली मित्रसुं हो राज, जो

हैं खरो नेहखो जी ॥ पण हवणां तो दीजें शीख ॥
 गु० ॥ सत साखें हो राज पसरजो साहिवाजी, तुमैं
 जीवजो कोडि वरीस ॥ गु० ॥ मू० ॥ १३ ॥ वेसी
 तव सार्थपें हो राज, सोंपी निज पुत्रिका जी ॥
 तस शीखडी दीधी ताम ॥ गु० ॥ शुज शुकने हो
 राज, तदा संप्रेडिया जी, सहु साजन करे गुणग्राम
 ॥ गु० ॥ मू० ॥ १४ ॥ वेसी रथमें हो राज, रुद्रदत्त
 निजपुर चाखियाजी ॥ कही आठमी हो राज, स
 खूणी सोहामणी जी ॥ ए तो मोहनविजयें
 दास ॥ गु० ॥ मू० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

रुपिदत्ता रुद्रदत्त विदु, पंथे बहे सोत्साहि ॥ अ
 नुक्रमें पढोतां हेज नरी, रूपचंद्रपुरमांहि ॥ १ ॥
 कुटुंब सयल हर्षित थयुं, रुद्रदत्त आव्यो जेण ॥
 सार्थे रुपिदत्ता निरखी, हरख्यो अतिहिं तेण ॥ २ ॥
 सासूनेपाये पडी, सासू सुकुलिणी ताम ॥ बडां बडेरां
 आदिदें, सहुने कीध प्रणाम ॥ ३ ॥ वेठी मंदिर
 हेज नरी, कीधां भोजन सार ॥ रुद्रदत्त पण कपटगृह,
 जम्यो हस्यो तेणीवार ॥ ४ ॥ अतिप्रीतें पति प-

झिनी, जोगवे जोगप्रकाश ॥ दो गुंदक सुरनी परें,
विदसे लखि विदास ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

गढडामांहे जूले सहीज हाथणी ॥ ए देशी ॥
आचार घरना सा तव देखीने, मनडामांशोचे वारं
वार ॥ माहरे प्रीतमीए नेसहि तो कैतव केलव्युं,
हूं तो श्रावक केरी बालिका, एहोनो तो महेश्वर आ
चार ॥ मा० ॥ १ ॥ सहितो ए कपटी श्रावक हो
यने परणीवाहीने एणे कूड ॥ मा० ॥ जली हूं रे
जुलवाणी दीसुं एहथी, धुरथी में नवि जाण्युं कूड
॥ मा० ॥ २ ॥ धूतारे नाखी मुजने फंदमां, तेहनो
हुं केहो करीश उपाय ॥ मा० ॥ माहरुने पिहर
रह्युं वेगळुं, डुःखडुं ए जाइ केहने कहाय ॥ मा०
॥ ३ ॥ सुरतरु जाणी में बाथ जरी हती, थई नि
वड्यो नाह वबुद्ध ॥ मा० ॥ दीसे ठे बाहेर फररा
फूटरा, चीतर सुरपति मदिरा मूल ॥ मा० ॥ ४ ॥
कर तो में होंशे करी घाड्यो हुतो, जाणीने लीली
नागरवेल ॥ मा० ॥ पण तो ए निवडीयों कौअच
वेलडी, खलहुंती आवी मलीयो खेल ॥ मा० ॥ ५ ॥
न मिटे क्यारें विधिना अक्षरा, पड्युं पानुं कपटी

(१९)

हाथ ॥ महारो धर्म हुं केण परे करुं, अहो अहो
 श्री जिनवर जगनाथ ॥ मा० ॥ ६ ॥ केम करी रा
 खी शकीयें जालवी, एकण स्यानमें वै करवाज ॥
 मा० ॥ प्रीतम एहवे अवसर आवियो, नीरखी स
 चिते ते सुकुमाल ॥ मा० ॥ केम तमें वनिता आ
 मण दूमणां, आवो ठो माहरे नयणें आज ॥ मा० ॥
 कीणेली निहेजें तुमने दूहव्यां, मुऊ जणी तुमे दा
 खो तेह समाज ॥ मा० ॥ ७ ॥ आपणे खामी ठे
 कहो केहनी, पहेरीने जूपण नव नव रंग ॥ मा० ॥
 कपूरकेरा तूमें करो कोगला, खेलो साहेली केरे सं
 ग ॥ मा० ॥ ८ ॥ हियडो मेलोरी पीहरतणो, म
 त तुमें आणो आतमराम ॥ मा० ॥ निवहो आपण
 लें करे लेइने, आपणा मंदिर केरुं काम ॥ मा० ॥
 १० ॥ यौवनलटको दहाडा चारनो, अवसर केहो
 धर्मनो आज ॥ मा० ॥ आगलें सुख दुःख केणें दी
 ठडुं, केणे वली दीगो धर्मसमाज ॥ मा० ॥ ११ ॥ के
 म करी कीजे दोहिलो आतमा, पामीने मानवनो
 अवतार ॥ मा० ॥ मूरख जे कोई कांई लेहेता नथी,
 ते नव लेवे सरस आहार ॥ मा० ॥ १२ ॥ एहवा
 सांजलीने पीयुना बोलडा, हारीने वेठी धर्म रतन ॥

(३०)

ततक्षण लागे संगति नीचनी, जो करी रहीयें को
 डी यतन्न ॥ मा० ॥ १३ ॥ सवृक्षपुष्पसौरज्य, दान
 दानैकतत्परः ॥ शबेन मिदितो वायुदौर्गन्ध्यं किमु ना
 श्रुते ॥ दुः मिथ्यातणी पियुना प्रसंगथी, मानव जो
 जो कर्मनां काम ॥ मा० ॥ पीयूष केरुं गरल थई
 गयुं, ऐ ऐ मोह महाबलधाम ॥ मा० ॥ १४ ॥ आग
 ल होशे सवि वातो जली, हर्षशुं निसुणो बाल गो
 पाल ॥ मा० ॥ मोहनविजयें जांखी हेजशुं, अजि
 नव जांखी नवमी ढाल ॥ मा० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

सुख जोगवतां विविहपरें कृषिदत्ताने एक, पुत्र
 रत्न हूँ जलो, सुंदररूपविवेक ॥ १ ॥ कीधा उ
 त्सव नवनवा. दीधां जाचक दान ॥ नात संतोषी
 आपणी, वहेंच्यां फोफल पान ॥ २ ॥ नाम ठव्युं
 वरमुहूरतें, तास महेश्वरदत्त ॥ रूपवंत विद्यानिलो
 निरुपम गुणसंसत्त ॥ ३ ॥ हूँ तेह अनुक्रमें,
 यौवनवय उन्मत्त ॥ सहू बखाणें नयरमें, धन्य महेश्वरदत्त ॥ ४ ॥ नमया सुंदरीनो हवे, सांजलजो
 अधिकार ॥ अति रसीली ठे कथा, शीलोपरि सु
 विचार ॥ ॥ ॥

॥ नाग दशमी ॥

नानो नाहलोरे ॥ ए देत्री ॥ पीयर इगिदना नजे
 रे जाइ दे सहदेव, साजन सांजसो रे ॥ ए आंकणी ॥
 तस दयिता दे सुंदरीरे, जेहवी सिंधुसुता नगमेरा ॥ १ ॥
 अनुकर्म गर्ज धर्यो तिणे रे, सुचित सुपनाहार ॥
 सा० ॥ जेम जेम गर्ज बाघे जलो रे तेम तेम हृष्य अप-
 पार ॥ सा० ॥ २ ॥ अति न हसे अति नवि सुवे रे,
 अति चपल न चाले चाल ॥ सा० ॥ अति घरकी
 बोले नहीं रे, अति घणुं न करे ख्याल ॥ सा० ॥ ३ ॥
 वात जो जुंजे गर्जिणीरे सुत होय कुब्ज के अंध ॥
 ॥ सा० ॥ कफवत जोजने पांरुरोरे, पीतयंत पांरु प्र-
 बंध ॥ सा० ॥ ४ ॥ अति खवणें डगवल हरे रे, अति
 शीतलें होय घाय ॥ सा० ॥ अति ऊनुं हरे वीर्यने रे,
 अतिकामें गर्ज हणाय ॥ सा० ॥ ५ ॥ दिवसे जो सूवे
 गर्जिणीरे, निझालु होय जात ॥ सा० ॥ नयनांजन
 थी चीपडो रे, रुदने गलित डगवात ॥ सा० ॥ ६ ॥
 स्नान लेपन दुःशीखियोरे, कुष्टि तेलायाम ॥ सा० ॥
 हसवाथी रसना तालबुं रे, दंतोष्ठादिक श्याम ॥
 सा० ॥ ७ ॥ चपलगतें चंचल दुवेरे, शुष्काहारें मूढ ॥
 सा० ॥ होवे प्रलापें अतिवके रे, अति निसुण्ये नि

रे ॥ सूँढे ग्रहीने महीरुह आंठंटे रे ॥ तव तिहां
 बीहती सुंदरी नारी, पीयुने करती बहु मनूहार,
 सुंदर तरुनी बायें रे, तुमें छीप राखजो रे ॥ १ ॥
 गजने पीयुडे आण्यो रे ते तरु हेठले रे ॥ लांबी
 सांकल रे, झूतल खलजले रे ॥ मदजर राख्यो ति
 हां जीजीकार, जामिनी जासे हो जरतार, करिव
 रियाने ठांनो रे, जइ जल जीलीएं रे ॥ ३ ॥ प्रम
 दा पीयुडो वेहु रे, गजथकी उत्स्यां रे ॥ नमया त
 टनी साहमां संचस्यां रे ॥ जिहां करे हंस मयूर ट
 कोर, जाणीयें रण ऊण रणके जोर, नूपुरियां अति
 रुडां रे वहे तेह वजाडती रे ॥ ४ ॥ जलना पूरमां
 होवे रे बहुल पंपोटडा रे, सूर्यना दीधिति रे, फल
 हले रुअडा रे, एतो मानुं तटिनी कंठें हार, तेहनां
 दीपे हो नंग सार ॥ हरि हरियाली उंढी रे, जा
 णीयें उंढणी रे ॥ ५ ॥ मत्स्यना पुठथी उडे रे, ज
 लना विंछुवा रे ॥ जीणा जीणा श्रेणें जूजुआ रे, ए
 तो मानुं सास्यां केशो केश, उज्ज्वल दधिसुत हो
 सुविशेष, सारसीआला पावे रे सारसुडा चूगे रे
 ॥ ६ ॥ नीरना पुरमें मानुं रे अंबुज उफण्यां रे,
 गुणथी लीना मधुकर रणऊण्या रे ॥ एहवी सा न

दी सुंदरी देखि, पामी मनमां हृष्य विशेष ॥ धसमसी
 ने ते पेठी रे, जीखवा कारणे रे ॥ ७ ॥ सजनी सा
 हेली संगे रे किन्नरी आंटती रे, मांहोमांह जल
 निर्मल आंटती रे ॥ के अहे करथी केरव कोप मु
 ख, दुतिये देती हो इंदुने दोष ॥ काजलीयाली नेणे
 रे, नर्मदा हारथी रे ॥ ८ ॥ तरती आवडती पडती
 रे केइक उठती रे, जाणीए पन्नगी जल अंगूठथी
 रे ॥ एम तिहां रमती रसजरी नारि ॥ अट अट
 बूटे मोतीहार, मोतीयडांने लोचें रे सफरी तरव
 रे रे ॥ ९ ॥ रमत रमतां थांकीरे सघली सुंदरी रे,
 कांठे उज्जी जेहवी पुरंदरी रे ॥ सुंदरी नीचोवें ति
 हां वेण, फणिपति जीत्यो जाणीए जेण, रेसमीया
 ली पहेरी रे बीजी पटोलियो रे ॥ १० ॥ ठमके ठमके
 चाली रे प्रणमे नाहने रे, स्वामी पूख्यो तमे ए उ
 त्साहने रे ॥ पण वली होंश ठे मुजने एक, पूरो
 तो कहियें हो सुविवेक ॥ तमने जो नवि जांखुं
 रे तो केहने कहुं रे ॥ ११ ॥ माहरो जोरो चाले रे
 पीयु तुम आगलें रे, जेणी रीतें बाबुं तेम तेमही व
 ले रे ॥ एम कही सुंदरी करी मनोहार ॥ तव तिहां
 वोढ्यो हो जरतार, हियडलानी वातो रे, नारी मुज

ने कहो रे ॥ १२ ॥ पैसो खरचे थाशे रे तो होंश पू
 रशुं रे, बीजुं गुणवंती बल नहिं दूरशुं रे ॥ तेणे एम
 निसूणी पीयुनी वाणी, बोली सुंदरी हो जोडि पा
 णि ॥ नाहलीया एणे तीरे रे एक पूर वासीये रे
 ॥ १३ ॥ उंचा उंचा रूडा रे महोल वनावीये रे, र
 मवा अहोनिशि झण तटें आवीयें रे ॥ एवी झ्वा मु
 ळ मनमांहि, पूरो पीयुडा हो सोत्साहि ॥ प्रीतमीए
 तिण वेला रे, आरंज आदस्यो रे ॥ १४ ॥ केटला
 दिनमां तेणें रे नयर वसावीयुं रे, रुडा रुडा लोकने
 वास वसावीयुं रे ॥ एतो कही सरस अग्यारमी ढा
 ल, मोहनविजयें हो सुविशाल ॥ सरसाली अति
 मीठडी रे, आगल वातडी रे ॥ १५ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

वस्युं नर्मदापुर जलुं, नर्मदा तटने तीर ॥ उ
 ज्ज्वल जिनमंदिर कस्यां, जिम क्षीराब्धि दंभीर ॥
 १ ॥ जिन मूर्तिनी स्थापना, कीधी लाज निमित्त ॥
 जाव सहित दंपती करे, नवली पूजा नित्त ॥ २ ॥
 काशमीरज चंदन कुसुम, धूप दीप उपचार ॥ ज
 क्ति विशेषे स्तारथ करे, ए थावक आचार ॥ ३ ॥ एम
 ॥ ४ ॥ पूरण कस्या, नारीना जव रंग ॥ सहदेवें सू

परें किया, अधिकाधिक उठरंग ॥ ४ ॥ गृहवे र
हेतां अनुक्रमें, गर्जतिथि चइ जाम ॥ सुंदर नारी
एं प्रवर, पुत्री प्रसवी तांम ॥ ५ ॥

॥ ढाल धारमी ॥

मोतीयारां हे कुमख जूमखां ॥ ए देशी ॥ अथ
वा घरे आवोजी आंवो मोरीयो ॥ ए देशी ॥ सह
देवने दीधी वधामणी, घरें प्रसवीजी पुत्री रतन्न ॥
सही हूवां ए रंग वधामणां, तव हरख्योजी शाह
शिरोमणि, अति पुलकित हूळ तन्न ॥ स० ॥ १ ॥
मणि सोनुं रुपुं सामडुं, तस दासीने कीध पसाय ॥
स० ॥ कस्यां उरण जाचक लोकने, जेम आतम शक
तें देवाय ॥ स० ॥ २ ॥ कस्यो उत्सव पुत्रीनो अजि
नवो, जेम अंगज आवे कराय ॥ स० ॥ वली घर
घर गुडी उठले, घर आंगणे गीत गवाय ॥ स० ॥
३॥ दुर्वानां तोरण वांधीयां, बीच सुरतरुदल लहकंत
॥ स० ॥ कुंकुमना करतलदिधला, जला फूल फगर
महकंत ॥ स० ॥ ४ ॥ मणि मोतीनां हो टोके जूंवखां,
गोखें चंदन जरीयां माट ॥ स० ॥ जेरी जुंगल
तव हडहडे, जुडी गुंजाला गुंजे थाट ॥ स० ॥
॥ ५ ॥ जन्ममहोत्सव पुत्रीतणो, सहदेवें कीधो वि

शेष ॥ स० ॥ जिन साजन सवि संतोषियां, दिन
 उचित उचित सुलेश ॥ स० ॥ ६ ॥ सहदेव कुटुं
 व जणि कहे, तमें सांजलो माहरी वात ॥ स० ॥
 ज्यारे सुता एहनी मातने, हूंती गजें विमल विख्या
 त ॥ स० ॥ ७ ॥ त्यारें एहवो डोहलो उपन्यो, ए
 हेनी जननीने अहो वीर ॥ स० ॥ गयंवरने खंधें
 चढी करी, जइ खेलुं हो नर्मदा तीर ॥ स० ॥ ८ ॥
 वली तेणें तटेंनगर वसाविणं, अतिरुडुं नर्मदा नाम
 ॥ स० ॥ जो मनमां आवे सहु तणा, जोउं दोहद
 गुण अजिराम ॥ स० ॥ ए ॥ हवे कहो तो ए पुत्री
 नुं दीजीयें, वर नर्मदासुंदरी नाम ॥ स० ॥ दोहद
 सवला में पूरिया, वरे प्रसवी पुत्री ताम ॥ स० ॥
 १० ॥ कहे कुटुंव सयल हपें करी, एहनुं एहिज उ
 त्तम नाम ॥ स० ॥ नाम नर्मदासुंदरी स्थापिने,
 सहू पहोता निज निज धाम ॥ स० ॥ ११ ॥ सा
 सुंदरी पुत्री जणी, लेइ गोद रमाडेसुगेल ॥ स० ॥
 सिंचे पय पाणी पानथी, जिम असीए सुरतरु वेल
 ॥ स० ॥ १२ ॥ आज्ञापण दिव्य अंगें ठव्यां, फ
 रके टोपी ऊरकशी शीष ॥ स० ॥ वेउ पाये घूघरी
 वमघमे, देखी जननी पामे हीस ॥ स० ॥ १३ ॥

(३९)

घर आंगणे दोडे घुंढणे, दाण रोवे दाण हसे तेह
॥ स० ॥ कहे मुखथी खमां खमां, मावडी करि क
टि तटे आणी नेह ॥ स० ॥ १४ ॥ वली निर्मल नीरें न
वरावती, बुचकारती माथ जे मयाळ ॥ स० ॥ मोहन
विजयें वर्णवी, ए कही वारमी ढाल ॥ स० ॥ १५
॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

वाधे नमया सुंदरी, रुपरंग गुण प्रेम ॥ ए रज
नीपति वीजनो, दिन दिन वाधे जेम ॥ १ ॥ जे
ऐं घालपणाथकी, जोया ग्रंथ अनेक ॥ लक्षण शा
स्त्र तणी थई, वरदायी सुविवेक ॥ २ ॥ निर्विकार
जस नयन युग, रसना सुधा सरीस ॥ हियडे विषय
नी वांठना, सुपने नहिं सुजगीश ॥ ३ ॥ यौवन जल
क्युं देह उपरें, उष्युं सुंदर रूप ॥ मुखपर निवसी अ
रुणता, उठित पयद अनूप ॥ ४ ॥ हांसूं थधरें वीश
मे, लज्जा लंगर पाय ॥ सा नमया यौवन जणी, मि
ली जुजयुग सुविजाय ॥ ५ ॥ हवे श्रोताजन सांजलो,
जावी कथा विचार ॥ मन माने ते कीजीए, पण हो
य ते होवणहार ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

सनेही वाला लागो नेह न तोडो ॥ ए देशी ॥
 हवे ते ऋषिदत्तानारी, सुणी ते नमया सुंदरी सारी
 रे ॥ सनेही क्यारें मलशे मुक्त जिनधर्मी ॥ करे आ
 लोच एस गुण वरमी रे ॥ स० ॥ में एहवुं एमशुं कीधुं,
 जे जैनधर्म तजी दीधुं रे ॥ स० ॥ १ ॥ निज कुलमार
 गथी ए चूकी, जिननक्ति में करवी मूकी रे ॥ स० ॥
 वली नाहने वचने झूली, तजी कदपमंजरी ग्रही
 मूली रे ॥ स० ॥ २ ॥ वर समकित रतन में खोयुं,
 जुठ मिथ्या काच वलोऊं रे ॥ स० ॥ तजी असीय
 महामद पीधुं, वड ठेदी ओट्टीपण कीधुं रे ॥ स० ॥
 ॥ ३ ॥ उन्मूली सूरतरु ओप्यो, तिण स्थानक विष
 तरु रोप्यो रे ॥ स० ॥ शुजकुंजि कुंजस्थल वेसी,
 थइ चरणचारी हवे एसी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तजी
 संगति हंस सुरंग। कस्यो काक कुटिल प्रसंग रे ॥
 स० ॥ जखुं मानसरोवर ठांमी। जल ठिह्वर क्रीडा
 मांमी रे ॥ स० ॥ ५ ॥ जलो मोतीनो हार निवारी,
 गले गुंजमाला दिलधारी रे ॥ स० ॥ सहि मृगमद
 पुंज विपोही, हवे अविकर निकरें मोही रे ॥ स० ॥
 ॥ ६ ॥ वर श्रावक कुलमें आवी, तो एसी कुयुधि

कमावी रे ॥ स० ॥ घणुं धर्मथी चाली आडी, निज
 कुलने लाज लगाडी रे ॥ स० ॥ ७ ॥ घर समकित
 रत्न में आण्युं, पण स्थिर राखी नवि जाण्युं रे ॥
 ॥ स० ॥ एक मिथ्यात्वी समकितधारी, ए वेहु
 में ठे अंतर जारी रे ॥ स० ॥ ८ ॥ कीहां मंदर
 सरपव दाणो, कीहां जलनिधिकूप अयाणो रे ॥ स० ॥
 किहां नृपप्रमदाने दासी, किहां ग्रामीण किहां
 पुरवासी रे ॥ स० ॥ ९ ॥ किहां अलसिक ने अहि
 राजा, किहां ढक्का ने घन गाजा रे ॥ स० ॥ किहां
 मृगपतिने किहां शृगाल, किहां बाबल सुरतरु डाल
 रे ॥ स० ॥ १० ॥ किहां वायस ने किहां केकी,
 किहां अविवेकी ने विवेकी रे ॥ स० ॥ किहां दिन
 करने किहां खजुल, किहां आदर ने किहां दूज रे ॥
 ॥ ११ ॥ किहां कृपण ने किहां धनदाता, किहां
 कष्ट थने किहां सुखशाता रे ॥ स० ॥ किहां रंक
 ने किहां पुरराव, किहां शोचना शुरू स्वजाव रे ॥
 स० ॥ १२ ॥ किहां रजनी ने किहां दीस, किहां
 प्रेत ने किहां जगदीश रे ॥ स० ॥ किहां मणिरत्न
 ने किहां लघु चीडी, किहां कुंजर ने किहां कीडी
 रे ॥ स० ॥ १३ ॥ तिम जगमें समकित सरिखो,

कोइ बीजो पदारथ न नीरख्यो रे ॥ स० ॥ में अ
 तिहीं कख्यो अविचाख्यो, जे जैनधर्मने निवाख्यो
 रे ॥ स० ॥ १४ ॥ मुऊ माता पिता जो ए लहेशे,
 तो कांश्नुं कांइ कहेशे रे ॥ स० ॥ नहीं रही होय
 वात ते ठानी, थइ गइ होशे कांना कानी रे ॥
 स० ॥ १५ ॥ सही नाखशे पितर ते बाढी, मूने पत्र
 सटितपरि काढीरे ॥ स० ॥ में रे कर्म कख्यां शां
 पहेलां रे, थइ धर्मयकी अलगी वहेला ॥ स० ॥
 ॥ १६ ॥ गुणहीन कुटिल अटारी, मुऊ सरिखी
 नहिं कोइ नारी रे ॥ स० ॥ ए तेरमी ढाल सवाइ,
 कहे मोहनविजय बनाइ रे ॥ स० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

रूपिदत्ता करकमल पर, स्थापी वर मुखचंद्र ॥
 नीर टवके नेणथी, जे पुराणे संद्र ॥ १ ॥ रुद्रदत्त
 दीठी एहवे, आव्यो नारी नजीक ॥ जांखे किम
 तुम नामिनी, जूतल बली हो लीक ॥ २ ॥ उंचुं
 जूज अंगना, निरखो नीचूं केम ॥ दीसे ठे मुख दा
 हडे, दाशीकर उदयो जेम ॥ ३ ॥ तव बोली तरुणी
 तिसे, रे रे पियु प्राणेश ॥ अंगज सुंदर आपणो,
 पाम्यो यौवन वेश ॥ ४ ॥ मुऊ बांधवने बालिका,

नमयासुंदरी नाम ॥ तेपण थड नवयौवना, अप्सरा
जेम अतिराम ॥ ५ ॥ आपण आवक होत तो, तो
ते नमया बाल ॥ परणावत पीयु आपणा, पुत्र नणी
ततकाल ॥ ६ ॥

॥ बाल चौदमी ॥

गाढा मारुजीहो जजक उडे जाठी चगें, अम
ली पीवे कलाल रे । गाढामारु अति उन्मादी माह
रो साहिबो ॥ ए देशी ॥ मोरा पियुजी आपण मि
ध्यास्वी वाणीया, ए सावय लोक रे ॥ मो० ॥ लेख
लख्यो ते लाजीयें, एहमांन को संदेह रे ॥ मो० ॥
ले० ॥ मोरा० ॥ पुत्रने ते पुत्रीनणी वरवानो नहिं
योग रे ॥ मो० ॥ १ ॥ ते नमया आपण घरे, आवे
तो पूरण जाग्य रे ॥ मो० ॥ हुं पण जाई नवि शकुं,
लाधतो कोइ नथी लाग रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥
२ ॥ तुमने तिहां जो मोकलुं, तो पण सरे नहिं का
म रे ॥ मो० ॥ ते तुमने धारे नहीं, जाणो ठो गु
णधाम रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ३ ॥ तुमं ठो मा
णस मोटिका, तुमची केही वात रे ॥ मो० ॥ तुम
गुण जाणी वालिका, किम नवि परणे जात रे ॥ मो०
॥ ले० ॥ मो० ॥ ४ ॥ तुम जेहवा धूरत तणो नाणे

केम विश्वास रे ॥ मो० ॥ शेकीने जे वावियें, लहि
 जें केम कण तास रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ५ ॥
 कीधा तस तुमें दोहिला, तेहनी हवे शी आशरे, दा
 ज्यो जे पय पीवतां, ते फूंकी पीवे ठास रे ॥ मो० ॥
 ले० ॥ मो० ॥ ६ ॥ वचन सुणी वनिता तणां, बोळ्यो
 रुद्रदत्त नाम रे ॥ मो० ॥ जे होणी ते हो गइ, तेह
 नुं हवे शुं नाम रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ७ ॥ जे
 तिथि गइ ते ब्राह्मणा, वांचे नहीं नियमेव रे ॥
 मो० ॥ कीधुं ते नवि शोचीए, खरुं ते होशे ते हेव
 रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ ८ ॥ होशे नमया वाल
 नो, आपणा सुतथी सवंध रे ॥ मो० ॥ तो अणचिं
 त्युं हो थशे, पाणिग्रहण ससंध रे ॥ मो० ॥ ले० ॥
 मो० ॥ ९ ॥ माणस हाथे न वातडी, हाथे विधाता
 नाथ रे ॥ मो० ॥ जावीथी डाह्यो नहि को, न मटे
 लेख लख्या जेह रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १० ॥
 जो ते नमया सुंदरी, जो नहीं परणे जात रे ॥ मो० ॥
 तो शुं रहेशे कुंवारडो, एशी ठाढी वात रे ॥ मो०
 ॥ ले० ॥ मो० ॥ ११ ॥ कहे रुपिदत्ता नाथने, ए स
 हि साची वाच रे ॥ मो० ॥ दंत दे ते चाववा, दे ठे
 ते साची वात रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १२ ॥ एतो

प्रत्यक्ष पारखुं, जाबीनो संसार रे ॥ मो० ॥ तमे मि
 ध्यात्वी हुं श्राविका, केम धर्यां श्री जरतार रे ॥
 मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १३ ॥ जे लग्या विधियें श्र
 दारा, ते कृण टाखे ऊत्ति रे ॥ मो० ॥ गृहवे रमतो
 आबीयो, पुत्र भद्देश्वर दत्त रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो०
 ॥ १४ ॥ कर जोडी कहे तातने, करो गो केहो वि
 चार रे ॥ मो० ॥ केम सचिंती मुक्त मावडी, कहो
 मुजने एणी वार रे ॥ मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १५ ॥
 केणे छुट्ठी एवडी, के केणे दीधी गाल रे ॥ मो० ॥
 हठ करी मांड्युं पूठवा, जननी डुमनी नीहाल रे ॥
 मो० ॥ ले० ॥ मो० ॥ १६ ॥ जाखशे रुद्रवत्त बोल
 डा, सांजळ्य सुत सुकुमाल रे ॥ मो० ॥ जांखी मनो
 हर चौदमी, मोहनविजयें ढाल रे ॥ मो० ॥ ले०
 ॥ मो० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रे वत्स मामो ताहरो, नाम जलो सहदेव ॥ तस
 घर पुत्री नर्मदा, अठे सयल गुण मेव ॥ १ ॥ काने
 निसूणी नर्मदा, तव माताए आज ॥ तेहने तुज प
 रणाववा, वांठे ठे माताज ॥ २ ॥ हुं तिहां नवि जा
 ई शकुं, में तिहां केतव कीध ॥ थइ थावक तुज

मायने, परणी जग प्रसिद्ध ॥ ३ ॥ ते तो पुत्री तुज
 जणी, कहो सुत सोंपे केम ॥ तुज जननी ते शोकमें,
 चिंतातुर ठे एम ॥ ४ ॥ पुत्र कहे हुं तिहां जइ, प
 रणीश करी प्रपंच ॥ अम कुल एहिज रीत ठे, तेह
 मां शी खलखंच ॥ ५ ॥ शकट जरी बहु वस्तुथी, तुरत
 महेश्वरदत्त ॥ चाव्यो आव्यो अनुक्रमे, वर्द्धमान
 पुर ऊत्त ॥ ६ ॥ मामाने दीधी खबर, जे आव्यो जा
 णेज ॥ ते निसुणी घर तेडियो, ईषत आणी हेज ॥ ७ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

आव्य धूतारा नंदनारे, तैं धूत्युं गोकुल गाम ॥ ए
 देशी ॥ हिये आलिंगीने मळ्या जी, मामो ने जाणे
 ज ॥ केम कृपा करी पत्तन एणे, जी जांखो आंणी
 हेज ॥ १ ॥ आव्य धूतारा रुद्रना रे, तुं कुशल कहे
 वात ॥ एक वेला ताहरे तातें, देखाड्या पराक्रम ॥
 तुमें पण जे गेहे पधास्या, शुंजी करशो तेम ॥ २ ॥
 अमे एकज वार धूताणा, हवे धूताशुं केम ॥ जाण्यो
 ग्रह पीडे नहिं क्यारे, ठे जखाणो एम ॥ ३ ॥ आण
 ावक उपरे काठनी हांडी, चढे एकज वार, तारक
 वे हंस जोलाणो, मोती न चूगे फेर ॥ आण ॥ ४ ॥
 हमणां तो आपणे ठे सगाइ, मया करो महाराज ॥

एक सदन शाकिनी पण ठोडे, आणी संबंधनी ला
 ज ॥ आ० ॥ ५ ॥ चक्री पण तेम चक्र न मूके, बांध
 वताने जेम ॥ पोतानुं वली पारकुं प्रीठे, पशुठ पण
 ए तेम ॥ आ० ॥ ६ ॥ तुमें जे पुरमांहि वसो ठो
 साचुं कहो ससनेह, ठे सघलां ए लोक धूतारां, के
 तुमारुं गेह ॥ आ० ॥ जुंमार्त प्राप्ति अन्य व्यापि
 रे, शुं कांइ नवि थाय ॥ जे एम मूसे लोक पराया,
 केम ए आवे दाय ॥ आ० ॥ ७ ॥ नीचे आनने
 सांजली बोल्यो, मामाजी महाराज ॥ ए उवेखो
 कांइ अलेखे, आंगण आव्या आज ॥ आ० ॥
 ॥ ८ ॥ एक झूडे शुं सघलां झूडां, जाणो ठो देव
 दयाल ॥ आंगुलि पांचे होवे न सरखी, कोइ मोटी
 कोइ बाल ॥ आ० ॥ तात सरिखो जात न जाणो,
 केइ धनी केइ रंक ॥ रावण मंदिर पुंजतो वायु,
 हनुए लीधी लंक ॥ आ० ॥ ११ ॥ वसुदेवने कंस
 नरेशे, राख्यो कारागार ॥ काढ्यो तिहांथी पुत्र
 मुकुंदे, मातुख दीध प्रहार ॥ आ० ॥ १२ ॥ न
 होवे पुत्रमें ताततणा गुण, मानी ल्यो निर्धार ॥ दो
 जीहो विपथी जन पीडे, कीधो मणि उपकार ॥ आ०
 ॥ १३ ॥ खारो पयोनिधि मानव जाणे, पुत्र शशी

सुधाकंद ॥ जो सघलाए होवे सरखा, तो उगे
 केम दिणंद ॥ आ० ॥ १४ ॥ मामा तुमथी माहरे
 तातें, खाव्या दीसे दोष ॥ पण तुमने थावुं घटे
 ज़ारी, आणीजे नहिं रोष ॥ आ० ॥ १५ ॥ जंघ उघा
 डतां पोता केरी, पोताने आवे लाज ॥ हूइ ते हूइ
 पण हवे मोसुं, माफ करो महाराज ॥ आ० ॥ १६ ॥
 तात अमारो हुंतो मिथ्यात्वी, पण तुम बेहेन प्रसं
 ग ॥ बीजा धंधा मूकीने हवे, जैन धरमथीरंग ॥ १७
 ॥ हरख्यो मामो ते निसुणीने, जलस्यो अंगो अंग ॥
 मातुल मदीयो ज़ाणेजथी त्यारे, कोमल दीयुं
 आलिंग ॥ आ० ॥ १८ ॥ वस्तु वखारे आणी उ
 तारी, सुंदर ज़ोजन कीध ॥ वेंची साटी तेह वसा
 णुं, दाम सवाया दीध ॥ आ० ॥ १९ ॥ मामाथी म
 ल्यो एकंगो, ज़ाणेजो धूतधमाल ॥ मोहनविजयें रु
 डी ज़ांखी, पन्नरमी ए ढाल ॥ आ० ॥ २० ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

रंज्यो तस गुण देखिने, मातुल चित्त अनंत ॥
 पूढे निज ज़ाणेजने, तेडीने एकंत ॥ १ ॥ रे वत्स
 तुजने जे रुचे, मागी ले तुं तेह ॥ संकोचाइश मा
 सुजग, ए ठे ताहरुं गेह ॥ २ ॥ इम निसुणी वोढे

तुरंत, हत्ती महेश्वरदत्त ॥ स्वामी तुम्ह पसायथी,
 सधली ठे संपत्त ॥ ३ ॥ जो करुणा पूरण करो, इन्नि
 त जो थो मूज ॥ तो ए नमया सुंदरी, परणावो कहुं
 गूज ॥ ४ ॥ एहज अथेंहुं इहां, आव्योतुं महारा
 ज ॥ हवे जेम जाणो तेम करो, बांहि ग्रहानी
 लाज ॥ ५ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

गइती पीयरीएने आविती रीसाइ ॥ ए देशी ॥
 बाणी सुणीने बोळो तिहां सहदेव, तुंतो मिथ्यात्वी
 अमें आयक सुसेव ॥ महारा जाणेजा हो राज ए
 हेवुं स बोळ ॥ १ ॥ तुजजनक गयो अमने नोलाय,
 ते उपरें पुत्री केम देवराय ॥ म० ॥ एक वेला दा
 ऊयो दुधथी जेह, वास जणी फुकी पीये तेह ॥ मा० ॥
 विपधरथी जे वीहिनो कोय, दोरडीये कर घाले
 जोय ॥ मा० ॥ २ ॥ विलखे वदने तव कहे जाणेज,
 एम एकाएक केम तजो हेन ॥ म० ॥ तुम जगिनी
 नुं पयोधर खीर, में पीधुं यइने धीर ॥ म० ॥ ३ ॥
 ते केम होइश मिठादीछ, पठें तो तुमे ठो सु
 गुण गरिछ ॥ म० ॥ तुमे जाणो जे खरुं अहो हित
 वान, गज केम आवे जाळो कान ॥ म० ॥ ४ ॥ मा

तुलें जाणेंजसुं चारु ठांह, नर्मदासुंदरीनो कीधो वि
 वाह ॥ म० ॥ परण्यो सयल मनोरथ सिद्ध, काचित
 दीवसें सीखडी दीध ॥ म० ॥ ५ ॥ नर्मदासुंदरी
 लेइ संग, अनुक्रमे आव्यो निजपुर खंग ॥ म० ॥
 मात पिताना प्रणम्या पाय, पगे लगाडी सा हित
 लाय ॥ म० ॥ ५ ॥ ऋषिदत्ताए नमया बाल, दीठी
 सुपरें नयणें निहाल ॥ मा० ॥ कुशलप्रश्न पूढ्या तेणी
 वार, सज थइ कह्यो सयल विचार ॥ म० ॥ ७ ॥ न
 र्मदासुंदरी महेश्वरदत्त, जोगवे जोग विविध बहु
 जत्त ॥ म० ॥ दंपती प्रीति परस्पर दीन, जेहवी
 प्रीति होवे जल मीन ॥ म० ॥ ७ ॥ एकदा नर्मदा
 विनवे शाह, स्वामी जैनधर्म वाह वाह ॥ मोरा सहे
 जाहो नाह, कुंमति निवार ॥ ए आंकणी ॥ जिनवर
 जक्ति करे निशदीव, दीठे मूरती सुप्रसन्न होय
 जीव ॥ म० ॥ ८ ॥ जिननी जक्ति रावण ऐकंत, ती
 र्थकर पद आप्युं कहंत ॥ म० ॥ जिनदरिसणथी
 हूये उझार, देश अनारजें आर्द्रकुमार ॥ म० ॥ १०
 जिनपूजा फल अधिक अनंत, शिवसुख साधन ठे
 ॥ म० ॥ जेणे जिनजक्ति न कीधी सार, तो
 तस मानव अवतार ॥ म० ॥ ११ ॥ तरण ता

रण प्रजु कहेवाय, सेवे सुर नर जेहना पाय ॥ म० ॥
 जिन दरिसण ठे शिव सोपान, जिनथी बीजा केहो
 मान ॥ म० ॥ १२ ॥ कृण ब्रह्मा कृण विष्णु महेश,
 बीतरागधी नहिं ते विशेष ॥ म० ॥ तुलसी पीपल
 पूजे लोक, खोटा प्रयास नियामक फोक ॥ म० ॥ १३
 जे देवताने प्रमदायी प्रेम, केम ते तरशे बली ता
 रशे केम ॥ म० ॥ क्रोधादिक वर्जित महाजाग, ते
 तो एक अठे बीतराग ॥ म० ॥ १४ ॥ निसुणी न
 र्मदासुंदरीनी वाण, कंते जिनधर्म कीध प्रमाण ॥
 म० ॥ रुपिदत्तादिक कुटुंब सकोय, जिनभक्तितें
 वेठां होय ॥ म० ॥ १५ ॥ स्थापी जिनप्रतिमा सह
 गेह, पूजे प्रतिदिन आणी नेह ॥ म० ॥ दह्युं मिथ्या
 त्वने प्रकाश्युं समकित, आवक हुर्ल महेश्वरदत्त ॥
 म० ॥ १६ ॥ करणी उत्तम करतां दिन जाय, धर्म
 यकी नित्य रुडुं थाय ॥ म० ॥ मोहनविजये थइ
 उजमाल, जांखी सुंदर शोलमी ढाल ॥ म० ॥ १७ ॥
 सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

एकदिन नमया सुंदरी, सोल सजी शणगार ॥
 वेठी निज वातायने, थइ आजाआगार ॥ १ ॥

दर्पण लेई करकमल, निज आनन निरखंत ॥ सहि
 यर पण तस रूपने, पेखी अति पुलकंत ॥ २ ॥ तं
 वोलेकरी मुख नखुं, अति सुशोभित अंग ॥ वि
 भ्रम चारु विलासथी, वेठी धरी उमंग ॥ ३ ॥ ए
 हवे रवि मंरुल गयण, मध्ये आव्यो जाम ॥ मास
 खमण पारण मुनि, गोचरी पहोतो ताम ॥ ४ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

अरणिक मुनिवर चाढ्या गोचरी ॥ ए देशी ॥
 पावक जेहवो रे आतप परजले, पूहवी देवाय न
 पायोरे ॥ वादरकायारे तापें पराजव्यो, ठायाए ते
 जायो रे ॥ १ ॥ गति कोइ अजिनवी, जगमें क
 र्मनी ॥ सवि चितहमें जाणेरे ॥ विणजोगवियां रे
 दूटे नहीं, कवियणे एम वखाणे रे ॥ ग० ॥ २ ॥
 तेणे अवसरें पुरमें परवस्था, व्रतधर सुंदर एह रे ॥
 खूला पयतल जन्ही बालुका, तो पण निश्चल नेह
 रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ नय शकटपरे अस्थि खडहहे, काम
 उदर दृग नीचे रे ॥ जयणायें करी हलूए पय ठवे, प
 रसेवे जूझ सिंचे रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ धन्य धन्य एहवारे
 जगमें मुनिवर, जे परने हित वांठे रे, निज काया
 ने रे जाणे कारिमी, तप तापें तनु तीठे रे ॥ ग० ॥

॥ ५ ॥ जिणे अवसर सुखीया जीवडा, बेसी शीतल
ठामे रे ॥ तिणे अवसरें विचरे संयमि, तो न्यार्ये
शिव पामे रे ॥ ग० ॥ ६ ॥ ते मुनि घर घर जिह्वा
कारणे, खप करे तप जप पुरो रे ॥ गुणमणि रोह
ण साधु शिरोमणि, नहि कोइ वाते अधूरो रे ॥
ग० ॥ ७ ॥ दुःसह तडके रे साधु पराजव्यो, निर्वल
अके भ्रम कीधो रे ॥ नर्मदामंदिर गोखने ठायडे,
विसामो दण लीधो रे ॥ ग० ॥ ८ ॥ नमयासुंदरी
साधु अजाणती, नाख्युं मूख्यकी पीक रे ॥ ला
ग्यो ततक्षण मुनिने जालंतरें, तिलक परे थयुं ठी
क रे ॥ ग० ॥ ९ ॥ लागत वांता रे मुनि तिहां चम
कियो, शुं आकस्मिक एह रे ॥ केणे नाख्युं रे मुज
शिर उपरे, निरखे ऊरध तेह रे ॥ ग० ॥ १० ॥ दी
ठी गोखे रे नमयासुंदरी, थयो आक्रोश मुनीशोरे ॥
रे रे अधमे रे ए ते शुं कर्युं, अशुचि कर्युं ए शीपो
रे ॥ ग० ॥ ११ ॥ ए किहां पातक वूटिश वापडी, ए
शो गारव तूजरे, न करे कोइ मुनिने आशातना, तेह
करी ते अचूक रे ॥ ग० ॥ १२ ॥ ताहरी उपर दीसे
कंतनुं, मान तेणे घणुं माची रे ॥ तोतुं होजे रे ना
थ वियोगिनी, वाच थई थम साचीरे ॥ ग० ॥ १३ ॥

मुनिनी बाणी रे मुणी जणकारे, गोखतले तब जो
 चुं रे ॥ तब तिहां दीगो रे मुनि कोपांतरु, शाप दीयं
 तो पलोचुं रे ॥ ग० ॥ १४ ॥ जूंमुं कीधुं रे में मुनि
 कुहव्यो, कीधी अचझा नारीरे ॥ फल कडवां रे जो
 गवतां हूइ, हुं निगुणी कोइ नारी रे ॥ ग० ॥ १५ ॥
 नाह वियोगणी होजो जे कहुं, ते केम फरशे वाचारे
 ॥ वाचा खोटी खोटा जनतणी, ए तो मुनिजन सा
 चा रे ॥ ग० ॥ १६ ॥ जइ ग्यमावुं रे मुक्त अपराधने, वि
 नहुं विनति विशाल रे ॥ मोहनविजये रे नांखी
 हेजथी, सुंदर सत्तगमी दास रे ॥ ग० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा
 ॥ दोहा ॥

मेहीथी जे जलरी, आधी साधु समीप ॥ विधिहुं
 बांदीने कहे, अहो नवसायर छीप ॥ १ ॥ हुं जिन
 धर्सी आविका, मुनि उपरे अति प्रेम ॥ रोप नजो
 मुनिगवजी, शायो नो मुन केम ॥ २ ॥ जीहांथी
 बहार जोइए, तिहांथी आवे वाइय ॥ दीजे दोष ते
 केहने, जो फल खादो वाइय ॥ ३ ॥ ए संसार असा
 रने, प्रदीए जस आवाग ॥ ते जो बिरुके पांउरी,
 किन जगे दिनकार ॥ ४ ॥ हुं तमयी जेहवी कहे,

अण समजे अविचार ॥ पातुं तेमहीज तुम्हे करो,
तो शुं अंतरचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल अठारमी ॥

हांजी चारा घजारमां, हांजी मुने जेहूँ दे व
खाय, तोरे संग चातुं रे, लालमल जोगीया ॥ ए
देशी ॥ हांजी हूं निर्जागिणी मानवी, हांजी तमें ठो
गिरुआ साध, तोरी बलिहारी रे मुनिवर माहरा ॥
हांजी तुमने में कीधी आशातना, हांजी खमजो
ते निराबाध ॥ तो० ॥ १ ॥ हांजी तुमे ठो करुणा
सायरु, हांजी कहुं तुं गोद धिवाय, ॥ तो० ॥ हांजी
शाप न दीजें मुजने, हांजी मुजंथी केम सहाय ॥
तो० ॥ २ ॥ शत्रु प्रत्ये कोपे नहिं, हांजी बांधवथी
न मुजाय ॥ हांजी शाप न दे तनु पीडतां, हांजी
मुनिवर तेह कहाय ॥ तो० ॥ ३ ॥ हांजी चंदनने
जो पीडीयें, तो दीये सामी सुवास ॥ तो० ॥ हांजी
यंत्रमें पीलीयें शेलडी, हांजी तो पणचे रस खास
॥ तो० ॥ ४ ॥ हांजी रंजा खंज जो वेदीयें, हांजी
तो पण फल दे चूरि, ॥ तो० ॥ ए गीरुआइ साधुनी
हांजी शास्त्रमें कही ससनूर ॥ तो० ॥ ५ ॥ हांजी
लागे नहीं नाखी थकी, सूरज साहामी खेह ॥ तो०

हांजी शी कटकी कीडी परें, हांजी राखो धर्मसने
 ह ॥ तो० ॥ ६ ॥ हांजी में तुमने वेद्या नहीं, हांजी
 लागो हरये पीक ॥ तो० ॥ हांजी माहरा अवगुण
 साहमुं, हांजी न जूठ समता नीक ॥ तो० ॥ ७ ॥
 हांजी वचन सूणीने एहवां, हांजी बोव्यो मुनिवर
 तेह ॥ तो० ॥ हांजी रे वत्से रे जावुके, हांजी सां
 जल्य वाणी एह ॥ तो० ॥ ८ ॥ हांजी साधु न दीये
 पीडियो, हांजी कोईने दुःसह शाप ॥ तो० ॥ हांजी
 तेहना जो मुखथी नीकले, हांजी साधुने नहीं
 तोय पाप ॥ तो० ॥ ९ ॥ हांजी जे में जाख्युं विजो
 गणी, हांजी तुमने आणी रोष ॥ तो० ॥ हांजी ते
 तुज पूरव जन्मना, हांजी दीसे सबला दोष ॥ तो०
 ॥ १० ॥ हांजी ताहरी जावीयें मुजने, हांजी एह
 वो बोलाव्यो बोल ॥ तो० ॥ हांजी नहिं तो माहरा
 वक्रथी, हांजी नीसरे केम अतोब ॥ तो० ॥ ११ ॥
 हांजी तेमाटे तुं ताहरा, हांजी जोगव्य पूरव कर्म
 ॥ तो० ॥ हांजी जोगव्य तुं ताहरां कस्यां, हांजी क्ण
 एक कुण दीये शर्म ॥ तो० ॥ १२ ॥ हांजी जोग
 वीश तुं ताहरूं कखुं, हांजी तेहमां कां दिलगीर
 ॥ तो० ॥ हांजी जोगवाये कृत्य पारकूं, हांजी तो

हांजी तेहनी पीर ॥ तो० ॥ १३ ॥ हांजी खलीयें
 जेहबुं वात्रिण, हांजी तेहनो किहो विचार ॥ तो० ॥
 हांजी तूटे नहीं विण जोगव्यां, हांजी जिन कसुं,
 सूत्र मजार ॥ तो० ॥ १४ ॥ हांजी धरियें भीरज
 चित्तमें, हांजी होशे ते परमानंद ॥ तो० ॥ हांजी
 एम कहीने तस गेहथी, हांजी विचस्या अन्यत्र
 मुनींद्र ॥ तो० ॥ १५ ॥ हांजी मुनिना पयरुह थनु
 सरी, हांजी नमया आवी गेह ॥ तो० ॥ हांजी
 ढाल कही ए अढारमी, हांजी मोहनविजयें एह १६
 ॥ दोहा ॥

एहवे नमयां सुंदरी, चिते चित्त मजार, हवे शुं
 थाशे आगले, हे हे सरजनहार ॥ १ ॥ में एहबुं
 शुं पूरवें, कीधुं कर्म अनंत ॥ जे अणचिंत्यां मूजने,
 शापी गयो मुनि संत ॥ २ ॥ जे जल जलणने उप
 शमे, ते जल दे गयो दाह ॥ कोपे नहीं क्यारें मुनि,
 ते कोप्यो निर्वाह ॥ ३ ॥ कां बेठी हती गोखडे, कां
 चांव्यां तंगोल, जे अनुकूल सहुतणो, ते मुनि थयो
 प्रतिकूल ॥ ४ ॥ कीस्युं खलाटे लिख्युं हशे, आगल
 जावी जाव ॥ जे जिन जाणे ते खरुं, न मटे सहज
 स्वजाव (पाठांतर, कहेवा हवे विलाव) ॥ ५ ॥

॥ ढाल जंगणीशमी ॥

लीनो रे मन मोहन जिनसें ॥ ली० ॥ ए देशी ॥
 जाणे रे कोइ मननी जाणे ॥ जा० ॥ हुं बेठी हती
 गोखें सुखमें, आव्या किहांथी ए मुनि टाणे ॥ जा०
 ॥ केणी सहीयें पण न जणाव्युं, जे मुनि उजा ठे
 एण ठाणे ॥ जा० ॥ १ ॥ अमें तो न जाण्युं सहीउ
 नांखे, तें न जाण्युं तो कुण जाणे ॥ जा० ॥ कीधो
 तें अपराध सखीरी, नाहक जेलां शुं अमने ताणे ॥
 जा० ॥ २ ॥ एहवां सजनीनां वयण सुणीने, वोढी
 नमया आढी उखाणे ॥ जा० ॥ क्यां तमने वहेनी
 उं कहुं बुं, ठीकतां दंभें कां अप्रमाणें ॥ जा० ॥ ३ ॥
 दाऊया उपर खार न दीयो, आवो रीसारु मां वेसो
 विठाणे ॥ जा० ॥ जोगवी देखश कां तुमे वीहो, मा
 हरा लखीया देख प्रमाणे ॥ जा० ॥ ४ ॥ एम कहे
 तां नयणेशी बूटे, आंसुधारा मेघ समाणे ॥ जा० ॥
 जेम जेम मुनिनां वयण संचारे, तेम तेम दुःखहुं
 हियडामां आणे ॥ जा० ॥ ५ ॥ दोटे धरणी अव
 ला वाढी, देइ सजनी वांह सराणे ॥ जा० ॥ शाप
 संचारे आकुल थाइ, नाके जिण विध आवे दाणे
 ॥ जा० ॥ ६ ॥ ठाती वळे ने ताती होवे, जेम कोइ

तीक्ष्णमें घाती घाणे ॥ जा० ॥ म म कर एवढुं सही
 उं जांखे, छाज वढेरानी कां नाणे ॥ जा० ॥ ७ ॥ ता
 हरुं दुःख अमें सही नथी शकतां, आखितुं अमने
 जे आवे लागे ॥ जा० ॥ जावी ताहरी जली ठे व
 हेनी, सुख ठे वली सुख दोशे विहाणे ॥ जा० ॥ ८
 ॥ आन्यो एहवे महेश्वर पीयुढो, नारी दुःखणी
 देखी पूठे ॥ जा० ॥ दयिता दुःखिणी कांतुं दीसे,
 कहे मुजने तुज दुःखडुं शुं ठे ॥ जा० ॥ ९ ॥ वात
 कही निज पीयुढा आगे, जाण्युं दुःखनुं कारण ना
 हें ॥ जा० ॥ दयिताने तव दीधो दिखासो, तेडी
 आणी मंदिर मांहे ॥ जा० ॥ १० ॥ ते दिनथी आ
 रंजी नमया, पालंती जिननी आणा रुढे ॥ जा० ॥
 महासती सुखमें निगमे दीहा, पूरव कर्म कख्यां ते
 सूढे ॥ जा० ॥ ११ ॥ पोपे पात्र संतोपे मनमें, अवि
 नय करतां हैयुं धूजे ॥ जा० ॥ जब जब संचित पा
 प निवारे, एहवा देव जणी नित पूजे ॥ जा० ॥ १२ ॥
 पुण्य करे जिन पंथे चाले, तेहथी जब दुःख जाये
 विलयें ॥ जा० ॥ सुंदर उंगणीशमी ए जांखी, श्रोता
 सुणजो माहेनविजयें ॥ जा० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

एक दिन नमया नारीने, कहे महेश्वरदत्त ॥ पर
झीपें जाशुं प्रिये, हवे धन हैतें ऊत्त ॥ १ ॥ तिहां
जइ ड्रव्य कमावशुं, आवशुं तुरत गेह ॥ साचवजो
तुमें इहां रही, जैन धर्म ससनेह ॥ २ ॥ कोइ वार्ते
मनथी तुमें, दुःखी न होजो नारि ॥ मिलशुं तुम
ने हेज जणी, जो करशे किरतार ॥ ३ ॥ परदेशें ज
इए अठों, करशुं तिहां व्यापार ॥ तिहांथी बहु धन
आणशुं, राखशुं इहां व्यवहार ॥ ४ ॥ ते माटे तरु
णी तुमें, हसी दीयो आदेश ॥ जेम प्रवहण सज
कीजीयें, लेइयें वस्तु अशेष ॥ ५ ॥ कंत वचन नि
सुणी करी, बोली नमया बाल ॥ केम परदेशे पधा
रशो, अहो नाह सुविशाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

अस्मां सोरी अस्मां हे, अस्मां सोरी जीलण
गइती तलाव हे ॥ हे मारुंडे मेंवासी केरा ताणीया
हे ॥ ए देशी ॥ पियुडा मोरा पियुडा रे, पीयुडा मो
रा जो तुमें चालो परदेश हे ॥ हे मुजने जलावो
केहने डलवे हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ काया जिहां तिहां
ठांह हे, हे तेम प्यारो ने प्यारी जोगवे हे ॥

॥ पि० ॥ १ ॥ हुं पण आवीश साथ हे, हे
 टेने करेशुं वाला चाकरी ॥ पि० ॥ पि० ॥ पि० ॥
 तुम विण केम गमे दीह हे, हे माठलडी होवी
 खुं जल विण आतूर हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ २ ॥ घडी
 मास थाय जेह हे, हे नाह रहो जो अलगा न
 यनी हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ तुम विरह न सहाय
 हे, हे केतुं जाखुं करीने वेणथी हे ॥ पि० ॥ पि० ॥
 ॥ ३ ॥ साधूय कहुं ठे जे मुजने एम हे, हे अश
 वत्से कंतवियोगिणी ॥ पि० ॥ पि० ॥ तेहवा कथ
 नयी केम हे, हे अलगी रहुं तमने अवगुणी हे ॥
 पि० ॥ पि० ॥ ४ ॥ मुजने तुमचो आधार हे, हे
 विगर आधारे इहां केम रहुं ॥ पि० ॥ पि० ॥ देखी
 पेखीने काय हे, हे विरह वन्दिथी कहोने कां द
 हुं ॥ पि० ॥ पि० ॥ ५ ॥ जो नहीं तेडो साथ हे, हे
 कहेशे नहीं कोइ तुमने रूखडा ॥ पि० ॥ पि० ॥ नारी नरा
 खवी दूर हे, हे जे कहीए ठे पंथी सूखडा हे ॥ पि० ॥ पि० ॥
 मनहुं खेइ जशो संग हे, पींजरीउं ने रहेशे घाल
 मजी इहां ॥ पि० ॥ पि० ॥ रढ करी रही सह जोर
 हे, हे तो तुमें मूकीने जाशो किहां ॥ पि० ॥ पि० ॥
 ॥ ७ ॥ नाह फदे अहो नारी हे, हे काम दोहेखुं

अलगा पंथनुं ॥ पि० ॥ पि० ॥ कंते कही घणी वात
 हे, हे तोही न माने कांई अंगना ॥ पि० ॥ पि० ॥
 ॥ ७ ॥ वनितानो आग्रह जाणी हे, हे संगें तेड्यानी
 कंते हा जणी ॥ पि० ॥ पि० ॥ नर्मदासुंदरी ताम
 हे, हे उद्वसित हुइ मनमांहे घणी ॥ पि० ॥ पि० ॥
 ॥ ८ ॥ तत्क्षण महेश्वरदत्त हे, जरीने करीयाणुं प्रव
 हण सज कस्यां ॥ पि० ॥ पि० ॥ पडहो वजायो पुर
 मांहि हे, हे वचन सुरंगां ए एहवां उचस्यां हे ॥
 पि० ॥ पि० ॥ १० ॥ शा महेश्वरदत्त हे, हे यवनद्वीपें
 काले चालशे हे ॥ पि० ॥ पि० ॥ जे कोइ आवणहार
 हे, हे होय ते वेगा होजो अनालसें, ॥ पि० ॥ पि० ॥
 ॥ ११ ॥ पडह सुणीने लोक हे, हे यवनद्वीपें जावा
 संमुह्यां ॥ हूवो जाम प्रजात हे, हे लोक सायरनो
 तट घेरी रह्यां ॥ पि० ॥ पि० ॥ १२ ॥ एहवे महेश्वरदत्त हे, हे जिनवरपूजा करे कुसुम पांखडी ॥
 सुंदर जोजन कीध हे, हे मात पितानी लेइ शीखडी
 ॥ पि० ॥ पि० ॥ १३ ॥ नर्मदासुंदरी साथ हे, हे
 महेश्वरदत्त आव्यो प्रवहण ठे जिहां ॥ पि० ॥ पि० ॥
 साथें सयण अनेक हे, हे आव्या संप्रेषणे नेहव
 शे तिहां ॥ पि० ॥ पि० ॥ १४ ॥ परजन कहे मुख एम

हे, हे होजो मंगल माल हे, ॥ पि० पि० ॥ मोहन
विजयें एम हे, हे पत्तणी सलुणी वीशमीढाल हे ॥
पि० ॥ पि० ॥ ३५ ॥ सर्वगाथा ॥

॥ दोहा ॥

शीख लही साजन तणी, परिकर रूडा प्रसंग
॥ चाल्यो जलवट ऊपरे, महेश्वरदत्त सुरंग ॥ १ ॥
यान हकास्यां जलधिमां, खेंच्या सढ ने दोर ॥ मा
गें मालमी मालम करे, कूवा थंजा जोर ॥ २ ॥ प
रव्यां पोत पयोधिमें, गति अति चंचल धीर ॥ ता
ण्यो जेम कोदंडथी, वृटे जेहवो तीर ॥ ३ ॥ नीर
मय दीसे धरा, ऊपर तो आकाश ॥ गिरिवर तरु
वर नगरवर, ते तो प्रवहण वास ॥ ४ ॥ अश्हो दु
प्रर कारणें, जलमध्ये पविसंत ॥ पारत्रिलोकी प
तिवसु, पण जय नवि निवहंत ॥ ५ ॥ पेट अधम ज
गमां प्रसिद्ध, पेट वडो पतहीन ॥ जल थल गिरि
जलंधवे, मुख जंपावे दीन ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

दिल लगा रे वादल वरणी ॥ ए देशी ॥ चाल्यां
रे वाहण वाये हंकास्यां, दोडे जेम मन चाले ॥ ह
वे जोजोरे फौलुक थाशे, सांजलतां शुं जाशे ॥ ह० ॥

(६६)

॥ दोहा ॥

नमया लक्ष्मण दक्षिणा, जाणे जेद अन्नंत ॥ १ ॥
 मुजचतुराश्यें करुं सहेजो कंत ॥ २ ॥ कहे न
 निज नाहने, जे ए गावे गीत ॥ विण दीठे कहो
 कहुं, रूप रंग गति रीत ॥ ३ ॥ कंत कहे का
 कहो, कांइ करो ठो जोर ॥ चतुराई जे अंगमें
 दाखो एकवार ॥ ४ ॥ बोलीनमयासुंदरी, रे पीयू
 क एह ॥ श्यामरंग शोभा सुजग, कुब्जरूप ठे
 ॥ ५ ॥ स्थूल हस्त गुचे मशक, रक्त नेत्र ससनेह ॥
 रुण वर्ष छात्रिंशनो, चिन्ह सयल ठे एह ॥ ६ ॥ व
 सुणी वनिता तणां, ताम महेश्वरदत्त ॥ चित्त
 चिंते इस्युं, अइ तरुणीथी विरक्त ॥ ७ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

चंदन राखो ठोजी राज, मीठडा मेवा ठो ॥
 देशी ॥ वाणी सुणी नमया तणीरे, शोचे महे
 दत्त ॥ सहितो ए गायकथकी, कांइ नारी ठे सं
 ॥ १ ॥ माहरी मानिनी हो राज, सही तो धूतारी ठे
 चंदन शी बोले ठे राज पण विष तोले ठे, एह
 कहाणी ठे राज, ते हवे जाणी ठे ॥ ए आंकर्ष

सता छुट्याणी खरी, कांय करी कुब्जयी प्रीत ॥
 मा० ॥ २ ॥ एहने तो हुं जाणतो रे, सुकुलीणी
 शिरदार ॥ पण ए कुलटा निवडी कांई, निःस्नेही
 श्रवतार ॥ मा० ॥ ३ ॥ महासती करी जाणतो रे,
 पण फेरव्युं सत एह ॥ जेम बखाणी खीचडी कांई,
 दांते बलगी तेह ॥ मा० ॥ ४ ॥ थई गोधूम थम
 हियडे रे, पेठी प्रमदा सार ॥ पण मांडो थइ नि
 सरी कांई, ऐ ऐ सर्जनदार ॥ मा० ॥ ५ ॥ जो जो
 एहनी कपटता रे, तृणसम गणीयो मुक्त ॥ चोरी दृष्टि
 सहू तणी, कांई गायकयी करी शुद्ध ॥ मा० ॥ ६ ॥
 सगुणी पाखें नीगुणी जली रे, राखी हुंती निजहित
 लाय ॥ लाख जतन करी राखीए, कांई जाति स्वजा
 व न जाय, मा० ॥ ७ ॥ धोइए दूधें कागडीरे, पण
 हुंसली नवि थाय ॥ कुंदन खोले रासजी कांई, न
 होय पयल गाय ॥ मा० ॥ ८ ॥ वेसाडीए सेजे शु
 नीरे, नहिं सुरकन्या होय ॥ मीठी न होये लीवडी
 कांई, साकर सींचे कोय ॥ मा० ॥ ९ ॥ ए नारीने
 शुं करुं रे, नाखुं पयोधिमांहि ॥ के करुं चूर्ण ख
 डगयी कांई, के परिहरियें क्यांहि ॥ मा० ॥ १० ॥
 तेह सोनुं शुं कीजीए रे, जेहयी त्रुटें कान ॥ पेटें कांच

ननी बुरी कांइ, धोंचे कोण नादान ॥ मा० ॥ ११ ॥
 नारीने न जणावीयुं रे, निज हियडानुं अहेज ॥ प्रीत
 थयो गायन मिढ्युं कांइ, दीतुं चिन्ह समेत ॥ मा० ॥
 ॥ १२ ॥ मनमें सही निश्चे थयुं रे, ए कुलटा शिरताज ॥
 पण एहने न जणावुं कांइ, मुष्टि जली वत्सराज,
 मा० ॥ १३ ॥ एहवे कूवा थंजथी रे, वोढ्यो माक्षिम
 ताम ॥ राखो रे नियामको कांइ, प्रवहण एणे ठाम
 मा० ॥ १४ ॥ नांगर नाखुं नीरमें रे, वाहण राख्यां
 द्वीप ॥ सढ दोरा संकेलजो कांइ, आव्यो राक्षस
 द्वीप ॥ मा० ॥ १५ ॥ मीठलजल जरो प्रवहणे रे,
 सहू को थारु सज्जा ॥ वचन सुणीनें ठीपीया कांइ,
 पहीता महादेधि मझ ॥ मा० ॥ १६ ॥ तेहीज द्वीप
 तणे तटें रे, आव्यां वाल गोपाल ॥ मोहनविजयें
 निर्ममी कांइ, ए बावीशमी ढाल ॥ मा० ॥ १७ ॥
 सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

राक्षस द्वीपतणे तटे, उत्तरीया सवि लोक ॥ ज
 लईधणने कारणें, बूटा थोका थोक ॥ १ ॥ प्रवहण
 मांहे ततक्षण, जरीयुं निर्मल नीर ॥ समिधादिक
 पण संग्रह्यां, सज्जा थया वर वीर ॥ २ ॥ जोजनहे

तें परबख्सा, लोक सयण तिण चाम ॥ एहवे ठल
 लाध्यो जखो, महेश्वरदत्तने ताम ॥ ३ ॥ कहें न
 मयाने हे प्रिये, जइयें बनह मजार ॥ तुरत फरी
 ने आबखुं, होशे जमण तैयार ॥ ४ ॥ देखखुं कि
 हां ए छीपने, फरी फरी नयणे तेह, जीव्याथी जो
 खुं जलूं, मान बचन धरी नेह ॥ ५ ॥ अति जोली
 नमया सती, कपट न जाणे तास ॥ साथें थइ प्राणे
 शने, आवी बनह निवास ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

देशी विंदलीनी ॥ करथी कर ग्रही आडे, निज
 त्रियने बनह देखाडे हो ॥ कंत महाकपटी ॥ रे प्र
 मदा तुमें देखो, ए सायरतट सुविशेषो हो ॥ कं०
 ॥ १ ॥ ठे तरु केहवा उंचा, जेम वासगमणीना ए पे
 खो पहुँचा हो ॥ कं० ॥ तरुथी बेलि बीटाणी, जे
 म अहिंसाधर्मथी जाणी हो ॥ कं० ॥ २ ॥ ए सुर
 तरु मन मोहे, जगतीशिरछत्र ज्युं सोहे हो ॥ कं० ॥
 केहवुं ठे बन ए दीवुं, मुजने लाग्युं मीतुं हो ॥ कं०
 ॥ ३ ॥ चालो तमें आगल नारी, तीहां होशे कौतु
 क जारी ॥ कं० ॥ दंपती आघां चाट्यां, वर कदली
 वनमें माट्यां हो ॥ कं० ॥ ४ ॥ रंजा पवनें जोले,

तस दीरघदल बहु डोले हो ॥ कं० ॥ लुंबी जूंब
 रहीयां, फल मोटां रस महमहियां हो ॥ कं० ॥ ५ ॥
 महोठुं सर जबै जे जरीयुं, जेम नानकडो ए दरीय
 ॥ कं० ॥ शीतल जूमी जे सूहावे, पंखीपण रमव
 आवे हो ॥ कं० ॥ ६ ॥ ते सरपाळे वेठां, पियु
 मदा बीहु एकेठां हो ॥ कं० ॥ पीयुडे मांडी माया
 पण कांइए न जाणे जाया हो ॥ कं० ॥ ७ ॥ गूढ
 कपट कुण जाणे, ब्रह्मापण नविहुं पीठाणे हो
 कं० ॥ पठें प्रमदा पजणे, पियु पोढो जागीस ह
 खांणे हो ॥ कं० ॥ ८ ॥ कहे पीयु पोढो नारी, श्
 वेठो लुं धीरज धारी हो ॥ कं० ॥ पोढी नाह ज
 सें, तेणे सुखनिद्रा ग्रही होंशे हो ॥ कं० ॥ ९ ॥
 निता सूती जाणी, चिंते पियु कपटनो खाणी हो
 कं० ॥ जो हणुं एहने तेगें, तो पातक लागशे वे
 हो ॥ कं० ॥ १० ॥ एह सूती ठे नारी, जो मुंकुं तो
 होये सारी हो ॥ कं० ॥ एहने श्हां परिहरवी, श्हां
 ढील न कांइ करवी हो ॥ कं० ॥ ११ ॥ कर्म कहो
 केम चूके, जुड प्रमदा प्रीतम मूके हो ॥ कं० ॥ जु
 जंगनी त्रांते वाला, जूड नाह तजे सुकुमाळा हो ॥
 कं० ॥ १२ ॥ वनिता मूकी वनमें, कांइ करुणा ना

श्री मनमें हो ॥ कं० ॥ दोड़्यो बांधी मूठी, फरी न
 करे नजर अपूठी हो ॥ कं० ॥ १३ ॥ नारी उवेखी
 नाखी, जेम घृतमांधी मांखी हो ॥ कं० ॥ प्रवहणे
 दोड़्यो आवे, जूठ केहवी बुझि उपावे हो ॥ कं० ॥
 १४ ॥ घोळ्यो श्वासे जराणो, हलफसतो मांड खेदा
 णो हो ॥ कं० ॥ रे लोको सज घाठ, एणे प्रवहणे
 दोडी जाठ हो ॥ कं० ॥ १५ ॥ ताणो पट शुं विचा
 रो, जलनिधिमां पोत हंकारो हो ॥ कं० ॥ जोज
 न वहाणमां करशुं, पण जड्र इहांयकी बलशुं हो
 ॥ कं० ॥ १६ ॥ ढील करो ठो कांइ, सज थाठ वहे
 ला जाइ हो ॥ कं० ॥ एह त्रेवीशमी ढाल, कहीं
 मोहनविजयें रसाल हो ॥ कं० ॥ १७ ॥ सर्वे गाथा.

॥ दोहा ॥

पडतो ध्रुजंतो थको, कहे महेश्वरदत्त ॥ जूठ ए
 आवे अठे, रजनीचर केइ ऊत्त ॥ १ ॥ दंतुर बली
 दीरघ अधर, कर आयुध विकराल ॥ केश विवूटे
 कांवरे, उं आवे जंघाल ॥ २ ॥ उं ऊडे रज अंवरे,
 चरणे धमके झूर ॥ आवे ठे उताबलो, जेम पयो
 निधि पूर ॥ ३ ॥ शुं बल कीजें एहथी, एह पुलिंद
 प्रचंरु ॥ मुऊ वनिताने पापीए, कीधी खंडो खंड ॥

॥ ४ ॥ नाछो आव्यो तुम कन्है, कहुं तुं न करो वा
 र ॥ प्रवहणमां बेसी तुरत, जो वंगो हित सार
 ॥५॥ बीहिना लोक इस्थुं सुणी, वेठा प्रवहणमांहि ॥
 कपटी पण बेगो तुरत, सयण वच्चे सोत्साहि ॥ ६ ॥
 वाहण चाढ्यां जलधिमां, मूक्यो तेहज द्वीप ॥ ज
 न वनिता दुःख वारवा, आव्या तास समीप ॥७॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

उग्रसेन नृपनी तनुजाशुं रंगें राज, तथा नरवर
 साजी ॥ एदेशी ॥ ते महेश्वरदत्त धूतारो राज, मांड्या
 फंद प्रचारारे ॥ किहां गइ सा नारी रे ॥ ए आंकणी
 ॥ सयण आगल ते रुदन करतो, राज ठोडे आंसु
 धारा रे ॥ कि० ॥ १ ॥ कूटे ठाती धरणीए लोटे रा
 ज, मूखथी कहै प्रिया प्रिया रे ॥ कि० ॥ लीधी व
 निता कांइ उदाली राज, ए शुं कखुं दइया रे ॥
 कि० ॥ २ ॥ हमणां हुंती मुख आगल रुडी राज,
 एम ए किहां गइ नाशी ॥ कि० ॥ हमणां कां नथी
 बोलती मोसुं राज, थइ कां वेठी मेवासी रे ॥ कि०
 ॥ ३ ॥ तें शुं माहरो मोहन आण्यो राज, एका ए
 क गइ ठोडी रे ॥ कि० ॥ हियडामां तुं खटकीश
 णंते राज, जिम रही जाली उंडी रे ॥ कि० ॥ ४ ॥

एम दुःख कारीरुं मांकी बैठो राज, शोक सयल
 ब्रति बूजे रे ॥ कि० ॥ शुं दुःख एवहुं मनमां व
 होत्रो राज, काह्या आगम सुजे रे ॥ कि० ॥ ५ ॥
 जेह गयो ते पाठो नावे, तो दुःख केहनुं कीजें रे
 ॥ कि० ॥ देव थकी बल नांही कोझनुं, होवे तो व
 हेंची लीजें रे ॥ कि० ॥ ६ ॥ जिन चक्री हरिबल
 बलिराजा, केह गया एणी वाटें रे ॥ कि० ॥ ते तु
 म दुखहुं कांइ न जाणे, तो शुं होवे उचाटे रे ॥
 कि० ॥ ७ ॥ जाणता हूँता ज्ञान खहंता, एम अ
 जाण कां हूँत रे ॥ कि० ॥ मानो वचन थम फि
 कर निवारो, लेह जल मूखहुं धूँत रे ॥ कि० ॥ ८ ॥
 शीप सलामत पाध घणेरी, जाणता नथी ए उ
 खाणो रे ॥ कि० ॥ वचन सुणीने निर्दयी राज, हुं
 त सहज सपराणो रे ॥ कि० ॥ ९ ॥ कीधुं जोज
 न मनमांहे सुहातुं राज, मूकी नारी विसारी रे
 ॥ कि० ॥ जे निःस्नेही तस माया न होवे राज, स
 स्नेही मायाधारी रे ॥ कि० ॥ १० ॥ जे विश्वासी
 घात उपावे राज, धिक धिक तास जमारो रे ॥ कि०
 ॥ इह परजव पापें पीडाये, ते सह सह अवधारो
 रे ॥ कि० ॥ ११ ॥ अनुक्रमें प्रवहण तरतां पही

तां, यवन झीपने तीरें रे ॥ कि० ॥ उतस्यां सहु ज
 न सायर कंठे, आव्या नरपति नीरें रे ॥ कि० ॥
 १२ ॥ महेश्वरदत्तें जेटणुं मेढ्युं राज, नृप आगल
 अजिनवेरुं रे ॥ कि० ॥ रीऊयो महिपति दीधो दि
 लासो राज, करो व्यवसाय घणोरो रे ॥ कि० ॥ १३ ॥
 नृप आदेशे महेश तिवारें, पुरमां वेच्यां वसाणां रे ॥
 कि० ॥ कीधा गांठे दाम डुणा राज, परखी परखः
 नाणां रे ॥ कि० ॥ १४ ॥ निगम्या केताएक दिवस
 तीहां राज, प्रवहण वली सज कीधां रे ॥ कि० ॥
 खेड्यां प्रवहण महोदधिमांहे, निजपुर साहामां
 सीधां रे ॥ कि० ॥ १५ ॥ जर दरिये जव प्रवहण
 आव्यां राज, पूरे पवनें प्रेस्यां रे ॥ कि० ॥ दैवग
 तेथी पोत सविहु, गिरि कुंडलमां घेस्यां रे ॥ कि०
 ॥ १६ ॥ प्रवहण पर्वत परें स्थिर रहीयां, फरहरे पं
 चरंग नेजा रे ॥ कि० ॥ ढाल चोवीशमी मोहनें
 जांखी, सहु हुंसे निसूणी सहेजा रे ॥ कि० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

वहाण रुंधाई रह्यां, न होय वायु प्रसंग ॥ ना
 विक सवि जांखा थया, ढीप्या सयल सलंग ॥ १ ॥
 प्रवहण जन आतुर हुआं, उद्यम न चढ्यो हाथ ॥

चिंतातुर चिंते सहू, शुं करशुं जगनाथ ॥ २ ॥ ना
 बधी उतस्यो एकलो, तेह महेश्वरवत्त ॥ ततक्षण
 गिरि उपरें चढ्यो, कौतुक देखण-ऊत्त ॥ ३ ॥ तिहां
 एक दीतुं देहरुं, उंची धज लहकंत ॥ दोय नगरां
 देहरे, अति आगल दीपंत ॥ ४ ॥ दीठां तेह महेश्वरें,
 लीधी गेडी हाथ ॥ नीशाणे दीधी तिहां, ग
 रज्यो जूधर नाथ ॥ ५ ॥ ऊवक्यो निपट गुहाथ
 की, उढ्यो विहंग जारंरु ॥ पसस्यो पंखतणो पव
 न, अति उंचो ब्रह्मंड ॥ ६ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

नंद सलूणा माहरा नंदनारे लो ॥ ए देशी ॥ जा
 रंड पंखीना वायसूं रे लो, तेणें हीलोढ्यो सायरु रे
 लो ॥ गिरिकुंडलथी नीकल्या रे लो, प्रवहण पंथ
 दिशा चढ्यां रे लो ॥ १ ॥ कहे जन बहाण तो बह्यां रे
 लो, शेठ तो गिरि उपरें रह्या रे लो ॥ कीहांथी ए
 मेखो होयशे रे लो, वाट एहनी घरे जोझशे रे
 लो ॥ २ ॥ बाहण पण नवि फरे फरी रे लो, कोश घ
 हु रहियो गिरि रे लो ॥ अनुक्रमे प्रवहण जावीयां रे
 लो, रूपचंद्रपुर आबियां रे लो ॥ ३ ॥ खयर हूई रुजद
 तने रें लो, प्रवहण आब्यां पत्तने रे लो ॥ लोक स

बोली वनमां एम ॥ ठाना जे रहो ठो बूपी, ठूँडी का
 ढीश तेम ॥ ४ ॥ एम कही कदलीवनविषे, पेठी
 नमया नारी ॥ आलें कहे में दीठडा, उ उजा नी
 धार ॥ ५ ॥ कपट न जाण्युं कंतनुं, जोली नमया
 जाम ॥ ६ ॥ ए कंतारमें, करी गयो ठे काम ॥ ५ ॥
 ॥ ढाल ठवीशमी ॥

चंदलीया धूतारडा रे ॥ ए देशी ॥ नाहलीया
 निःस्नेही एम कां बूपी रह्यो रे, नारीयें धीर न
 धराय रे ॥ रामतनी बेलाए रामत कीजीए रे, विण
 अवसर केम थाय रे ॥ ना० ॥ १ ॥ अबलानी धीर
 जनुं शुं जूठ पारखुं रे, अबला बल कुण मात्र रे ॥
 आवोने वालमीया तुमची वाटडी रे, जोतां हशे
 संयात्र रे ॥ ना० ॥ २ ॥ हांसीथी वीखासी प्रीत
 मजी हूवे रे, मानो प्राण आधार रे ॥ इण वनमें
 हांसीनी बेला शी अठे रे, हांसी एहवी निवार
 रे ॥ ना० ॥ ३ ॥ एम करतां तिहां पीयुडो केमही
 बोल्यो नहीं रे, चिंते नमया नारी रे ॥ सहीतो वन
 मांहे ठेह देश गयो रे, ए कपटी जरतार रे ॥ ना० ॥ ४
 वालमना पाय जोती सायरने तटें रे, आवी जोवे
 जामरे ॥ एके कोइ नावडळूं तिहां दीतुं नहीं रे, अइ

पितातुर ताम रे ॥ ना० ॥ ५ ॥ फिट फिट रे निःस्नेही
 निर्गुण नाहला रे, थिक थिक मुक्त श्रवतार रे ॥
 उतारी कूपमां मूकी दोरडी रे, कापे एहवो कवण
 गमार रे ॥ ना० ॥ ६ ॥ में तो शुं कांइ तुजने कहीए
 दूहव्यो रे, शुं तुज उकल्युं एह रे ॥ करुणा ए शुं नाथी
 तुज हियडे रे, एह शो कारिमो नेह रे ॥ ना० ॥ ७ ॥
 वदीए ठे तुज ठाती वज्र सरीखडीरे, दोह्यो जे
 धरणी मूकीरे ॥ परिहरतां केम चाख्युं मनहुं ताह
 ररे, दीठी शी मुजमां चूक रे ॥ ना० ॥ ८ ॥ नेहड
 खो न शक्यो नाहलीया नीवाहिने रे, दीधो श्रचि
 त्यो ठेह रे ॥ रे रे किम विधाता हाथे घडे रे, ए
 हवा नर निःस्नेह रे ॥ ना० ॥ ९ ॥ एहवी जो
 न करे तो तारीरे, उंठी कला नवि थाय रे ॥ तुं
 पण दीसे ठे निर्दय हियडे रे, एहवुं तुज न सुहाय रे
 ॥ ना० ॥ १० ॥ जाखुं तुंकर जोडी दैवमें ताहरो, केहो
 उलव्यो ग्रास रे ॥ मुजने जे तें मेल्यो एहवो नाहलो रे,
 एतुजने शावासरे ॥ ना० ॥ ११ ॥ धुरथी जो बालमीया
 कूड हुं जाणती रे, तो कांइ नावत साथ रे ॥ रेहती
 हुं मंदिरमें दुःख नवि देखती, नित्य पूजत जगना
 थ रे ॥ ना० ॥ १२ ॥ पेहखां तो जख पीधुं पठे घर पूठीयं

रे, हुबुं जेबुं लखीयुं ललाट रे ॥ मुनिवरनुं जे ज्ञाख्युं
 तेह खरुं थयुं रे, जल वही आव्युं वाट रे ॥ ना०
 ॥ १३ ॥ दैवे जो पांखडली दीधी होत जो रे, तो
 जइ मलती कंत रे ॥ केम जइने मलीयें आडो सा
 यरु रे, सायरु तेम तदंत रे ॥ ना० ॥ १४ ॥ पियुडा
 ने उलूंडी आवे मनमें रे, नारी निगमे केम दीह रे
 ॥ उपाडी नाखी विरहपयोधिमां रे, मीतुं बोलतो
 केम जीह रे ॥ ना० ॥ १५ ॥ थानारुं ए लख्युं एहबुं
 ज्ञाग्यमां रे, वालिम ताहरो विजोगरे ॥ इहां कोइ
 कोइनो वांक कोइ नहीं रे, पूर्व कर्मनो जोग रे ॥
 ना० ॥ १६ ॥ जंगलमें पण मंगलमाला होयशे रे,
 शील थकी सुविशाल रे ॥ पञ्चणी ए मनमानी ठवीश
 मी रे, मोहनविजयें रसाल रे ॥ ना० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥
 ॥ दोहा ॥

नमया ठेह देश गयो, नाह महेसरदत्त ॥ अब
 ला फूरे एकली, सायर तट संसत्त ॥ १ ॥ विरह म
 होजो केहने, विरह दुस्सह दीठ ॥ धरणी पण शत
 खंड हुवे, जल विरहे उकिछ ॥ २ ॥ बल्लह विरह अ
 थाह जल, थाह न लपे कोय ॥ कां न हुबुं ताहरुं मि
 लण, जंगल जेटण होय ॥ ३ ॥ जिहां विरहानल प

रजले, तिहां नर केहो नूर ॥ दये दावानल जिहां,
 तिहां केम होय अंकूर ॥ ॥ मानव कवण सही श
 के, विरह जुयंगम ऊल्ल ॥ जाली उंडी नीकले, पण न
 सहं विरहासल्ल ॥ ५ ॥ विरह बज्र घंचे कवण, विरह
 दुःख न सहाय ॥ झाख लताथी वीठडे, तेम तेम
 दुर्बल थाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्यावीशमी ॥

शुक देव कहे रे उपाय, तुमैं सांजलो परीदा
 त राय ॥ ए देशी ॥ हवे नमया सुंदरी नार, मूके
 नयणयी आंसूधार ॥ पडी शोचना सरित मजार,
 विरहें यह व्याकुली रे ॥ कुण जाणे पराइ पीर ॥
 जस बीचे ते सहेज शरीर, विरहीनो विरह गहीर ॥
 वि० ॥ १ ॥ फिरे वनमां मृगली जेम, जिहां विरह
 तिहां धीरज केम ॥ जीहां प्रीत तिहां गति एम ॥
 वि० ॥ २ ॥ करी प्रीति निवाहे कोय, करी एकं
 गो ताणे लोय ॥ पठी तेदनी एह गति होय ॥ वि० ॥
 ॥ ३ ॥ एकंगो पतंगने नेह, यह रसीयो जंपावे
 देह ॥ पण दीपक न गणे तेह ॥ वि० ॥ ४ ॥ करी
 प्रीत निवाहे कोय, तेतो विरखो कोइक होय ॥ तस
 पीजें पयतल धोय ॥ वि० ॥ ५ ॥ जे उत्तम जननी

प्रीति, तेहनी तो जगमांय प्रतीति, खलनी तो वि
 परीत रीति ॥ वि० ॥ ६ ॥ दे एम ठेह करी विश्वा
 स, वह्यो जार जननीयें तास ॥ ते तो एमही उदरे
 दशमास ॥ वि० ॥ ७ ॥ एम रटती फीरे वनमांही,
 तास संग सखी नहि पाहि ॥ पडतां रहे वृद्ध संवा
 हि ॥ वि० ॥ ८ ॥ कहे हृदयने रे चंड, कांश्न होय
 विरहे शतखंड ॥ केम वहीश तुं दुःख करंरु ॥ वि० ॥
 ९ ॥ अयि प्राण कहुं तुं तुम्म, नहिं वालम निकट
 निस्सम्म ॥ कहेवाशो केहना इम्म ॥ वि० ॥ १० ॥
 कांई सरजी एणे संसार, निर्जागिणी एहवी नारि ॥ जे
 ह तजी एम जरतार ॥ वि० ॥ ११ ॥ रे धरणी न दे
 कां माग, पियुविरह वाई गयो खाग ॥ जूज कपटी
 ए लाध्यो शो लाग ॥ वि० ॥ १२ ॥ ए वनमां कव
 ण आधार, पीयर केइ कोष हजार ॥ गति केइ करि
 श किरतार ॥ वि० ॥ १३ ॥ पुरुषें पण नाण्यो प्रेम,
 गयो वालिम मूकी एम ॥ तस रूंधी न राख्यो केम
 ॥ वि० ॥ १४ ॥ अइ वैरण निंद डुरंत, जेणे राख्यो
 उलवी कंत ॥ एम कही नमया विलपंत ॥ वि० ॥
 १५ ॥ पूरवे में कीधां पाप, होशे दीधा कोइने शा
 प ॥ तेह प्रकट्या आपो आप ॥ वि० ॥ १६ ॥ दीधा

होशे आखे दोष, पीधा होशे आखे कोश ॥ तो जो
 गवतां केहो शोष ॥ वि० ॥ १७ ॥ कस्या हशे कान
 नदाह, मृग मास्या हशे फंदमांह, विल पूस्या हो
 शे नीरप्रवाह ॥ वि० ॥ १८ ॥ कस्या धोलक मात
 विठोह, वेच्यां होशे आयुध लोह, कस्या होशे सा
 धु कोह ॥ वि० ॥ १९ ॥ सूची अणीये अनंता जीव,
 कस्या चूरण कंद दहेव ॥ कीधा होशे आहार सदे
 व ॥ वि० ॥ २० ॥ गो कन्या जूमि अलीक, होशे
 बोल्यां जवातरे ठीक ॥ फलं तेहनां एह नजीक
 वि० ॥ २१ ॥ करी उद्यम करुं धनजाल, थई वेगो
 हुईश रखवाल ॥ लीधुं होश्ये में ते उदाल ॥ वि० ॥ २२ ॥
 वावस्यां होशे अणगल नीर, ग्रही धाव्या पंजर की
 र ॥ रंग्यां होशे रातां हीर ॥ वि० ॥ २३ ॥ धरणीनुं वि
 दाखुं पेट, शरसंधि रसीयां खेट ॥ कस्यां शातनपातन
 पेट ॥ वि० ॥ २४ ॥ परदारा संगति कीध, रस रंजी
 वारुणी पीध ॥ सेव्यां होशे व्यसन प्रसिद्ध ॥ वि० ॥
 २५ ॥ तिथिपर्व जाणी कस्यां जंग, करी होशे के
 ली अनंग ॥ वली मिथ्या वादि प्रसंग ॥ वि० ॥ २६ ॥
 जिनमतयी कस्यो विषवाद, गुरुजनना कस्या अप
 वाद ॥ दूळ होशे संतविपाद ॥ वि० ॥ २७ ॥ एम

निंदे पुरात्तन कर्म, दृढ धारे जिनवरधर्म ॥ लहियें
हथी संपत्ति शर्म ॥ वि० ॥ २८ ॥ ए सत्यावीशम
ढाल, कही मोहनविजयें विशाल ॥ कहुं आगल व
त रसाल ॥ वि० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

चार प्रहर दिन वन जमी, पियु विण विण साहि
त्य ॥ महासती दुःख देखीने, आथमियो आदित
॥१॥ अई रजनी उदयो शशी, विहंग करे विश्राम
पसरी दशदिश चंद्रिका, उज्ज्वल शीतल द
म ॥ २ ॥ लता गुष्ठमांहे वसी, नमया सुंदरी त
म ॥ नयणे नावे नींद्रडी, मध्यरयणी अइ जाम ॥३॥
पियुविरहे तलपे घणुं, जलविण जेहवुं मीन ॥ जिम
जिम नेही सांजरे, तेम तेम जंपे दीन ॥४॥ रे रे
द कलंकीया, लाज न आवे तुज ॥ अवला जाणी
कली, शुं संतापे मुज ॥ ५ ॥ जो पीयुमेलो तुं करे
तो तुजमानुं पाड ॥ नित देउं आशीप तुज, करी र
खुं मनवाड ॥ ६ ॥

॥ ढाल अष्टावीशमी ॥

गोकुल गामने गोंदरे रे, आ शी लूटा लूट
मारा बाहला रे ॥ ए देशी ॥ एकलडी सायरतट

रे, नमया माजम रात ॥ मारा वाला रे, झुने
 दीये उलंजडा रे, मीठडी मीठडी वात ॥ मा० ॥
 ॥ १ ॥ चांदलिया घूतारदार, निर्दय निर्दोर कनोर
 मा० ॥ विरहीया विरह जगाडतो रे, नंचय चितडा
 चोर ॥ मा० ॥ चां० ॥ २ ॥ लोक कहे तुजमें मुधा
 रे, ते तो मुधा में दीठ ॥ मा० ॥ जाणुं तुं हुं मुज
 जाणतो रे, तुजमां ठे गरख गरिठ ॥ मा० ॥ चां० ॥
 ॥ ३ ॥ सायर पुत्र तो तुं नही रे, तुं बडयानलनी
 जाति ॥ मा० ॥ ताहरुं नाम दोपाकरुं रे, तेहज
 साची विख्यात ॥ मा० ॥ चां० ॥ ४ ॥ हियडे तुं
 रखे फूलतो रे, जे मुज माने ठे ईश ॥ मा० ॥ ग्रणुं
 विष पीयुपने तज्युं रे, शंकरतो ठे बालिश ॥ मा० ॥
 चां० ॥ ५ ॥ ताहरेज जाग्ये ए राहुने रे, देवें न
 दीधुं पेट ॥ मा० ॥ नही तो होत तुं पाधरो रे,
 एस दुःख देत न नेट ॥ मा० ॥ चां० ॥ ६ ॥ क्यारे
 कदीय तुं उगमे रे, दिनयर केरी सेज ॥ मा० ॥
 जाय ठे किहां माटीपणुं रे, कां नथी करतो तेज ॥
 मा० ॥ चां० ॥ ७ ॥ एहवो जोरावर जो अठे रे,
 रवि शशि संगम रात ॥ मा० ॥ त्यारे कां नथी ज
 गतो रे, जाणी में ताहरी वात ॥ मा० ॥ चां० ॥ ८ ॥

दीसे ठे शीतल दीसतो रे, पण पावकथी छुरंत ॥
 मा० ॥ मोलुं दही जेम पीवतां रे, जेम होय शीत
 लदंत ॥ मा० ॥ चां० ॥ ए ॥ कांश्क करुणता राखी
 येँ रे, कठिण न थड्ण सामूर ॥ मा० ॥ तो जग
 दीश जलूं करे रे, साहिव हाजरा हजूर ॥ मा० ॥
 चां० ॥ १० ॥ कांश्क कीजे संजारणुं रे, कांश्क कीजे
 उपकार ॥ मा० ॥ दीजे जश्ने उलंछडो रे, जिहां
 होय मुज जरतार ॥ मा० ॥ चां० ॥ ११ ॥ झूडा
 तुं अंबर संचरे रे, तुजने शी लागे वार ॥ मा० ॥
 नाह कठोर मेहली गयोरे, जो तुं नयण उघाड ॥
 मा० ॥ चां० ॥ १२ ॥ जे कोय वेरी करे नहीं रे,
 तेम करी नागो कंत ॥ मा० ॥ जो तुं मेलावो मे
 लवे रे, तुं मुज वीर महंत ॥ मा० ॥ चां० ॥ १३ ॥
 एम विलपे ते व्याकुली रे, तेहवे विहाणी रातरे ॥
 मा० ॥ चंद वृष्यो रवि ऊगम्यो रे, सुंदर हूँ प्रजा
 त ॥ मा० ॥ चां० ॥ १४ ॥ वल्ली गुठथी नीकली रे,
 आवी महोदधि तीर ॥ मा० ॥ निसासो जरती थ
 कीरे, त्यां कुण जाणे पीर ॥ मा० ॥ चां० ॥ १५ ॥
 पियु पियु करी नमया रडे रे, नाह मलो एक वार
 ॥ मा० ॥ वली चित्तडायी चितवे रे, किहां मले व

नह मजार ॥ मा० ॥ चां० ॥ १६ ॥ जेह हाथेथी
 महेली गयो रे, त्रेवडी हुंसातुंस ॥ मा० ॥ ते पियु
 केम आवी मले रे, म कख्य मुधा मनहुंस ॥ मा० ॥
 चां० ॥ १७ ॥ दुखडुं इहां कोण सांजले रे, रोये
 न लाजे राज ॥ मा० ॥ मोह तेणे नाणीज रे, श्यो
 ठे तेहथी काज ॥ मा० ॥ चां० ॥ १८ ॥ जीहां ती
 हां शील सखाइ रे, शीलथी मंगलमाल ॥ मा० ॥
 मोहनविजयें जली कही रे, अव्यावीशमी ढाल ॥
 मा० ॥ चां० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

हवे तो नमया सुंदरी, मनमां धीरय दिख ॥
 हवणां मलशे वालमो, प्रेम विलुख प्रसिख ॥ १ ॥
 जे ते कम्म उत्रधियो, तेहना जोगव्य जोग ॥ ठे
 गति ए संसारनी, दण वियोग दण योग ॥ २ ॥
 जोगव्य तुं ताहरां कख्यां, कां तुं धरे विपाद ॥ जे
 जेहवुं फल वावियें, तेहवो तास सवाद ॥ ३ ॥ जो
 तें वावी कोदरी, शाल तुं केम लणेश ॥ पामीश क
 मल किहां थकी, पठर जो तुं खणेश ॥ ४ ॥ मुजने
 मुनियें कलुं हतुं, कंत विठोहो जेह ॥ पूरव कर्म
 तणे वशे, उदये आव्यो तेह ॥ ५ ॥ प्रेम करी पलटे

नहीं, ते विरलो संसार ॥ पण इहां प्रेम किशो करे,
जीहां कृतकर्म प्रसार ॥ ६ ॥

॥ ढाल उगणत्रीशमी ॥

कोई आण मेलावे साजनां ॥ ए देशी ॥ हो उठी
जमया सुंदरी, सायर तटथी एह हो ॥ आवी क
दली वनमां, दीतुं सरोवर तेह हो ॥ १ ॥ शील स
खाइ होइशे, एहने वनह मजार हो ॥ मलशे वाह
लां मानवी, होशे जयजयकार हो ॥ शी० ॥ २ ॥ वेठी
सरोवरने तटे, हियडे खटके शाल हो ॥ इहां पर
हरीगयो पियुडो, आण्युं कांइ न वाल हो ॥ शी० ॥ ३ ॥
एह कदलीना गेहमां, रहेता लागे वीक हो ॥ उपहेली
गिरिकंदरी, दीसे ठे नजीक हो ॥ शी० ॥ ४ ॥ तजी सर
वर ग्रही कंदरा, पेसी लीधो विश्राम हो ॥ निर्मल
जलें जरी नानडी, मुख पखाळ्युं ताम हो ॥ शी०
॥ ५ ॥ जे वनफल झूंई पड्यां, ते लेइ कीध आहा
र हो ॥ पवित्रपणे शुरू चित्तथी, ध्यान धरे नव
कार हो ॥ शी० ॥ ६ ॥ एहज मंत्र प्रज्ञावथी, अ
हि थयो फूलनी माल हो ॥ कुष्ट गयो जपतां थकां,
पास्यो सुख श्रीपाल हो ॥ शी० ॥ ७ ॥ शिवकुमारें
ए मंत्रथी, जटिलनो पुरिसो कीध हो ॥ जिनदासैं

महावज्रथी, बीजपूरक फल लीध हो ॥ शी० ॥ ८ ॥
 पाम्यां जिह्वने जीह्वडी, मंत्रथी सुरना जोग हो ॥
 गगनें उडती कोसली, एहज मंत्रने योग हो ॥ शी०
 ॥ ९ ॥ हवे ते नमया नारीने, पीयु विण दीरघ दीह
 हो ॥ बरस जीसी थाये घडी, उपनी एहवी एह हो
 ॥ शी० ॥ १० ॥ निशि वासर नेही विना, होवे श्र
 ति प्रलंब हो ॥ पूजूं जिन जेम सांजले, इहां कोइ
 जो लाजे विंव हो ॥ शी० ॥ ११ ॥ गिरिवरमें नम
 या जमे, घणीए कीधी तलास हो ॥ तोही पण जिन
 राजनी, मूरत न मली तास हो ॥ शी० ॥ १२ ॥ फि
 रि पाठी गइ कंदरा, माटी जल लेइ हाथ हो ॥ मन
 मानीतो तेहनो, निपायो जगनाथ हो ॥ माटी त
 णो निपजावियो, नानकडो प्रासाद हो ॥ तेहमां
 प्रभु पधराविया, गाती सुकंठें नाद हो ॥ शी० ॥ १३ ॥
 स्थाप्युं नाम युगादिनुं, हरखी घणुं मनमांह हो ॥
 वनफल वनमां फूलडां, ढोके नित्य सोत्साह हो ॥
 शी० ॥ १४ ॥ जावें जावे जावना, कहे हो जिन श्रनु
 कूल हो ॥ माहरा नाह तणी परें, रखे होता प्रतिकूल
 हो ॥ शी० ॥ १५ ॥ जो ठे करुणा तादरी, तो ठे मं
 गल माख हो ॥ मोहनविजयें जली कही, ॐ

(ए०)

त्रीशमी ढाल हो ॥ शी० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥
॥ दोहा ॥

वीतरागने विनवे, देव शिरोमणि देव ॥ ए वनमां
पामूं किहां, तुम पद पंकज सेव ॥ १ ॥ मीठी कूर्छ
कर चढी, खारा दरीया मद्य ॥ ए वेलाए तुं मल्यो,
परम सनेही सुख ॥ २ ॥ मात पिता बांधव स्वसा,
ससरो सासू कंत ॥ दुःखमांहि होय वेगलां, एक तुं
सखाइ जगवंत ॥ ३ ॥ तुं करुणानिधि तुं विबुध, तु
ज गुण अपरंपार ॥ जव सायरमां रूवतां, तुज पद
पद्म आधार ॥ ४ ॥ एम जन्म सुकियारथो, करती
नमया नित्य ॥ जूथी लही वनफल जमे, धरती ता
पस वृत्ति ॥ ५ ॥ वख्र तणी बांधी धजा, दरी उर्द्ध बहु
वान ॥ काननमें नमयासुंदरी, एम करे गुजरान ॥ ६ ॥
॥ ढाल त्रीशमी ॥

देशी वीठीयानी ॥ हारे लाल नमया सुंदरीनो पि
ता, निज नयरथी चढीयो जहाजरे लाल ॥ सिंहल
द्वीपनी साहमो, सुंदर व्यवसायनें काज रे लाल ॥ १ ॥
हुं बलिहारी रे शीलनी, नहि शीलसमो जग कोय
रे लाल ॥ जेह थकी वनमें इहां, मनमेखु मेलो होय
रे लाल ॥ हुं० ॥ २ ॥ हां० ॥ प्रवहण तरतां नीरमें,

તે પામ્યાં નિશાચર ક્ષીપ રે લાલ ॥ નમયા તારે રે
 પોતને, સાચર તડે રાહ્યાં ત્રીપ રે લાલ ॥ હું ० ॥ ૩
 ॥ હાં ० ॥ પ્રવહણ હુતી ઝતહ્યાં, જલ દંપણ લેવા
 લોક રે લાલ ॥ સાચરતડે નમયા પિતા, વેગો તિહાં
 વિટાઈ લોક રે લાલ ॥ હું ० ॥ ૪ ॥ હાં ० ॥ દીતું ક
 દલીવન તિહાં, અલગારી નયણે તેણ રે લાલ ॥ જોવા
 કારણ સંચર્યો, એકલો ન જાણે કોણ રે લાલ
 ॥ હું ० ॥ ૫ ॥ હાં ० ॥ દીઠાં તેણે ધરણી તલે, વનિતાનાં પગ
 લાં ગોણ રે લાલ ॥ ચિંતે શ્દાં પૂ વનમાં, રહેતી દશે
 નારી કોણ રે લાલ ॥ હું ० ॥ ૬ ॥ હાં ० ॥ દીસે ઠે પગ
 લાં તુરતનાં, હમણાં ગઈ દીસે ઠે નારી રે લાલ ॥
 હોશે કોઈક વિયોગિણી, અથવા કિન્નરી અનુહાર
 રે લાલ ॥ હું ० ॥ ૭ ॥ હાં ० ॥ એમ ચિંતી જતાવલો, ચાલ્યો
 નમયાનો તારે લાલ ॥ કદલીવન મૂકી કરી,
 ગયો ઝુંગર નિકટ વિખ્યાત રે લાલ ॥ હું ० ॥ ૮ ॥ હાં ० ॥
 તિહાં એક તેણે દીઠી ધજા, ફરહરતી પવન પ્રકા
 શ રે લાલ ॥ જાણું સહી શ્દાં કોઈનો, રહેવાનો
 દીસે ઠે વાસરે લાલ ॥ હું ० ॥ ૯ ॥ હાં ० ॥ વિણ જાણ્યે કે
 મ કોઈના, મંદિરમાંહે દીજે પાય રે લાલ ॥ રા
 હ્યાની એહ રીત ઠે, વિણતેડે કીમહી ન જવાય રે

(ए२)

लाल ॥ हुं० ॥ १० ॥ हां० ॥ संकोचाईने रह्यो, ए
 कलो कंदरा वार रे लाल ॥ कान देखने रे सांजले,
 तिहां वयणतणा जणकार रे लाल ॥ हुं० ॥ ११ ॥
 हां० ॥ कोइक नूढ्युं ठे मानवी, इहां वसियुं दीसे
 ठे तेह रे लाल ॥ लोकदिशा उमी ए ध्वजा, फर
 हरती कंदरा गेह रे लाल ॥ हुं० ॥ १२ ॥ हां० ॥
 कान देख वली सांजव्युं, नर किंवा नारी एह रे
 लाल ॥ हलुवे जेम तिहां सांजले, तेम साद उंढ
 खीयो तेह रे लाल ॥ हुं० ॥ १३ ॥ हां० ॥ मूऊ पुत्री
 जे नर्मदा, ते सरखो दीसे ठे साद रे लाल ॥ ते
 केम संजवियें इहां, एम मनथी करे विसंवाद रे
 लाल ॥ १४ ॥ हां० ॥ होय किंवा नहिं होय, मुऊ
 पुत्री नमया एह रे लाल ॥ बीजी कुण काही असी,
 एम बोले मीठी जेह रे लाल ॥ हुं० ॥ १५ ॥ हां० ॥ पेठो
 कंदरीमांहे धसि, दीठी निज पुत्री नेण रे लाल ॥
 तातें बोलावी वाक्किा, अति मीठे मनोहर वयण
 रे लाल ॥ हुं० ॥ १६ ॥ हां० ॥ नमया जो जो
 बोलशे, निज तातथी वेण रसावरे लाल ॥ रंग
 रली ए त्रीशमी कही मोहनविजयें दावरे ॥
 लाल ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा

॥ दोहा ॥

नमयाए दीजे पिता, दुर्धित मनमां जोर ॥ धा
 राप्रर देखी जिस्यो, तांडव मांडे मोर ॥ १ ॥ दणो
 क करी आलोचना, ए सुदणुं के साच ॥ कीड़ांयी
 ए वनमें पिता, ए शो दीसे साच ॥ २ ॥ के कोई
 वनदेवता, प्रगट्यो गुफा मजार ॥ दीसंतो दीसे पि
 ता, पण केम करुं जुहार ॥ ३ ॥ बोळ्यो तात सुता
 प्रत्ये, रे बत्से सुण बात ॥ चित्तयी शी करे शोचना,
 हुं तुं ताहरो तात ॥ ४ ॥ शुं तुं उलखती नयी, हुं
 तुज जनक सहदेव ॥ ताहरो साद सुणी जहां, सि
 लवा आव्यो हेव ॥ निश्चय जाणी नर्मदा, जठी प्र
 णम्या पाय ॥ आलिंगीने जनक पण, मळ्यो हेज
 न समाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

तुम चरणे मेरो चित्त लीनो ॥ ए देशी ॥ नमया
 सुंदरी तातने कंठे, लागी ठाती जराणी उत्कंठें ॥
 प्रभु जे करे ते मानी लीजें ॥ नयन थकी जरे आंसु
 धार, जाणे तूटो मोती हार ॥ प्र० ॥ १ ॥ गदगद
 कंठयी बोली न शके, हियहुं दुःख ते केम करहि
 शके ॥ प्र० ॥ तव तेहने तातें बुचकारी, एवहुं

(६४)

दुःख केम करे विचारी ॥ प्र० ॥ १ ॥ इण छीपें
 इण वनमें तुं केम ठे, कहे मुजने जेहवुं जेम ठे ॥
 ॥ प्र० ॥ पासे नहीं कोइ संग सहेली, किहां गयो वा
 लम तुज महेली ॥ प्र० ॥ ३ ॥ में तुज उत्तमने
 परणाइ, तिहांथी तुं इहां किण विध आइ ॥ प्र० ॥
 कहे तव नमया तातने वाणी, केती कहुं हुं कर्म क
 हाणी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जव हुं परणी पीयु गुण जोती,
 राखतो तव पीयु अंबर धोती ॥ प्र० ॥ ते इहां ठेह
 देइ गयो वनमें, करुणा किमपि न आणी मनमें ॥
 प्र० ॥ ५ ॥ में एस पीयुडानुं कूड न जाण्युं, जोले जा
 वें साचुं पिढाण्युं ॥ प्र० ॥ इहां एकलडी दिहडा
 गाळुं, वनफलथी ए पिंरुने पाळुं ॥ प्र० ॥ ६ ॥ तमे
 शुं करो वली शुं करे पीयुडो, पूर्व कीधां जोगवे
 जीवडो ॥ प्र० ॥ जालमें जेह लख्युं ते लहीए, अंत
 रगतनी केहने कहीए ॥ प्र० ॥ तुमे जाण्युं हशे मा
 हरी वाला, परण्या पढे सुख लहेशे ते वाला ॥ प्र० ॥
 पण जो माहरा वखतमें न लिखियो, वांक नहीं में
 कोइनो परखियो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तातें निसूणी पुत्री
 वाणी, सांचलतां तिहां ठाती जराणी ॥ प्र० ॥ ऐ
 ऐ महारी पुत्री एवां, दुःख जोगवे ठे वनमांहे

केवां ॥ प्र० ॥ ए ॥ में विन जाणे करी मूसां, जे
 गहवा कपटीने परणाइ ॥ प्र० ॥ एम कडी हियडे
 जगाडी बाला, रखे दुःख धरती द्वे गुणमाला ॥
 प्र० ॥ १० ॥ नमयाने तव आणंद हूड, दुखडाने
 तव दीधो हूड ॥ प्र० ॥ मनमेलू मझे गहवे टाणे,
 ते सुख विहु मन के जिन जाणे ॥ प्र० ॥ ११ ॥
 तादी लहेरी जेम सायर केरी, बुछा जलधर पवन
 फेरी ॥ प्र० ॥ तेहथी अति टाढो वाहवा मेलो, ते
 साचुं रखे जूवमें जेलो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ तातजी तुमे
 इहां जिनवर जेटो, जव जव दुःखडां दीणकमां
 मेटो ॥ प्र० ॥ तात कहे इहां जिनवर किहांथी, क
 हे पुत्री प्रगट्या ठे इहांथी ॥ प्र० ॥ १३ ॥ ततदाण
 ते प्रतिमा दरसाइ, इंगुल तेलनो दीप बनाई ॥ प्र० ॥
 चेत्यचंदन चित्त चोखे कीधूं, दरिस्सणपीयूष नयणे
 पीधूं ॥ प्र० ॥ १४ ॥ तारण तरण तुं जिन कहेवाये,
 रवामी कीसी जो तुं प्रसन्न थायें ॥ प्र० ॥ स्वामी नि
 रंजन निपट नीरागी, तुम चरणथी अम प्रीतडी
 लागी ॥ प्र० ॥ १५ ॥ आप तख्या तिम अमने ता
 रो, तुं शिववनिता देवणहारो ॥ प्र० ॥ जगसांहे न
 हि कोइ तुम सम दाता, तुं जले जायो धन धन

तुम माता ॥ प्र० ॥ १६ ॥ नमया तातें जिनस्तुति
कीधी, समकित सुखडी रूडी लीधी ॥ प्र० ॥ मोह
नविजयें मन स्थिर राखी, ढाल जदी एकत्रीशमी
जांखी ॥ प्र० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

नमयातातें जिनस्तवन, कीधूं रूडी रीत ॥ पुत्रीने
एबुं कहे, अंतरंग धरि प्रीत ॥ १ ॥ जो तुज पियुडे
परहरी, एहवा वनह मजार ॥ तुं ते उपरे प्रीतडी,
नाणीश कोईवार ॥ २ ॥ आपणने चाहे घणुं, दण
दण में सो वार ॥ आपण तेहने चाहीयें, मान्य सुता
निर्धार ॥ ३ ॥ हाथ नमे जो कोशने, वहेंत नमे तो
कोय ॥ दिलजर दिल ठे जिहां तिहां, एम जांखे सह
लोय ॥ ४ ॥ जावा दे जो ते गयो, म करिश फिकर
लगार ॥ आव्य संघाते माहरे, ठोडी परो कंतार ॥
५ ॥ सिंहल द्वीप थई पठे, पहोचशुं आपणे गेह ॥
तिहां वेठी तुं पालजे, शील धर्म ससनेह ॥ ६ ॥
जो मैलो लीख्यो हशे, तो तुज मलशे कंत ॥ नहिं
तो वेठी मंदिरे, जजजे जिन जगवंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल वत्रीशमी ॥

आठ टकारो कंकण रे, नणदल ठणक रह्यो मो

री बांह ॥ कंकण मोल लीउं ॥ ए देशी ॥ तात व
 बनयी नर्मदा रे, सूरिजन हर्षित थइ मनमांहि ॥
 गोरडी गुणवंती, जेहने ठे शीयल सन्नाह ॥ गो० ॥
 (जेहनेठे शील सहाय पाठांतरे) तात संघातें ते
 संचरी रे ॥ सू० ॥ आवी प्रवहण ज्यांहि रे ॥ गो०
 ॥ जे० ॥ १ ॥ परिहसुं वन जिम तद जवें रे ॥ सू० ॥
 उत्कट स्वर्गावास ॥ गो० ॥ वेठी तेह विछोहमें
 रे ॥ सू० ॥ तात संघातें जह्वास ॥ गो० ॥ जे० ॥
 ॥ २ ॥ जोजन कीधां जावतां रे ॥ सू० ॥ पहेख्यो नौ
 तन वेष ॥ गो० ॥ जो सन्माने ठोरहुं रे ॥ सू० ॥
 तेहमां केहो विशेष ॥ गो० ॥ जे० ॥ ३ ॥ वेठां स
 घलां मानवी रे ॥ सू० ॥ प्रवहणमांहे जे वार
 ॥ गो० ॥ मूक्यो पोत खलासीयें रे ॥ सू० ॥ महो
 दधि मद्य ते वार ॥ गो० ॥ जे० ॥ ४ ॥ जेहयो वेग
 उतावलो रे ॥ सू० ॥ झूटे तंती तार ॥ गो० ॥ अ
 धिके वेगे तेहथी रे ॥ सू० ॥ प्रवहण करे रे प्रचार
 ॥ गो० ॥ जे० ॥ ५ ॥ सिंदूरछीपें जातां थकां रे
 ॥ सू० ॥ पवन थयो प्रतिकूल ॥ गो० ॥ पवने प्रेख्यां
 आधियां रे, अनुक्रमें घट्टर कूल ॥ गो० ॥ जे० ॥ ६ ॥
 देखी घट्टर कूलने ॥ सू० ॥ ठीप्यां प्रवहण लुंग

(ए०)

॥ गो० ॥ कैरा सायरने तटें रे ॥ सू० ॥ ताण्या वर
पंचरंग ॥ गो० ॥ जे० ॥ ७ ॥ सहित सुता नमया
पिता रे ॥ सू० ॥ आव्यो कैरा मांह ॥ गो० ॥ वे
सारी नमया जणी रे ॥ सू० ॥ एकांते सोत्साह
॥ गो० ॥ जे० ॥ ८ ॥ जोजन प्रमुख जलां कस्यां
रे, नमयादिकें तेणी वार ॥ गो० ॥ प्रहर दिवस
जव पाठलो रे ॥ सू० ॥ शोचे शाह तेवार ॥ गो०
॥ जे० ॥ ए ॥ नमयाने मूकी इहां रे ॥ सू० ॥ जेटुं
बब्बर जूप ॥ गो० ॥ पुरमे वली रोजगारनुं रे
॥ सू० ॥ दीसे ठे केहवुं स्वरूप ॥ गो० ॥ ॥ जे० ॥
॥ १० ॥ अंबर पहेस्यां सुंदर रे, पहेस्या नर शृंगार
॥ गो० ॥ लीधूं अमूलक जेटणुं रे ॥ सू० ॥ साथें
सवि परिवार ॥ गो० ॥ जे० ॥ ११ ॥ पुत्रीने कहे
पेखजो रे ॥ सू० ॥ पट मंडप मनुहार ॥ गो० ॥
आवीश हुं हमणां फरी रे ॥ सू० ॥ जाउंतुं नयर
मजार ॥ गो० ॥ जे० ॥ १२ ॥ एम कही नमयानो
पिता रे ॥ सू० ॥ परिवख्यो परिकर साथ रे ॥ गो० ॥
एम पहांतो दरवारमें रे ॥ सू० ॥ जिहां वेगो नृप
नाथ ॥ गो० ॥ जे० ॥ १३ ॥ वत्रीश राजकुली सजी ॥
॥ सू० ॥ वच्चे मकरध्वज राय ॥ गो० ॥ नमया तां

पाधरा रे ॥ सू० ॥ प्रणम्या पुरपति पाव ॥ गो०
 जे० ॥ १४ ॥ परदेशी व्यापारियो रे ॥ सू० ॥ जा
 णी नृप दे मान ॥ गो० ॥ आदरधी ग्रंथुं जेटणुं रे
 ॥ सू० ॥ जूयें दीधां पान ॥ गो० ॥ जे० ॥ १५ ॥ कुशला
 लाप परस्परें रे ॥ सू० ॥ पूठे आणी प्रेम ॥ गो० ॥
 पुरमांहे व्यापारनी रे ॥ सू० ॥ मागी आणा तेम
 ॥ गो० ॥ जे० ॥ १६ ॥ प्रणमी नृप नमयापिता रे
 ॥ सू० ॥ आव्यो आपणे ठाम ॥ गो० ॥ ढाल
 कही घत्रीशमी रे ॥ सू० ॥ मोहने एह अजिराम
 ॥ गो० ॥ जे० ॥ १७ ॥ सर्व गाथाः

॥ दोहा ॥

वेच्यां नमयाने पिता, करियाणां पुरमांहि ॥ दा
 म कस्या गांठें जला, परखी पारखमांहि ॥ १ ॥ पुर
 मांहे कीरति थई, नमया जनकनी जोर ॥ एहवो
 कोण अपत्य ठे, जे होये गुण चोर ॥ २ ॥ सुपुरुष
 जिहां जाये तिहां, पामे आदर मान ॥ नागरवल्ली
 मान लहे, जाते तो ठे पान ॥ ३ ॥ नृणचर नाजि
 थकी थई, मृगमदनी शी जाति ॥ पण जो गुण ठे
 तेहमें, तो ठे जग विख्याति ॥ ४ ॥ नमया तात नि
 रंतरें, आवे नृप दरवार ॥ वव्वरमांहे दिन थया,

बहुला हेज चंमार ॥ ५ ॥ नमया केरामां रहे, ता
त करे संचाल ॥ बालमने संचारती, निगमे दिवस
विशाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

सलूणी जोगण रूडी वे ॥ ए देशी ॥ बब्बर कू
लमांहिं वसे ठे, हारिणी गणिका एक ॥ जेहथी पुरंद
र अप्सरा, रही हारी तेहथी विवेक ॥ कर्मनी गति
न्यारी ठे, अरे हां जूठ विचारी वे ॥ १ ॥ ए आं
कणी ॥ हारिणी जन मन हारिणी साची, कारिणी
मोह प्रपंच ॥ प्रगट कपटनी तेह सारिणी, बधा
रिणी प्रीति रोमंच ॥ क० ॥ २ ॥ मधुर वयण बली
नयण अनोपम, सयण करे क्षणमांहि ॥ प्रगटी
मयणतणी जली, ए तो रयणि ज्योत विजाहि
॥ क० ॥ ३ ॥ गणिका रयण तणी ठे कणिका, ला
वण्य अणिका समान ॥ अमृतनी ठे बेलडी, स्नेह
यंत्रनी क्षणिका निदान ॥ क० ॥ ४ ॥ नारी नृत्य
कारीयो हारी, एहवी अटारी तेह ॥ विषय कटा
री विजावरी, शीख झरने जंपावे तेह ॥ क० ॥ ५ ॥
कानि जनने मनमें सरखी, विषय जननी संसार ॥
एहवी गणिका ख्यडी, जस हाथे बडी किरतार

॥ क० ॥ ६ ॥ बटवर रायें तेहथी दीधी, नत्र
 धारिणी सेत्र ॥ धरणीधत्र माने घणुं, एह विपयी
 जननी देत्र ॥ क० ॥ ७ ॥ एक दिन नृप कहे ते ग
 णिकाने, माग्य कांझक मुऊ पास ॥ तुऊ गुणें
 रीज्यो हुं घणो, हुं पूरुं तादरी आश ॥ क० ॥ ८ ॥
 गणिका कहे सुणो नयर नरेश्वर, जो ठे करुणा
 तुऊ ॥ तो उणती ठे केहनी, महाराज मंदिरें मूऊ
 ॥ क० ॥ ९ ॥ पण एक मागुं पसाय तुमारो, सारो
 मोरुं काम ॥ जे सारथवाह आपणे, इहां घडवा
 आवे दास ॥ क० ॥ १० ॥ तेह अठोत्तर सहस्र सो
 वनना, आपे मुऊ दीनार ॥ आवे मंदिर माहरे,
 सुख जोगवे जेह सार ॥ क० ॥ ११ ॥ ते मुऊ मंदिर
 जो नवि आवे, तो देवुं तस अपमान ॥ जो मुऊने
 मागुं दीयो, तो देठ एह दिवान ॥ क० ॥ १२ ॥
 नृप कहे जोली ए शुं मागे, जो मागे ते प्रमाण ॥
 जे कहुं ते लेजें सुखे, कुंण रंक अने कुंण राण ॥
 क० ॥ १३ ॥ नृपना बयणथकी ते गणिका, आवे जे
 सारथवाह ॥ लेवे धन ते पासथी करे, केलि अनंत
 उत्साह ॥ क० ॥ १४ ॥ हारिणी गणिकायें आव्यो
 जाणी, नर्मदासुंदरी तात ॥ जे किरतारें जला क

(१०२)

ख्या, तस ठानी केम रहे वात ॥ क० ॥ १५ ॥
 णिका मिलवा आतुर हूइ, तेम बली धननो लोच
 जो जो एह संसारमां, नथी दीसतो लोचनो थो
 ॥ क० ॥ १६ ॥ लोच जूमो ते गुहिर महोद
 कोइक लाने पार ॥ ढाल कही तेत्रीशमी, ए
 हनविजयें सार ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

हवे ते गणिका हारिणी, आलोचे स्वयमेव ॥
 टी गुण पेटी जली, ते तेटी ततखेव ॥ १ ॥ रे चे
 सायर तटें, पटकुल ताण्यो जेण ॥ तेहने जेम ते
 जोलवी, मंदिर आणो तेण ॥ २ ॥ जो ते नाका
 कहे, तो तुं कहेजे एम ॥ अम मंदिर आव्या विन
 रे नर जाइश केम ॥ ३ ॥ मुद्रा अछोत्तर सहस
 हेमतणी अम देह ॥ अम स्वामिनी मळ्या पर्व
 जे जाणे ते करेह ॥ ४ ॥ चेटीने एम शीखवी, मूक
 तेणें विख्यात ॥ ते पण आवी पाधरी, ज्यां ठे
 मयातात ॥ ५ ॥ करी प्रणाम ऊज्जी रही, दासी करे
 रदास ॥ अहो सार्थ गणिका तिणें, मूकी ठे तुम पार
 ॥ ६ ॥ जे दिन तुमने सांजळ्या, ते दिन हूंती तेह
 मिलवा मन तरसे घणुं, निपट बंधाणो नेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

ठेढो नांजी ॥ एदेशी ॥ नमया तात ते दासी
 वयणें, घणुं अचणुं ए खेदोणो, परदारानी संगति
 निसुणी, हियडे अति शरमाणो ॥१॥ अजगी रहेने
 हारे कहेनी ठे तुं दासी, अ० ॥ हारे शी मांडी कू
 डनी फांसी ॥ अ० ॥ हारे तुं दिसती नयी विश्वासी
 अ० ॥ ए आंकणी ॥ अरे दूती किहां तुं हुंती, यह धूती
 जे आवी ॥ जारे अतूती देश जूती, चढशे जूति
 साची ॥ अ० ॥ २ ॥ अमें व्यवहारी किम परनारी,
 सेवुं जोय विचारी ॥ खारी विपथी विषय कटारी,
 मतवारी धूतारी ॥ अ० ॥ ३ ॥ अमें संतोपी तुं निज
 दारा, केम सेवुं परदारा ॥ जोगवतां निर्धारा सारा,
 एहनां फल ठे खारां ॥ अ० ॥ ४ ॥ पररामाना जे
 हने जामा, जन्म्या तेह निकामा ॥ मुख सामा जोई
 नवि पाम्या, धन्य जे एम तजे वामा ॥ अ० ॥ ५ ॥
 अमें आवक आगम जावक, नावक मिथ्या अराति ॥
 परदारा पावकमां पगलां, देतां केम बहे ठाती ॥
 अ० ॥ ६ ॥ दानवराय अटंका वंका, शूर पण धरता
 शंका ॥ दाशरथीयें देई रुंका, लंका कीधी पंका ॥
 ॥ ७ ॥ पदमोत्तर जस अविचल उत्तर, सायर दुत्तर

माहारा राज ॥ निपट न लोचनी थाउ ॥ ए आकणी ॥
 कहेजो स्वामी मया करो मोसुं, मंदिर करो गज
 गाह ॥ मा० ॥ १ ॥ तुमथी जला जला सारथवाह,
 आंगण अमचे आया ॥ मा० ॥ दीसो ठो तेहथी चतुर
 घणेरा, फोगट शी करो माया ॥ मा० ॥ २ ॥ हूकम
 अठे मूज नरवर केरो, लेउंठुं तिण दीनार ॥ मा० ॥
 नहीं तो अमारे घेर कोण आवे, अमे गणिका अव
 तार ॥ मा० ॥ ३ ॥ जो तमे माहरे गेह न आवो, तो
 किम लेउ दीनार ॥ मा० ॥ मन माने तो करजो क्रीडा,
 पण आवो एक वार ॥ मा० ॥ ४ ॥ वयणथी न होवे मेलो,
 तस धनें केम मन माने ॥ मा० ॥ रे रे दासी खासी
 माहरी, एम तुं कहेजे ठाने ॥ मा० ॥ ५ ॥ आवी दासी
 तरत उजाणी, जिहां ठे चीवरगेह ॥ मा० ॥ अहो सार
 थपति विनति मानो अमथी आणो नेह ॥ मा० ॥ ६ ॥
 मूज ठकुराणी घणुं लुब्धाणी, तुमहुंती निर्धार ॥
 मा० ॥ मंदिरसुधी तो करो करुणा, साथें लेइ दी
 नार ॥ मा० ॥ ७ ॥ वातडीए तो एम मत वाहो,
 एम केम मूके कोय ॥ मा० ॥ हे प्रिय प्रेम एम
 वनी आवे, वाते वडां नवि होय ॥ मा० ॥ ८ ॥
 जो मन माने तो तिहां रहेजो, पराणे न होवे प्री

त ॥ मा० ॥ गाम वसे नहिं जाये कण्वी, जिहां
 तिहां एह ठे रीत ॥ मा० ॥ ९ ॥ जो तुमैं नहिं आ
 बो तो तुमने, चाखवा नहिं दे राय ॥ मा० ॥ नाने
 महोटे तुमची आगल, शी कहुं वात घनाय ॥ मा०
 ॥ १० ॥ शाहें आलोचीने जोयुं, एतो गणिका जा
 ति ॥ मा० ॥ नर सुर असुर ते पार न पामे, जे ए
 हना श्रवदात ॥ मा० ॥ ११ ॥ जे कोइ नारी थकी
 हव ताणे, ते सम मूढ न कोय ॥ मा० ॥ १२ ॥ अपर वली
 तस गायुं गाये, ते पण तेहवो होय ॥ मा० ॥ १३ ॥
 करीए आपणा मननुं जाणुं, ताणीयें नहिं कोइ
 साथे ॥ मा० ॥ शुं करे कामिनी जो होय आपणुं,
 मनहुं आपणे हाये ॥ मा० ॥ १४ ॥ दासी वयें
 जनक, नमयानो, लेइ तुरत दीनार ॥ मा० ॥ आ
 व्यो दासी साथे सुंदर, गणिकाने आगार ॥ मा० ॥
 ॥ १५ ॥ गणिकायें आसन वेसण दीधुं, घणी करी
 मनुहार ॥ मा० ॥ जले तुमैं स्वामी महेल पधास्या,
 मोहोटी करी किरतार ॥ मा० ॥ १६ ॥ एवडीशी करी
 खांचा ताणी, कनडीशी महाराज ॥ मा० ॥ नृपनो
 हुकुम अने हुं चाहुं, तो तुमने शी लाज ॥ मा० ॥
 ॥ १७ ॥ साकर घोले मुखथी गणिका, सारथवाह

निहावे ॥ मा० ॥ मोहनविजये रूडी जांखी, पांत्री
शमी ए ढावे ॥ मा० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा

॥ दोहा ॥

गणिकाए मांरुया घणा, हाव जाव धरी वाच ॥
पण जोलववा शाहने, सा नवि लाजे दाव ॥ १ ॥
शाह तिहां मन दड करी, बेगो चित्र समान ॥ व
चन सुणी गणिका तणां, एकरंगे दीये कान ॥ २ ॥
जिहां शीलसन्नाह वर, तिहां कुसुमायुध बाण, कि
मपि न जोरो करिशके, मन माने तेम ताण ॥ ३ ॥
नमयातात कहे तहां, रे गणिका अवधार ॥ लट
पट जावा दे परी, ए ल्यो तुम दीनार ॥ ४ ॥ अमें
श्रावक जिन रायना, परदारा परिहार ॥ देखी पे
खी अम थकी, केम होये एह आचार ॥ ५ ॥ मान्य
कहुं तुं माहरुं, अमे आव्या आगार ॥ जहुं थयुं
तुमने मळ्या, सोप्यां तुम दीनार ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठत्रीशमी ॥

अमे महीआरु आदि जुगादि, तुं कीहांनो ठे
दाणी रे ॥ ए देशी ॥ कहे दासी हारिणी गणिका
ने, रही श्रवणमां पेसी रे ॥ एहने केरे कामिनी
रूडी, मनोहर नानडे वेशें राज ॥ १ ॥ हुं तो एह

ने मटके मोहीरे ॥ देही कुंकुमने वानं, जेही रे
 अप्सराने मान ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ नयण देइने
 घडी धातायें, कहेतां नावे लासे रे ॥ आज तो व
 धती दीठी आज्ञा, काखे कीहां ते जासे राज ॥ हुं०
 ॥ १ ॥ नागकुमारी देवकुमारी, तेम ए मानवनी कु
 मारीरे ॥ अहो ठकुराणी वाला उपरें, नाखुं तेह उ
 धारी राज ॥ हुं० ॥ २ ॥ शुं जाणुं एहनी ठे पुत्री
 किंवा एहनी नारी रे ॥ में तो जोखे जावें दीठी,
 पण नावे ते निरधारी राज ॥ हुं० ॥ ४ ॥ ते कन्या
 जेम तेम करतां, आपण मंदिरे आवे रे ॥ कल्पल
 ता सम इच्छित दाता, दीठेहीज सुहावे राज ॥ हुं०
 ॥ ५ ॥ ए हरिणाक्षी इंडु अमृतथी, नीसरी दीसे
 आखी रे ॥ जो एहमां कांइ कूडुं जाखुं, तो सरजण
 हार ठे साखी राज ॥ हुं० ॥ ६ ॥ एमही पण ए
 सारथवाहो, आपणे वश नवि होशे रे ॥ तो तमे
 कांये चूखो ठकुराणी, नारी न ल्यो कां खोंची राज
 हुं० ॥ ७ ॥ काम सरे वली मान वधे तेम, लोकें
 नवि होय हांसी रे ॥ थने वली सारथवाह न जा
 णे, तो तमने शावासी राज, ॥ हुं० ॥ ८ ॥ गणिका
 दासी वयण सुणीने, रही क्षण एक तिहां गानी रे,

मीठी मीठी वातो मांडी, शाह थकी अजिमांनी
 राज ॥ हुं० ॥ ए ॥ स्वामी किण नयरें वसो ठो, शी
 खबरो तुम केरी रे ॥ दीसो ठो दृढधर्मी सारा,
 कीर्ति तुम अजिनेरी राज ॥ हुं० ॥ १० ॥ मुझी
 केणें एह घडी ठे, कुंदन पण ठे सारो रे ॥ मणा न
 श्री कारीगरमांहे, धन्य एहनो घडनारो राज ॥
 ॥ हुं० ॥ ११ ॥ सोवनकार श्हांना मूरख, एहवी
 न घडे कोई रे ॥ काढी आलो मुऊने जोवा, तत
 दाण देश जोंई राज ॥ हुं० ॥ १२ ॥ जो कारीगर
 एहवो होये, तो एहवी घडावुं रे ॥ चोयफेर मूझिने
 चूनी, उल उले जडावुं राज ॥ हुं० ॥ १३ ॥ नमया
 तातें ते गणिकाने, दीधी मुझिका काढीरे ॥ दाण
 एक तो रसनायें वखाणी, आंगलीए करी गाढी
 राज ॥ हुं० ॥ १४ ॥ दासीने गणिकायें तेडी, ए मुझी तुं
 लेजे रे ॥ जाजे सीधी एहने केरे, तेह नारीने देजे
 राज ॥ हुं० ॥ १५ ॥ कहेजे सार्थप तुऊने तेडे, आ
 मेढी सहिनाणी रे ॥ झूलवणीमां नांखी तेहने,
 आण जे ईहां सपराणी राज ॥ हुं० ॥ १६ ॥ दासी
 प्होती केरा सांमी, कर ग्रही मूझी राखी रे ॥ ए

ठग्रीशमी ढाल सोहाती, मोहनविजयें जांखी राज॥

हुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा

॥ दोहा ॥

गणिका तो चेठी करे, मीठी मीठी बात ॥ कपट
न जाणें तेहनूं, नमयाकेरो तात ॥ १ ॥ नमया सुंदरी
नेकने, दासी आवी तेह ॥ करी प्रणाम ऊज्जी रही,
जांखे एम धरी नेह ॥ २ ॥ सारथ वाह तुमारडे,
शुं याये कहो मूज ॥ नमया कहे माहरो पिता,
ए संबंध अगुच ॥ ३ ॥ दासी कहे धन्य तुमपिता,
तुं ठे पुत्री जास ॥ उदधितणी पुत्री रमा, तेहवो
तुज आजास ॥ ४ ॥ अमघर तात तुमारडो, चेठो
मांमी गुच ॥ तिहांथी तुमने तेडवा, एम मूकी ठे
मुज ॥ ५ ॥ ते रखे जूतुं मानती, ल्यो सहीनाणी
एह ॥ तात हाथनी मुझिका, एम कही दीधी
तेह ॥ ६ ॥

॥ ढाल साडग्रीशमी ॥

सखीरी आयो वसंत अटारडो ॥ ए देशी ॥
सखीरी दासी कहे नमया जणी नमया जणी
जगो होय असूर ॥ सुगुण जनमोहना ॥ स० ॥ ता
त जोता हशे वाटडी ॥ वा० ॥ मंदिर पण ठे दूर ॥

सु० ॥ स० ॥ १ ॥ नहिं आवो हमणां तुमे ॥ ह० ॥
 तातजी करशे रीश ॥ सु० ॥ स० ॥ वीजो फेरो म
 जने ॥ मू० ॥ विशवावीश ॥ सु० ॥ स० ॥ २ ॥ अ
 म ठकुराणीने पुत्रिका ॥ पु० ॥ ठे अति माही तेह
 सु० ॥ स० ॥ तातें तस देखी करी ॥ दे० ॥ तुमने
 संजाख्यां एह ॥ सु० ॥ स० ॥ ३ ॥ तात कहे मुज
 बालिका ॥ वा० ॥ अति माही गुणवंत ॥ सु० ॥ स० ॥ अम ठ
 कुराणी पण कहे ॥ प० ॥ मुज पुत्री अति संत ॥ सु० ॥ स० ॥ ४ ॥
 पुत्री माटें परस्परें ॥ प० ॥ परठी तेणे होरु ॥ सु० ॥
 स० ॥ हूकम तेणें बीहु मेलव्यो ॥ मे० ॥ केहमां
 दीजें खोड ॥ सु० ॥ स० ॥ ५ ॥ तातें तेणे कारणें ॥
 का० ॥ मूझी दीधी मुज ॥ सु० ॥ स० ॥ तरक्षण मूकी
 तेडवा ॥ ते० ॥ अहो नमया कहुं तुज ॥ सु० ॥
 स० ॥ ६ ॥ जोउ निहाली मुद्रिका ॥ मु० ॥ ठे तुम
 तातनुं नाम ॥ सु० ॥ स० ॥ कूड अमें केम जांखीए
 जां० ॥ सोने न लागे श्याम ॥ सु० ॥ स० ॥ ७ ॥ जो
 जूठ करी त्रेवडो ॥ त्रे० ॥ तो कांइ न जेलखे एह ॥
 सु० ॥ स० ॥ कर कंकण शी आरशी ॥ आ० ॥ जोवी
 पडे ठे जेह ॥ सु० ॥ स० ॥ ८ ॥ नमया सुंदरी मुद्रि
 का ॥ मु० ॥ देखी वांच्युं नाम ॥ सु० ॥ स० ॥ तात

तथा करनी खरी ॥ क० ॥ में उषस्त्री अजिराम ॥
 सु० ॥ स० ॥ ए ॥ तात वचन केम सोपियें ॥
 सो० ॥ एम कस्यो मनथी विचार ॥ सु० ॥ स० ॥ ग
 णिका कूड न जाणियुं ॥ न० ॥ नमयायें तेणी वार
 ॥ सु० ॥ स० ॥ १० ॥ दासी साथे संचरी ॥ सं० ॥ न
 मया सुंदरी तेह ॥ सु० ॥ स० ॥ जेम कोइ नर जाणे
 नहीं ॥ जा० ॥ तिण विधे आणी गेह ॥ सु० ॥ स० ॥ ११ ॥
 बेसारी प्रवृत्त उरडे ॥ उ० ॥ नमयाने सोत्साह ॥ सु० ॥
 स० ॥ खबर करी गणिका जणी ॥ ग० ॥ दासीयें स
 मस्यामांहि ॥ सु० ॥ स० ॥ १२ ॥ नमया पासंथी
 मुद्रिका ॥ सु० ॥ दीधी करीने प्रपंच ॥ सु० ॥ स० ॥
 दीधी गणिकाने दासीयें ॥ दा० ॥ जूँ कपटीना सं
 च ॥ सु० ॥ स० ॥ १३ ॥ सोंपी नमया तातने ॥ ता०
 ॥ पाठी मुद्रिका तेह ॥ सु० ॥ स० ॥ मलशे कारी
 गर एहवो ॥ ए० ॥ तोजी मगावशुं एह ॥ सु० ॥ स०
 ॥ १४ ॥ मेरे पधारो साहिवा ॥ सा० ॥ करवो हशे
 रोजगार ॥ सु० ॥ स० ॥ राखजो अम ऊपर मया
 ॥ ऊ० ॥ सोंपो अमने दीनार ॥ सु० ॥ स० ॥ १५ ॥
 गणिका वयणें हरखियो ॥ ह० ॥ नमया केरो तात ॥
 सु० ॥ स० ॥ सूपी दीनार ऊज्यो तदा ॥ ऊ० ॥ देई

आशिष विख्यात ॥ सु० ॥ स० ॥ १५ ॥ आव्यो शा
ह उतावलो ॥ उ० ॥ मेरे थई उजमाल ॥ सु० ॥
स० ॥ ए कही साडत्रीशमी ॥ सा० ॥ मोहनविजयें
ढाल ॥ सु० ॥ स० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

आव्यो नमयानो पिता, मेरामांहि जेवार ॥ न
मया सुंदरी पुत्रिका, दीठी नहीं तेवार ॥ १ ॥ अर
ही परही अंगजा, जोइ घणुं ए तेण ॥ पण नमया
लाजे नहीं, खबर न जाणी केण ॥ २ ॥ शाह करे
आलोचना, कुण अपहरी गयो एह ॥ एम अण चिं
ति किहां गई, हूँती पुत्री जेह ॥ ३ ॥ वव्वर कूळें घर
घरे, जोई नमया तात ॥ पण नमयानी सोहणे, को
इ न जाणे वात ॥ ४ ॥ सेवकने उलंछडा, देवे नमया
तात ॥ मेराथी मुज अंगजा, किणें अपहरी कहो
वात ॥ ५ ॥ गुं जाणुं सेवक कहे, अमने न थइ व्य
क्ति ॥ मानव तो कुण अपहरे, थइ कोइ देवी शक्ति ॥ ६ ॥

॥ ढाल आडत्रीशमी ॥

फुलडी काजल सारे राज, देखो नमर नजारा
नामारे राज ॥ मृग नयणी नागरी फुली ॥ ग देशी
॥ नमया तात बिचारे राज, दण दणमें पुत्री संजा

रे राज, केस बिसारे कहो ॥ गुणवंती ॥ ए आंक
 ली ॥ कर्म कठिन धीय केरां ॥ रा० ॥ केह्वी करेने
 घेरां ॥ रा० ॥ कि० ॥ १ ॥ एक तो पीयूडे मूकी ॥
 रा० ॥ वनमाहीथी विगर सलूकी ॥ रा० कि० ॥ हुं
 तिहांथी लइ आव्यो ॥ रा० ॥ तो तेसूतो सिंह जगाव्यो
 ॥ रा० ॥ कि० ॥ २ ॥ अपहरी जे लेइ गयो कोइ
 ॥ रा० ॥ पुरमांहितो घणुंए जोइ ॥ रा० ॥ कि० ॥
 पुत्री गइ बली हासो ॥ रा० ॥ एतो कोइक हुल त
 मासो ॥ रा० ॥ कि० ॥ ३ ॥ दुःख धरतो ते व्यव
 हारी ॥ रा० ॥ तिहां तेढ्या ताम बेपारी ॥ रा० ॥
 कि० ॥ बेची करीयाणां सीधां ॥ रा० ॥ मुह माग्या
 पैसा लीधा ॥ रा० ॥ कि० ॥ ४ ॥ प्रवहण सवि स
 ज कीधां ॥ रा० ॥ सवि साथ बेसारी लीधां ॥ रा०
 ॥ कि० ॥ बढवर कूख निवारी ॥ रा० ॥ प्रवहण ते
 मेढ्यां हकारी ॥ रा० ॥ कि० ॥ ५ ॥ अनुक्रमे जरु
 अच आव्या ॥ रा० ॥ सायर तटें पोत ठीपाव्यां
 ॥ रा० ॥ कि० ॥ नृगकछमांही धर्मधारी ॥ रा० ॥
 जिनदास अठे व्यवहारी ॥ रा० ॥ कि० ॥ ६ ॥ न
 मया तातनो तेही ॥ रा० ॥ परिपूरण अठेय स
 नेही ॥ रा० ॥ कि० ॥ बाहणने आव्यां जाणी,

॥ रा० ॥ ते सांहमो आव्यो सपराणी ॥ रा० ॥ कि०
 ॥ ७ ॥ हियडे हियडुं जेत्नी ॥ रा० ॥ तीहां मि
 दिया बेहु मन मेली ॥ रा० ॥ कि० ॥ नमया तात
 उद्धासैं ॥ रा० ॥ घर तेडाव्या जिनदासैं ॥ रा० ॥
 कि० ॥ ८ ॥ सुजग रसोइ कीधी ॥ रा० ॥ जीमवा
 ने आली दीधी ॥ रा० ॥ कि० ॥ नोजन करीने उद्या
 ॥ रा० ॥ फोफल पण उपर घूट्यां ॥ रा० ॥ कि०
 ॥ ए ॥ बिहु मित्र बेठा एकांते ॥ रा० ॥ अन्योन्य
 हूआ उद्यांते ॥ रा० ॥ कीम नमया सुंदरी केरी ॥
 रा० ॥ कही वातो अति अजिनेरी ॥ रा० ॥ कि० ॥
 १० ॥ नमया पुत्री माहारी ॥ रा० ॥ अहो मित्र जत्री
 जी ताहरी ॥ रा० ॥ कि० ॥ बब्बरकूल कलोइ ॥
 रा० ॥ तिहां अपहरी लेइ गयो कोइ ॥ रा० ॥ कि०
 ॥ ११ ॥ डुंढी आपणें साथें ॥ रा० ॥ पण पुत्री न
 आवी हाथे ॥ रा० ॥ एक तिहां गणिका कहावे
 ॥ रा० ॥ मुऊ तास जरंसो आवे ॥ रा० ॥ कि० ॥ १२ ॥
 मानी ठे तास राजाए ॥ रा० ॥ होवे तो केम क
 हाये ॥ रा० ॥ कि० ॥ जो तमे तिणी पुर जावो ॥
 रा० ॥ तो मुऊ पुत्रीनी खबर लेइ आवो ॥ रा० ॥
 कि० ॥ १३ ॥ मानीश पाड तुमारो ॥ रा० ॥ इहां

कीजें काज मारो ॥ रा० ॥ कि० ॥ पुत्री दुःख के
 म सहीयें ॥ रा० ॥ अंतर गतिनी केहने कहीयें
 ॥ रा० ॥ १४ ॥ कही जिनदास सनेही ॥ रा० ॥
 अमे कारज करशुं एही ॥ रा० ॥ कि० ॥ एम शुं वे
 ण बढावो ॥ रा० ॥ फोगट शुं पाड चढावो ॥ रा० ॥
 कि० ॥ १५ ॥ जाइश बढवर कूलें ॥ रा० ॥ तिहां
 रहीश वेप अनुकूलें ॥ रा० ॥ कि० ॥ जलवी नमया
 जिहांथी ॥ रा० ॥ लेइ आवीश तेहने तिहांथी ॥ रा०
 ॥ कि० ॥ १६ ॥ जो नमया लेइ आवुं ॥ रा० ॥ तो
 मित्रनो मुजरो पावुं ॥ रा० ॥ कि० ॥ मोहने मन
 स्थिर राखी ॥ रा० ॥ आडत्रीशमी ढाल ए जांखी
 ॥ रा० ॥ कि० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

नमया तातें मित्रने, एम कही संदेश ॥ निज
 प्रवहण सज्ज कस्यां, पाम्यो आप निवेश ॥ १ ॥
 सयल कुटुंब मित्यां तिहां, नमया जनकें ताम ॥ घ
 व्वर कूलतणी कही, धीतक वातो ताम ॥ २ ॥ कहे
 कुटुंब न करो फीसी, फीकर तुमे मनमांह ॥ जखूं
 हशे मिलशे सुता, करो हेज सोठांहि ॥ ३ ॥ एह
 वे जरुयच नथरथी, पोत जरी सुविधास ॥ घव्वर

कूल दिशाजणी, चाढ्यो ते जिनदास ॥ ४ ॥ सायर
 लहर जकोलथी, चाले प्रवहण अनुकूल ॥ ते अनु
 क्रमें आवीया, तरतां बब्बर कूल ॥ ५ ॥ जिनदास
 लेई जेटणुं, जेढ्यो बब्बर राय ॥ पाम्यो मान महो
 त्सवें, तिम पंचांग पसाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल उंगणचालीशमी ॥

हरीयामन लाग्यो, ए देशी ॥ नृप आदेशें नग
 रमां, वणिज करे जिनदास रे ॥ नेही केम वीसरे ॥
 वचन संजाखुं मित्रनुं, हियडामां सुविलास रे ॥
 ने० ॥ १ ॥ सहदेवें मूऊने इहां, पुत्री जोवा काज रे
 ने० ॥ मूक्यो पोतानो गणी, हेतुज जाणी आज ॥
 ने० ॥ २ ॥ में पण मित्रने कखुं अठे, आणीश पुत्री
 तूऊरे ॥ ने० ॥ ते तोहुं झूली गयो, मांड्यो व्यापार
 अबूऊ रे ॥ ने० ॥ ३ ॥ जाणतो हशे मित्र माहरो,
 जे एह मुऊ जिनदास रे ॥ ने० ॥ बब्बरमां क
 रतो हशे, मुऊ पुत्रीनी तलास रे ॥ ने० ॥ ४ ॥ ते
 मुऊने नवि सांजरे, गाजे ठे रोहिण मांहिरे, ॥
 ने० ॥ ए मुऊने जुगतुं नहिं, केलवुं प्रपंच कांई
 रे ॥ ने० ॥ ५ ॥ जिहां मनमेळो आपणो तेहथी
 केम हुवे कूड, रे ॥ ने० ॥ लोक उखाणो एस कहे,

जिहा कूड तिहां घूड रे ॥ ने० ॥ ६ ॥ उतारं कूप
 कविचें जो सूरिजन सिरदार रे ॥ ने० ॥ नेह वि
 लुधां मानवी, ते केम करे नाकार रे ॥ ने० ॥ ७ ॥
 नेह महाधन जगतमां, जो करी जाणे कोय रे ॥
 ने० ॥ फोगटीयांनो नेहलो, निर्वाहो नवि होय
 रे ॥ ने० ॥ ८ ॥ हिये जूदा होंते जूदा, तेहथी केम
 पति आये ॥ ने० ॥ साचा स्नेहि सजन तणी, ले
 ठे लोक बलाइ रे ॥ ने० ॥ ९ ॥ शापुरुषनी प्रीतडी,
 जेहवी पहारें रेह रे ॥ ने० ॥ श्रोठा प्रीतडी जे
 हवी, पावशें जीरण गेहरे ॥ ने० ॥ १० ॥ करिय
 जरुंसो आपणो, खोले दीधुं शीपरे ॥ ने० ॥ कूड
 जो करीयें तेहथी, तो केम सहें जंगदीशरे ॥ ने०
 ॥ ११ ॥ नेह तणें वशें हलधरे, कंधे राख्यो मुकुंद
 रे ॥ ने० ॥ नाद तणे नेहकरी, हरिण पडे ठे फं
 दरे ॥ ने० ॥ १२ ॥ कहेवायें न एकना, फरीयें जे
 गेह गेह रे, ॥ ने० ॥ ते जूठा माणसथकी, केम
 निवहाये, नेह रे ॥ ने० ॥ १३ ॥ चंच पडे पीडाय
 बहु, गयणे जो उमहे नहि मेह रे, ॥ ने० ॥ गंगा
 जल नवि पीये, जूवो चातकनो नेह रे ॥ ने० ॥ १४ ॥
 जो पंकज नवि संपजे; जिहां सरवर अवतंसरे ॥

ने० ॥ अवर कुकुटनी परें, न खणे ते कहियें हंस रे
 ॥ ने० ॥ १५ ॥ तेमाटे संसारमां, नेह अनोपम वस्तु
 रे ॥ ने० ॥ जे नेही हो आपणा, अहोनिश कुशला
 अस्तु रे ॥ १६ ॥ नेहीनी जे पुत्रिका, जोउं नयर
 मजार रे ॥ ने० ॥ ढाल ए उगणचाव्हीशमी,
 कही मोहनें शिरदार रे ॥ ने० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

बब्बरकूदें घरोघरे, जोयुं ते जिनदास ॥ पण ते
 नमया सुंदरी, नावी मूज तलास ॥ १ ॥ सूरिजन
 आगल हुं खरो, केम थाईश हेव ॥ उरग ठबुं
 दरीनो इहां, न्याय मिढ्यो जगदेव ॥ २ ॥ तो पण
 उद्यम कीजीये, उद्यम वडो संसार ॥ विण धेनु
 उद्यम थकी, पय पीवे मांजार ॥ ३ ॥ ते जिनदास
 अहोनिशें, जोवे नगरागार ॥ हवे श्रोताजन सांजलो,
 नमयानो अधिकार ॥ ४ ॥ जे दिन नमयानो पिता,
 चाढ्यो आपण देश ॥ ते दिनथी हर्षित थई, ग
 णिका चित्त विशेष ॥ ५ ॥ अति धूतारी ठे हारि
 णी, चिंते चित्तमजार ॥ मुज आयत्तें ए निश्चें,
 हुइ हवे ए नार ॥ ६ ॥

॥ ढाल चालीशमी ॥

वीण मा वाईशरे, विठल वारुं तुजने ॥ ए देशी ॥
 पेखो निगुणीरे केहवुं कहेठे गणिका ॥ गंजारो
 ऊघाडी काढी, बाहिर नमया वणिका ॥ पे० ॥ ए
 आंकणी ॥ हियडाथी गाढी आलिंगी, सिंहासन वे
 साडी, हारिणीए नमयानी आगल, कारमि माया
 देखाडी ॥ पे० ॥ २ ॥ ताहरे तातें माहरे मंदिर,
 पुत्री तुजने वेची ॥ ते तुजने कांई न जणाव्युं,
 जनक वडो तुज पेची ॥ पे० ॥ ३ ॥ रे पुत्री तुं
 जोय विचारी, तात संवंध तें दीठो ॥ रे जोली
 एणे संसारे, स्वारथ सहुने मीठो ॥ पे० ॥ ४ ॥
 तुज सरखी पुत्री वेचंतां, एहवुं मन केम चाड्युं ॥
 अमे दयालु परोपकारी, मुह माग्युं धन आड्युं
 ॥ पे० ॥ ५ ॥ देख लूचाइ ताहारा तातनी, नाम
 न पूठां फेरी ॥ तातें कीधूं जहेवुं तुजने, तहेवुं न
 करे वैरी ॥ ६ ॥ एहेवो कुण ठे वेचे परघर, जे
 आपणडां ठोरु ॥ मायायें नवि ठोडे अलगां, वाठरु
 आंने ठोरु ॥ पे० ॥ ७ ॥ अमें तो तेहने घणुंण वास्यो,
 पण तेणे न कस्युं वास्युं ॥ ताहरे तातें धनने अरयें,
 कीधूं अति अविचास्युं ॥ पे० ॥ ८ ॥ निज घालक

प्रतिपालवा माटें, हरणी सिंहथी घाये ॥ तेहथी
 पण तुज तात नीपावट, घणुंय कहे शुं थाये ॥
 पे० ॥ ए ॥ एतो जलुं जे माहरे मंदिर, वेची मद
 जर माती ॥ जो बीजे वेचत तो ताहरी, कहे ने शी
 गति थाती ॥ पे० ॥ १० ॥ एहवुं जरूर पळ्युं इतुं
 केवुं, जे तुज वेची तातें ॥ हुंतो राखीश पुत्री
 करीने, माहरे तो आव्युं धातें ॥ पे० ॥ ११ ॥ तुं
 मूज पुत्री हुं तुज माता, ए सघलुं ठे ताहरुं ॥ तुं
 माहरें हुं हुं ताहरे, एहवुं मन ठे महारुं ॥ पे० ॥
 ॥ १२ ॥ माहरे तूज उपरें नथी कोई, तुं घरनी
 ठकुराणी ॥ जे तुं देश ते हुं देश, में एकतारी
 आणी ॥ पे० ॥ १३ ॥ प्राण तणी परें तुजने राखीश,
 दोहिली न करुं क्यारें ॥ साकर घोली दूध ज्युं पा
 इश, पाणी मागीश ज्यारें ॥ पे० ॥ १४ ॥ हथेलीनीं
 गायामांहे, अहोनिश राखीश तुजने ॥ जे कोइ वातें
 दुःख तुं पामे, देजे उलंजा मुजने ॥ पे० ॥ १५ ॥ दा
 सीयो ताहरी खिजमत करशे, हुकम हुकममें रहेशे ॥
 जे तुं कहीश ते निर्वहेशे सघलुं, ताहरुं खुंदुं ख
 मशे ॥ पे० ॥ १६ ॥ हुं पण हुं राजा सरखी, रखे
 कांइ प्रीठती बीजी ॥ मुज पुत्री जाणीने तुजने,

सहको करघो जीजी ॥ पे० ॥ १७ ॥ जोहुं तुजयी
 अंतर राखुं, तो परमेश्वर साखी ॥ ए चालीशमी
 ढाल सनूरी, मोहनविजयें जाखी ॥ पे० ॥ १८ ॥
 ॥ दोहा ॥

वचन सुणी गणिकातणां, नमया थइ निसनेह ॥
 चित्तयी करे विचारणा, एम शुं कहे ठे एह ॥ १ ॥
 धन शुं थोहुं ठे घरें, जे एम वेचे तात ॥ हिये
 उपावी एहवी, केम मनाये वात ॥ २ ॥ दासी मूकी
 एणीए, मूजने राखी गेह ॥ तात जणी विप्रता
 रियो, पहनुं कारण एह ॥ ३ ॥ अनुमानें जोतां
 थकां, दीसे गणिका एह ॥ मायायें करी मुज
 थकी, मांढे जूगे नेह ॥ ४ ॥ गणिकायें नमया
 जणी, लही उदासी जाम ॥ मीठे वचनें चड
 बडी, मुखयी बोले ताम ॥ ५ ॥ रे पुत्री चिंता
 तजो, हसो रमो हित आणि ॥ परिकर निकर हे
 पझिनी, पोतानो करि जाणि ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकतालीशमी ॥

देशी हमीरियानी ॥ कहे गणिका नमया जणी,
 सांजल माहरी वात ॥ सुरंगी ॥ खोटी शीकरे शो
 चना, जूंमी केहनो तात ॥ सु० ॥ १ ॥ मान वचन

तुं माहरुं, नोगव्य सुंदर नोग ॥ सु० ॥ ए टाणुं
 रखे चूकती, करीश सनेही संयोग ॥ सु० मा० ॥ १॥
 वनना कुसुमतणीपरें, जोवन एले म खोय ॥ ए अरव
 सर कुण निर्गमे, एहवो ठे. मूरख कोय ॥ सु० ॥
 मा० ॥ ३ ॥ एक जोवनने प्राहूणो, केतादिन विलं
 बाय ॥ सु० ॥ एह कपूरतणी परे, दणमें उरीजाय
 ॥ सु० ॥ मा० ॥ ४ ॥ चंपक वरणी देहडी, फरी फरी
 किहां पामीश ॥ सु० ॥ ले लाहो जोवनतणो, जो
 बुझि दे जगदीश ॥ सु० ॥ मा० ॥ ५ ॥ जोवन एह
 गया पठी, कहे मुऊने तुं शुं करीश ॥ सु० ॥ तुंतो
 मांखीनी परें, बेठी हाथ घसीश ॥ सु० ॥ मा० ॥ ६ ॥
 चतुराइ तुऊ जेहवी, तेहवोज पुरुष अमूल ॥ सु० ॥
 गणिकाकुल मारगतणां, कारज कस्य तु कबूल ॥ सु० ॥
 मा० ॥ ७ ॥ आशा अमें तुऊ ऊपरे, राखी ठे मेरु
 समान ॥ सु० ॥ आशाए इंडां अनल तणां, महोटां
 होवे निदान ॥ सु० ॥ मा० ॥ ८ ॥ आशा प्रथम
 देई करी, जे तो करे निराश ॥ सु० ॥ धिक धिक
 जीवित तेहनूं, जे नवि पूरे आश ॥ सु० ॥ मा० ॥
 ॥ ए ॥ जे अमें दीधी तुऊने, ते तो एहज माट ॥
 नाकारो जो कहिश तुं, केम पोसाशे घाट ॥ सु० ॥

मा० ॥ १० ॥ मुखने पुत्री जोजन करो, तनुने पु
 णीने पहरे ॥ सु० ॥ जाय तु रयमें बेसीने, वन उ-
 पवनने शहरे ॥ सु० ॥ मा० ॥ ११ ॥ तेस फ़सेअने
 अगरजा, तेहमां रहो गरकाव ॥ सु० ॥ नवनवरंगें
 हसो रसो, पान सोपारी चाव ॥ सु० ॥ मा० ॥ १२ ॥
 वचन सुणी गणिकातणां, घोली नमया ताम ॥ सु० ॥
 बाई तुमें अण घोल्यां रहो, ए तुमचुं नहीं काम ॥
 सु० ॥ मा० ॥ १३ ॥ हुं व्यवहारीनी पुत्रिका, तुमे
 तो गणिका निदान ॥ सु० ॥ ए अणघटतुं कां करो,
 कांश्क राखो शान ॥ सु० ॥ मा० ॥ १४ ॥ जावा
 यो जोलामणी, अमें तुज वाल गोपाल ॥ सु० ॥
 जोजुंहुं कुल साहसुं, नहितर देइश गाल ॥ सु० ॥
 मा० ॥ १५ ॥ वाड जो गलशे चीजडां, तो रखवा
 लशे कोण ॥ सु० ॥ कहिये एहबुं वरे पडे, जेबुं आ
 टे लूण ॥ सु० ॥ मा० ॥ १६ ॥ नीचे वाहनें केम च
 डे, जे चढिया सुंढाल ॥ सु० ॥ मोहनविजयें जली
 कही, एकतालीशमी ढाल ॥ सु० ॥ मा० ॥ १७ ॥
 ॥ दोहा ॥

नमयाने गणिका कहे, पुत्री निसुण जगीश ॥
 आरुं आरुं बोलतां, एम केम तुं वूटीश ॥ १ ॥ जे

केड्ये लाग्यां खरां, ते तुज तजशे केम ॥ विगर दि
 लासायें अली, अमने तुं मत ठेड ॥ १ ॥ जेह पड्युं
 मादल गले, दैवतणुं तुं जोय ॥ विणवाये केम वूटीये,
 एम जांखे सहु कोय ॥ ३ ॥ जास वशे जे को पड्या,
 ठोड्या हीज बुटाय ॥ ते जे कहे ते कीजीयें, एम
 कीधें शुं थाय ॥ ४ ॥ अंगीकार करो तुमे, आ मंदि
 र आचार ॥ जेह कहो ते जगरे, मानो एह मनुहार
 ॥ ५ ॥ नमचा तव विलखी अई, मुख मेहले निःश्वास ॥
 दुःखत्तर दाजी विरहिणी, ऐ ऐ करे विपास ॥ ६ ॥

॥ ढाल वहेंतालीशमी ॥

घेरी घेरी पण घेरी रे, मोकुं या विरहाने घेरी ॥
 ए देशी ॥ घेरी घेरी पण घेरी रे, मुने ए गणिकाए
 घेरी ॥ मु० ॥ एक तो महारे कंते मुजने, वनमां की
 धी अनेरी ॥ तास संदेशो न थाव्यो मुजने, केणे न
 कह्यो फेरी रे ॥ मु० ॥ १ ॥ मात पिता पण दूगें
 रहीयां. केही विध होशे मोरीरे ॥ मु० ॥ चूरकी नां
 खी एणे जंजेरी, केरे मृक्री चेरी रे ॥ मु० ॥ २ ॥ स
 कांड देवनी कीधी दीने, मोटी चोरी हेरी रे ॥ स
 जले कुण कहुं हुं केहने. माहग मनडा केरी रे ॥ मु०
 ॥ ३ ॥ कट्य लनाजी पहेली करीने, कीधी दीने कंथरी

रे ॥ मु० ॥ नाह वियोगे हि यढा मां हि, खटके खरी खरेरी
 रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ ए गणिकाने वंशे हुं आवी, निसरी न
 शकुं अवेरी रे ॥ मु० ॥ जेहथी शील रतन रहे माहरुं,
 केही बुझि अनेरी रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ जिहां गये रहे
 शील सलूणुं, कोण देखाडे ते शेरी रे ॥ मु० ॥ वैव
 अटारो शीयल उदालण, गणिका किहांथी उदेरी रे
 ॥ मु० ॥ ६ ॥ खारो जंनो जीम जवो दधि, शीलता
 मीठी वेरी रे ॥ मु० ॥ नमया विलपे जेम मृग विलपे,
 देखी दूर आहेरी रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ ए तो माहरुं कळुं
 न माने, मांकी वेठी वखेडी रे ॥ मु० ॥ जे कोइ
 नारी धूतारी जगमां, तेहमां एह वडेरी रे ॥ मु० ॥
 ॥ ८ ॥ जांखे नमया सांजल गणिका, मुजथी रहेजे
 परेरी रे ॥ तहारुं कीधुं तुहीज पामीश, आवीश जो
 तुं आरेरी रे ॥ ए ॥ शीलरतन राखवा कारण, नाखी
 तास नीठेरी रे ॥ मु० ॥ निसूणी गणिका घणुंए कूदी,
 कठी जेहवी वठेरी रे ॥ मु० ॥ १० ॥ बोली गणिका
 रे रे वाळा, तुं शुं अमथी जखेरी रे ॥ मु० ॥ तुं जो
 घननुं फल शुं जाणे, ठे तुं हजीअ अखेरी रे ॥ मु० ॥
 ॥ ११ ॥ फूल गुलावनी शी गति जाणे, दीठी जेणे
 कणेरी ॥ मु० ॥ दोहिली आवे तनुचतुराइ, मृदमति

जो घणैरी रे ॥ मु० ॥ १२ ॥ कूपक मेरुक सायर
 केरी, जाणे शुं ते लहेरी रे ॥ मु० ॥ देव कुसुमनो
 स्वाद शुं जाणे, चाखी जेणें वहेरी रे ॥ मु० ॥ १३ ॥
 लारु लरुावी लारुकवाही, मायें तुऊने उठेरी रे
 मु० ॥ त्यारे बोले ठे एम तुं त्रटकी, होये जीज
 ठेरी रे ॥ मु० ॥ १४ ॥ जो जो नमया बुद्धि उपा
 राखशे शील अप्रकंपी रे ॥ मु० ॥ मोहनविजयें
 ल अनोपम, बहेंतालीशमी जंपी रे ॥ मु० ॥ १५ ॥
 ॥ दोहा ॥

कहे नमया गणिका जणी, म म कर जूठी वात
 तुठ वचन केम जंपियें, केम करीयें परतात ॥ १ ॥
 तें ताहरां कीधां करम, नोगव्य तुं मतिमंद ॥ २ ॥
 बीजाने शावती, पाडे एहवे फंद ॥ ३ ॥ तीन पंचा
 ताहरे, जीवुं दीसे तुघ ॥ दीये ठे जे कारणे, ए
 खामण मुघ ॥ ४ ॥ वरसे शशी अंगारडा, पयोधि ठ
 मर्याद ॥ नासे सिंह शियालथी, सुधा निव
 स्वाद ॥ ५ ॥ जो ते सघलां नीपजे, ते सांजल अ
 ल ॥ परनरथी परवश हुई, सतियो न मूके शील ॥
 ते माटे तुऊने किशुं, कहुं घणुं हित लाय ॥ तुं र
 थकी, न गोद ॥

॥ शत्रु प्रेतालीननी ॥

हे गुरु धर्म कान लावा दे तप देही ॥ हे गुरु धर्म
गणिका लावा दे, मादरे मनेही बाहुओं गयो ठे
दूर रे ॥ मक मारो कडखाने, रुही तुं दूतर रे ॥
मुने जाया दे ॥ हुं० ॥ कां नवि जाने चूडी, कारिमो
संसार रे, रे रे तुं दाकेखाने कां दीये मार ॥ मू० ॥
हुं० ॥ १ ॥ जेहने नूदाये तेहने जांसीये एह रे,
सूणी एहरी वातडीने कंपठ देह ॥ मू० ॥ गणिकाये
घिचामु एनो सीधी नवि जोय रे, एहने देखाहुं नीति
तो यश होय ॥ मू० ॥ हुं० ॥ २ ॥ जांढनी जंस कांगे
प्रातुए तेह रे, तिन्नने पीछाविना नव ये सनेह ॥
मू० ॥ सीधी आंगलीए प्यारें, नवि नीकसे हीर रे ॥
इहां कोण ठोडावाने आवे ठे नीर ॥ मू० ॥ हुं० ॥
॥ ३ ॥ मादरे वश आवी तें किहां जाय रे, एक
चार पूहुं एहने वातडी बनाय ॥ मू० ॥ पेट पखुंसी
शाने शूख उपाय रे ॥ कहुलं महोरं जोतुं अतिमय्युं
थाय रे ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ४ ॥ जी जी करतां तुंतो थायठे शेर
रे, कांइ हठ एवढो तुं ताणे ठे फेर ॥ मू० ॥ नहिंतो हुंए
तुने चावकानी गोर रे, घाली एणी कोटडीमां कूटी
श जोर ॥ मू० ॥ हुं० ॥ ५ ॥ एहवे गणिकानी कूखें

सुंदर ठे एहवी त्रिया, तेडी आणो तेह ॥ १ ॥ हा
 रिणी सरसी जोइ ए, तो ते तेहने ठाम ॥ आपण
 तेहने राखियें, दीजे ठत्री काम ॥२॥ सजिव नृपति
 आदेशथी, आव्यो गणिका गेह ॥ दीठी नमया
 सुंदरी, मनोहर गौरी देह ॥ ३ ॥ कहे सचिव न
 मया नणी, रे सुकुविणी नार ॥ तूठो परिपूरण
 खरो, तुज ऊपर किरतार ॥ ४ ॥ वव्वरकूल नरेश
 नी, कख उलग मनरंग ॥ प्राणतणीपरें राखशे,
 रहेजो सदा अनुपंग ॥ ५ ॥ धण कण कंचन वसन
 गृह, ठे गणिकाने गेह ॥ ते सवि तुजने सोंपशे,
 मान्य वचन मुज एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल चुम्मालीशमी ॥

काली ने पीली वादली ॥ ए देशी ॥ नमया स
 चिव कल्या थकी साजनां, शोचे चित्त मजार ॥ वि
 पयातुर राजा थयो साजनां, ऐ ऐ सरजणहार ॥
 जोजो रे हवे नारी चरित्र, करशे नमया नार ॥१॥
 ए आंकणी ॥ नृप पासं लेइ जाशे ॥सा०॥ मंत्री वीश
 वा वीश ॥ राजा मुजने प्रार्थशे ॥ सा० ॥ त्वारें हुं हुं
 करीश ॥ जो० ॥ २ ॥ श्यो जोरो थव्वातणो ॥सा०॥
 शील हुं राखीश केम ॥ परवश पडीयां मानवी ॥

सा०॥ कुण विध गले नेम ॥ जो० ॥ ३ ॥ अणयोसी
 नमया रत्नी ॥ सा० ॥ जाले हो मंत्री ताम ॥ रे गुण
 यंती गोरदी ॥ सा० ॥ केस एम वेठी श्याम ॥ जो०
 ॥ ४ ॥ वेसो एणे सुखात्तने ॥ सा० ॥ सोटा म करो
 विचार ॥ राजाने आवी मजो ॥ सा०॥ रद्दो अहनिश
 दरवार ॥ जो०॥ ५ ॥ अति दृढ ताणी मंत्रीण ॥ सा०॥
 ततक्षण नमया नार, वेगडी ऊपाडीने ॥ सा०॥ सुंदर
 रथ मजार ॥ जो० ॥ ६ ॥ परवश न नमया पडी ॥
 ॥ ७ ॥ अतिही धरे मन लाज, जाणीयं पंजरमां प
 यो ॥ सा० ॥ घनवासी मृगराज ॥ जो० ॥ ८ ॥ पर
 १ मंत्र मनमें गणे, चौद पूरवनो जे सार ॥ रथ वेठी
 आवी सती, एहवे चहूटा मजार ॥ जो० ॥ ९ ॥ त
 १ तिहां शीलने राखवा ॥ सा० ॥ नमयायें कीधोवि
 वार ॥ जो ठल इहां कोइ करूं ॥ सा०॥ तो रहे शील
 उदार ॥ जो० ॥ १० ॥ दोहा ॥ बुद्धि शरीरां नीपजे, जो
 उपजे ततकाल ॥ वानर बाध विलोवियो, एकलढे
 शीयाल ॥ जो०॥ १० ॥ बुद्धिथकी मंत्रीश्वरे ॥ सा० ॥
 जोलव्यो यक्ष कमाल ॥ बुद्धि हरी कपि सोलिया ॥
 सा० ॥ एकलढे शीयाल ॥ जो०॥ ११ ॥ नमया राख
 ण शीलने ॥ सा० ॥ मंत्रीने विप्रतार ॥ रथहुंती कूदी

(१३४)

पडी, परवरि खाल मजार ॥ जो० ॥ १२ ॥ कादवथी
तनु लीपीयुं ॥ सा० ॥ देखे लोक समझ ॥ जाणीने
घहेली थइ ॥ सा० ॥ जाणे बलग्यो यह ॥ जो०
॥ १३ ॥ चीर पटोली कंचुकी ॥ सा० ॥ कीधां ते खंडो
खंड ॥ जाणीने कांश्क कहे ॥ सा० ॥ मुखथी करे आ
क्रंद ॥ जो० ॥ १४ ॥ बीहाडे लोको जणी ॥ सा० ॥ वृ
टा केश कराल ॥ क्षिण हसे क्षिणके रुवे ॥ सा० ॥
क्षणके विलोके खाल ॥ जो० ॥ १५ ॥ एम असमं
जस देखीने ॥ सा० ॥ मंत्री विनवे जूपाल, स्वामीजी
ते सुंदरी ॥ सा० ॥ थइ दीसे ठे कराल ॥ जो० ॥ १६ ॥
रूप अनोपम ठे घणुं ॥ सा० ॥ पण तस परवश देह,
ते केमही साजी हुवे ॥ सा० ॥ तो बहु उपजे स
नेह ॥ जो० ॥ १७ ॥ मंत्री वचन सूणी करी ॥ सा०
॥ आलोचे महीपाल, मोहनविजयें वर्णवी ॥ सा०
॥ चुम्मालीशमी ढाल ॥ जो० ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥
॥ दोहा ॥

महीराज मंत्री जणी, कहे सांचल्य मुज वेण ॥
नारीने साजी करे, एहवो कोइ ठे सेण ॥ १ ॥
जूपें पडह वजावियो, बचवरकूल मजार ॥ जे नमया
साजी करे, ते लहे लाख दीनार ॥ २ ॥ एहवे

કેળે બ્રાહ્મણે, પડદા ઠગ્યો તેળીવાર ॥ પહુને હું સા
 જી કરું, પહુને કિસ્યો વિચાર ॥ ૩ ॥ નૃપ મેવક બ્રા
 હ્મણ જાળી, બ્રાહ્મણો રાજા પાસ ॥ મહારાજ તે ના
 રીને, તેડાયો શ્રાવાસ ॥ ૩ ॥ નૃપે અનુચર તેડવા.
 મૂક્યા તાસ તિયાર ॥ પકડીને દરવારમાં, બ્રાહ્મણી
 નમયા નાર ॥ ૫ ॥ એક અઝોર્પી ઝરડી, ચેસાડી
 તિણ માંદિ ॥ શ્રાવ્યો બ્રાહ્મણ મંત્રવી, નમયા પાસ
 સોરતાદિ ॥ ૬ ॥ દૂર વિસડ્યાં લોકને, બ્રાહ્મણ પૂરી
 છાર ॥ નમયાને સાજી કરે, જોજો મૂઢ ગમાર ॥ ૭ ॥

॥ દાલ પિસ્તાલીશમી ॥

સાહેવા મોતીડોને હમારો જીવનાં મોતી ॥
 ૫ દેશી ॥ બ્રાહ્મણ જોલો ખેદ ન લેહેવે, નમયા શ્રા
 ગલ ધૂપ લેહેવે ॥ નર્મદા નવરંગી, સલ્લુણી શીલ
 સુગ્રસંગી ॥ મંત્ર જાળીને કજળી નાલે, સતી શિ
 રોમણિ સવે સાંલે ॥ નર્મદા નવરંગી ॥ ૧ ॥ સુંદરી
 જાણે બ્રાહ્મણ જોલો, ફોકટ ડ્યો માંડ્યો ઠે ૫ રોલોં
 ॥ ૧ ॥ જેમ જેમ બ્રાહ્મણ ઝંજે દૂણે, તેમ તેમ સા ઝત્ત
 માંગ ધધૂણે ॥ ૧ ॥ ૨ ॥ પહુવે નમયા બુદ્ધિ ઝપાવે,
 કાઢીવંત બ્રાહ્મણ પરધાવે ॥ ૧ ॥ વીહીનો વાઢવ કઠી
 જાગ્યો, કાશ્ક પહેલું કાશ્ક નાગો ॥ ૧ ॥ ૩ ॥ છાર

(१३६)

उघाडी ब्राह्मण दोड्यो, जाणीये वालीथी रेवत
 ओड्यो ॥ न० ॥ आगलें मंत्रवी पूंठल नमया, चहु
 टा लगे एम करतां तेसुं गया ॥ न० ॥ ४ ॥ लोके
 तेह ब्राह्मण जगाख्यो, जूज मंत्रवादीए मंत्र हका
 ख्यो ॥ न० ॥ नमया जिन गुण कंठे गाये, जाणीये
 सुकंठे कोइक मोरली वाये ॥ ५ ॥ वव्वर चहूटे न
 मे थइ धीठी, एहवे जिनदासें ते दीठी ॥ न० ॥
 पुरजन अलगा करीने पूठे, कहे सुंदरी कारण एह
 शुं ठे ॥ न० ॥ ६ ॥ जिनना गुण तुं गाय ठे रूढी,
 तो केम एम पुरमें जमे जूकी ॥ न० ॥ वाहेर एहवी
 अंतर माहि, तो एम लोक कां मूक्यां वाही ॥ न० ॥
 ७ ॥ दीसे श्रावक कुलनी जाइ, साच कहो मुज आ
 गल वाइ ॥ न० ॥ ठे कोण तुं पुत्री ठे केहनी, जाणुं
 हुं तुं ठे रे जेहनी ॥ न० ॥ ८ ॥ हुं पण श्रावक तुं सू
 ण वहेनी, मूज आगल तु साचुं कहेनी ॥ न० ॥ कहे
 नमया हलूए शुं फेरी, ए शी वेला पूठ्या केरी ॥
 न० ॥ ९ ॥ जो तु साचोठे जिननो पंति, तो मुज पूठ
 जे कहे शुं एकंति ॥ न० ॥ जे अवसर प्रीठे ते माख्यो,
 जे नवि जाणे ते फोकट वाख्यो ॥ न० ॥ १० ॥ तव
 जिनदास ठानो थइ रहीयो, नमया जेद न कोइने

(१३७)

कहियो ॥ नमया पुंन जमे निशदीदे, पण नवि
 पोलावे करि जीदे ॥ ११ ॥ नमया जमे पुरमांहे
 एकाकी, जाणीचे परम महारस नाकी ॥ न० ॥ रा
 जा केह उपाय करावे, पण नमयाने खेले नावे ॥
 न० ॥ १२ ॥ आणत मूकने कोण गवाडे, जाणीने
 उंचे तेने कोण जगाडे ॥ न० ॥ गहवे कौमुदी म
 होतसव आचे, पुर जन सघला वनमां जावे ॥ न० ॥
 १३ ॥ नमया पण जिनवरने गेहं, अनी स्तुति करे
 पूरण नेहं ॥ न० ॥ पुंनसे पण जिनदास आव्यो, नम
 यायी धर्म सनेह उपाव्यो ॥ न० ॥ १४ ॥ नमया आखुं
 पाहुं जोइ, जिनदास हूंती घातें हूइ ॥ न० ॥ हुं
 वर्धमान नयरनी वासी, माहरो जनक सहदेव वि
 सासी ॥ न० ॥ १५ ॥ परणी मूजने सकोमे नाहे,
 पण ते मूकी गयो वनमांहे ॥ न० ॥ तिहां सुज
 तात मळ्यो अणजाणी, तिहांथी इहां इण पुरमांहे
 आणी ॥ न० ॥ १६ ॥ उलवी गणिकाए मूजने राखी,
 राखुं शील एम करी सुसाखी ॥ न० ॥ पिस्तालीशमी
 ढाल सवाइ, सुंदर मोहनविजयें गाइ ॥ न० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

नमयाने जिनदास कहे, हुं पण जाखुं सच ॥

पुत्री हूं जिनदास अबुं, नयर जिहां जरुअच्च ॥१॥
 ताहरे तातें मूजने, कही तहारी सवि वात ॥ हूं उं
 नेही तेहनो, मध्यंतर विख्यात ॥ २ ॥ तुजने जोवा
 कारणें, हूं इहां आव्यो एम ॥ में पण तुज राखी
 गुप्त करी, कहो प्रगट हुइ केम ॥ ३ ॥ हवे तुं मु
 जने मली, न धरिश केहनी वीक ॥ तुं मत जाणे
 एकली, तुं ठे मूज नजीक ॥ ४ ॥ तुं ठे पुत्री मुज
 तणी, मुजथी म करीश लाज ॥ जेम तेम करी संगे
 करिश, जो करशे जिनराज ॥ ५ ॥ एम कही
 जिनदास ते, आव्यो तुरत वखार ॥ दाम सयल
 गांठे करी, बाहण कस्यां तैयार ॥ ६ ॥

॥ ढाल वेंतालीशमी ॥

जांजरीया मुनिवरनी देशी ॥ राजायें तव सांज
 द्युं जी, प्रवहण सजे जिनदास ॥ सेवक मूकी तेह
 ने जी, तेडाव्यो निज पास ॥ १ ॥ गुणमणि गोरडी
 नमया सुंदरी नारी, ए आंकणी ॥ कहे जिनदास
 नरेसरने जी, फरमावो महाराज ॥ केम मुजने ते
 डावियो जी, सेवक मूकी आज ॥ गुण ॥ २ ॥ कहे
 नृप कारज माहरं जी, सांजली करजे तुं एक ॥ इहां
 एक नमया सुंदरी जी, ते अति ठे निर्विवेक ॥ गुण ॥

॥ ३ ॥ जोहटे गल्लीयें चाचरें जी, ते अति करे तो
 फान ॥ बीहाडी बीहती नची जी, फरती करती
 तोफान ॥ गु० ॥ ४ ॥ नयर कसुं इण नारीयें जी,
 वानर वनह समान ॥ कोइ थ्याडो नधि उतरे जी, ए
 नमयाहो तान ॥ गु० ॥ ५ ॥ ते माटे तुमं एहने जी,
 घाली पोतमजार ॥ कोइ परदेशे मूकजो जी,
 सापण परें निरधार ॥ गु० ॥ ६ ॥ ते परदेशी प्राहु
 णी जी, थइ बली एहचे वेश ॥ एहनी कुंण करे
 चाकरी जी, छेइ चालो परदेश ॥ गु० ॥ ७ ॥ कहे
 जिनदास हसी करी जी, वारु जी महाराज ॥ परवश
 नमया नारीने जी, प्रवहण ठावुं आज ॥ गु० ॥ ८ ॥
 करी प्रणाम नररायने जी, जळ्यो ते जिनदास ॥
 धसमसतो हेजे जख्यो जी, आव्यो नर्मदा पास ॥
 ॥ ९ ॥ जळ्य पुत्री मुंज प्रवहणे जी, आवी वेसो
 हेव ॥ नमया निसुणी दोडती जी, जइ वेठी तत
 खेव ॥ गु० ॥ १० ॥ नवरावी नमया जणी जी, प्रग
 व्हुं रुप यल ॥ जेम कचरो धोया पठी जी, जलहले
 जेहवुं रल ॥ गु० ॥ ११ ॥ वेसाडी महोत्सवें जी,
 पेहराव्या शणगार ॥ मुंहगा जांड तणी परें जी,
 राखी तेणीवार ॥ १२ ॥ प्रवहण ताम हंकारियांजी,

(280)

सयल मनोरथ सिद्ध ॥ नर्मदापुरवर आवीयां जी
जीतना जंगी दीध ॥ गु० ॥ १३ ॥ उतस्यां प्रवहण
थकी जी, नमयाने ससनेह ॥ अति उत्सव आळ
वरे जी, आणी तातने गेह ॥ गु० ॥ १४ ॥ नमय
देखी तातने जी, उलटियो उठरंग ॥ सयल कुटु
म्बतणां तिहांजी, हरख्यां अंगोअंग ॥ गु० ॥ १५ ॥
हेज तणां आंसु ऊरे जी, अमीये उठ्या मेह ॥ न
मया आनंदशुं वसे जी, निज माताने गेह ॥ गु० ॥
॥ १६ ॥ हसे रमे क्रीडा करे जी, टाढ्यो दुःख जं-
जाल ॥ मोहनविजयें वर्णवीजी, वेंतालीशमी ढाल ॥
गु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

नमया तात जणी तिहां, सोंपीने जिनदास ॥
चाढ्यो तिहांथी अनुक्रमे, आढ्यो निज आवास ॥
॥ १ ॥ नमया ताततणे घरे, रद्दे सदा मनरंग ॥ स
हीउंशुं क्रीडा करे, निर्विकार निःशंक ॥ साधु
अवज्ञाथी झणे, केतां सहियां दुःख ॥ पण एक जी
ल सहायत्री, पुण्हे पामी सुख ॥ ३ ॥ तात कहे
नमया जणी, रे पुत्री तुज कंत ॥ कहेतो तेडावुं

रही। अणुश्रीश्री नाम ॥ नाम मुक्त मन भक्तना. श्री-
पादुं जिनधाम ॥ ५ ॥ अति उत्तम उत्तम भुक्तना,
जिन भुक्ति नम भक्त ॥ नमया नित्य पूजा रति. ना
जा भक्ति भक्त ॥ ६ ॥

॥ दास सुदनालीनमी ॥

कानुदो नो धेय वताई काशिंदीने कांवे ॥ १ ॥
देदी ॥ वर्षमानपुर परिसरमांदि. गह्वे सद्गुरु
आद्या ॥ पंचाचार विचार पूग, सद्गुरुने मनना
द्या ॥ १ ॥ नमया तान कुरुष मंघारें, गुरु घरणां
बुज जेठ्यां ॥ जेहना दरिमाण वीठा हूँती, जय
जय पातक मेठ्यां, ॥ २ ॥ भगोशीप सूरेश्वर जाणे,
सद्गुरु आगल चेठां ॥ गुरु उपदेश तणा मंघिरमां,
जवियण हेते पेठां ॥ ३ ॥ भगोचम फीजे रे प्राणी,
सुणीए जिनवर पाणी ॥ अगिय समाणी सद्गुरु
शिष्टा, धारीजें हित आणी ॥ ४ ॥ जाणेठे ए
जीय विचारो, ठे सपसुं ए मोरुं ॥ पण अच्यंतर नि-
रखी जोतां, शुं देखे ठे तोरुं ॥ ५ ॥ तात जातने
मात सुता पति, ठे विपरीत सगाइ ॥ पण अंतर
मेही मदमातो, तेणे रखो खयसाइ ॥ ६ ॥ पोतानो करी
गणीयें जेहने, ते होवे साहमो वेरी ॥ ठे संसार

(१४२)

तणी गति एहवी, वली गति कर्मह केरी ॥ ७
 काची काच घटी समकाया, कूडी शी तस माया
 पंथीपरें विसामो जगमें, कुण दुर्वल कुण राया
 ॥ ८ ॥ ठे संसार विचारी जोतां, वाजीगरनी वाज
 द्वाणजंगुर अनित्य पदारथ, तो पण होवे राजी ॥ ९ ॥
 जेम वंध्याए सुहणे दीगो, जाणे सुत मुज आयो ।
 दीधुं नाम विश्वंजर एहनं, हालरुए हुलरायो ॥ १० ॥
 जव सा जागी रोवा लागी, किहां गयो में दीगो ।
 ते जेम खोटुं तेम जग खोटो, पण विषया रस
 मीगो ॥ ११ ॥ इंद्र जाल विद्या रमनारा, रवि सेवक
 थइ फूजे ॥ अंगकरंग वणावण वीरुआ, जाण तो
 साचुं वूजे ॥ १२ ॥ नारी पति साथे पावकमां, पेसी
 वली सती थाये ॥ ए कूडुं तो नहीं केम साचुं, करीने
 कोइची गहाये ॥ १३ ॥ पाणीना पपोंटा जेहवी,
 जेम पाणीमांहे पतासो ॥ जेम काचो घट नीरें न
 रियो, तेवो देह तमासो ॥ १४ ॥ समकित त्रिण ए
 जीव विचारो, दोडे ठे हा हुंतो ॥ एणे एकेही
 नवि मूक्यो, एके नाम अद्वृतो ॥ १५ ॥ करणे धर्म
 ते सुखियां आशे, दीधो एम उपदेश ॥ रोमांचित

॥ स० ॥ १० ॥ तब सा देवी मुनि मुख पेखी, चिते केम
नवि कंये हे ॥ स० ॥ एम पराजत्रिये ठे तो पण, कडतुं
ब्रयण न जंये हे ॥ स० ॥ ११ ॥ धन्य धन्य एहने ए
हवी धीरता, सा पूठे कर जोडी हे ॥ स० ॥ कुंण तुं खा
मी इहां केम ऊजो, कहो मुनि आमलो ठोडी हे ॥
स० ॥ १२ ॥ कहे मुनि अमें साधु जिणंदना, पंच म
हावतधारी हे ॥ स० ॥ ध्यान धरी ऊजा तुं सुंदर,
निरखी जूमिका सारी हे ॥ १३ ॥ देवी कहे अहो
साहु शिरोमणि, खमजो मुज अपराध हे ॥ स० ॥
में तुमने एहवा नवि जाण्या, अयुद्धि जेम अगाध
हे ॥ स० ॥ १४ ॥ मुनि कहे अमने क्रोध न होवे,
खंति तणातुं अज्यासी हे ॥ स० ॥ एश्ये लेशे सां
जद्वुं नरगें, जे जीव सहे नरगावासी हे ॥ स० ॥
१५ ॥ नेही निस्नेही विहु ठे सरीखा, अमें लेखवीयें
एम हे ॥ स० ॥ जे जेहवुं करशे तेहवुं ते लहेशे, प
ण अमे कोपुं केम हे ॥ स० ॥ १६ ॥ नमया देवी सु
प्रसन्न अइने, सांजली वचन रसाल हे ॥ स० ॥ मो
हनविजयें मीठी चांखी, अडताशमी ढाल हे ॥
स० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

(१४६)

॥ दोहा ॥

नमया देवी आगले, कहे तपोधन ताम ॥ प्रा
णीने नवि पीडीये, अहो सूरि विण काम ॥ १ ॥
दया सुधा कुंझी अठे, जगमांहि निःशंक ॥ तिहां म
ज्जन करतां मिटे, कढमष तणूं कलंक ॥ २ ॥ काम
डुघा सम ए दया, इच्छित सुख दातार ॥ सकल ध
र्म अग्रेसरी, जांखे जगदाधार ॥ ३ ॥ दया विहूणा
बापडा, चउ गइ मांहे नमंत ॥ दया धारि शिव
नारिथी, अहोनिशि लील करंत ॥ ४ ॥ जे निर्दय
नितुर निगुण, ते केम लहेशे ठाण ॥ केम जलथी
आवे तरी, अति जंचो पापाण ॥ ५ ॥ सदयी जे
वि नीचे गई, पामे पण शिव होय ॥ जारें बूडे
लुंविका, पण आवे तरि सोय ॥ ६ ॥

॥ ढाल उगणपचासमी ॥

मागे महिडारो दांण, धूतारडो मागे महिडारो
दांण ॥ ए देशी ॥ सुंदर दे उपदेश, रे सुनीश्वर
सुंदर दे उपदेश ॥ सुललित मीठी वाणी रे, जयं
कर टालें डुरित कलेश ॥ जीव सयलनो सारिखो
रे, कीडी तेम मातंग ॥ थोडे वणें पुदगळें थयुं,
इहां नाहनुं मोडुं अंग रे ॥ सु० ॥ १ ॥ आलया

हुंती उरडे रे, उरडाहुंती गेह ॥ श्यत्तावधिस्र अ
 जुआलडुं, पण दीपक तेहनो तेह ॥ सुं० ॥ २ ॥ पूरा
 ए सहेजें गले रे, एतो पुजल धर्म ॥ पण जो ह
 णीए हाथथी, ते तो चांधे निकाचित कर्म रे ॥
 सुं० ॥ ३ ॥ जोगद विहु इंडीतणा, एम जांखे जि
 नराय ॥ डव्येंड्रिया, जावेंड्रिया, बली डव्यथी
 जेद वे थाय रे ॥ सुं० ॥ ४ ॥ जावेंड्रिया वे जेद
 थी, लब्धि तथा उपयोग ॥ लब्धि कहीं तैहने,
 जे होये आचरण वियोग रे ॥ सुं० ॥ ५ ॥ उपयो
 गथी जावेंड्रिया रे, एगंदियादिक जीव ॥ पंच
 विषय तजतपणे, ते अनुजवे अतुल आ जीव रे
 ॥ सुं० ॥ ६ ॥ जेम कन्या चूपण सजी रे, तुरग प्रति
 आरूढ ॥ वदन जरी तांबूलथी, सा संचरी होय
 अमूढ ॥ सुं० ॥ ७ ॥ आवे जिहां कूपक जस्यो रे,
 पारदनो द्युतिवंत ॥ तस उपकंठे ऊनी रहे, मुख
 मधुरो शब्द कहंत ॥ सुं० ॥ ८ ॥ शब्द सुणी क
 न्या जणी रे, ग्रहवाने रसराय ॥ दोडे उपांग विना
 तिहां, एम उपयोग इंड्रिय कहाय रे ॥ सुं० ॥ ९ ॥
 बली वकुलादिक वृक्षने रे, सिंचे गंगातोय ॥ पण
 मदिरा सिच्या विना, तस कुसुम कुरंव न होय

सुं० ॥ १० ॥ एकेंद्रिय उपयोगथी रे, जाणजो सु
 ख दुःख एम ॥ जास करण वधतां हूइ, तेह जा
 णे नहिं कहो केम रे ॥ सुं० ॥ ११ ॥ मनमें करुणा
 राखियें रे, सेवीजें मुनिलोय ॥ चिंतामणि सेवीजे
 तो, अर्थिने सुप्रसन्न होय ॥ सुं० ॥ १२ ॥ चोथुं
 शौच दया तणुं रे, सहु कोय पूरे साख ॥ ते माटे
 कहुं तुं सूरि, मनमांहे दया तुं राख रे ॥ सुं० ॥
 १३ ॥ अमे उपशम संयम धरु रे, क्रोध न करुं ति
 लमात्र ॥ क्रोधी क्रोध करंतडां, वणसाडे प्रीतिनुं
 पात्र रे ॥ सुं० ॥ १४ ॥ क्रोध शमे धरतां क्षमा रे,
 खंतें क्रोध न थाय ॥ तृण विण मंरुलें जइ पड्यो,
 पण आफूरडो अग्नि जंलाय रे ॥ सुं० ॥ १५ ॥ नम
 या देवी मुनितणा रे, ललि ललि प्रणमे पाय ॥ अ
 हो तपसी कीजें जलो, मुज ऊपर कोय पसाय रे
 ॥ सुं० ॥ १६ ॥ सोपी समकित वासना रे, देवी
 जणी हित लाय ॥ ढाल जंगणपच्चासमी, कही
 मोहनविजयें बनाय रे ॥ सुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा. ॥

॥ दोहा ॥

सा देवी उपदेशथी, अतिही थइ प्रवीण ॥ सा
 धु अवज्ञाथी कहो, शुं शुं होरो प्रदीण ॥ १ ॥ दे

बी साधु पराजवें, निर्धन निगुण सारोग ॥ इह जव
 परजव ते लहे, बाह्यातणो वियोग ॥ २ ॥ सा
 धु अवज्ञा फल सुणी, कंपी सुरी अतीव ॥ पातक
 ए विण जोगव्यां, केम दूटशे जीव ॥ ३ ॥ सा न
 मया देवी चवि, मणुअ लोग उपन्न ॥ नामे नमया
 सुंदरी, महासती धन्य धन्य ॥ ४ ॥ पूर्व कर्म थ
 की एणें, पाम्यो कंत वियोग ॥ विकल थई वन
 वन जमे, पुनरपि थई अशोग ॥ ५ ॥ नमया पूरव
 जव सुणी, थइ मूढांगत एम ॥ दीगो पूरव जव ज
 लो, सुगुरु जांख्यो जेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल पचासमी ॥

कान्हजी मेहलोने कांवली रे ॥ ए देशी ॥ नम
 या आवी मंदिरें रे, मुनिनी सुणी वाणी ॥ मनथी
 मांझी विचारणा रे, जो जो कर्म कहाणी ॥ १ ॥ हुं
 यखिहारी सुगुरुनी रे ॥ जेह जन दरिसण पामे, रहे
 अलग संसारथी रे ॥ विषय जावने सामे ॥ हुं ॥
 ॥ २ ॥ सदन संबंधि सहोदरा रे, तेहथी खोटी शी
 माया ॥ स्वारथनां सहु को सगां रे, नवि कोइ एना
 कहेवाया ॥ हुं ॥ ३ ॥ बाह्याहूँती बाह्योरे, तेजो
 माहरो न हुचो ॥ बीजो तो कोण होयशेरे, कर्मनी

(१५०)

गति ए जुवो ॥ हुं० ॥ ४ ॥ दावानल जेम पावो
 रे, एह संसार असारो ॥ अलगो रहे ते जगो
 नहिं तो नहिं कोइ आरो ॥ हुं० ॥ ५ ॥ एहमां जो
 संजम आदरुं रे, खरुं एह ठे जोतानुं ॥ आग व
 लंतें कुंपडे रे, निकट्युं ते पोतानुं ॥ हुं० ॥ ६ ॥ ता
 तने नमया विनवे रे, यो मुऊने आदेश ॥ जो अनु
 मति होय तुम तणी रे, तो ग्रहुं मुनिनो वेश ॥ हुं० ॥
 ॥ ७ ॥ तृप्त थइ नव जोगवी रे, नथी हुं आणतुति ॥
 पामि परीक्षा महु तणी रे, एम वचनं प्रीयवती ॥
 हुं० ॥ ८ ॥ तात कहे नमया तणी रे, उयां ठे आवसर
 ताहरो ॥ जेह तुं संयम आदो रे, मोह गुनीने मा
 हरो ॥ हुं० ॥ ९ ॥ संयम ठे अनि संझिनां रे,
 नथी खेल हांनीनो ॥ जेम वेगा मणिवा रे, जेम अ
 तुल खजानो ॥ हुं० ॥ १० ॥ कोइ दाने मोषणे रे,
 लोहचणा चावे ॥ संयम वेहु कवच तिन्या रे, तो
 सो कोने जावे ॥ हुं० ॥ ११ ॥ कुंठे नणि वानुं दो
 तणी रे, जरवी आनवी वाच ॥ कोरातुं युवाणि
 तणा रे, मुलें वाचको दाथ ॥ १२ ॥ १३ ॥ नदानी
 धात उम रे, दोन कही सोप चले ॥ विनोप
 वनमन तणी रे, वंशु नर दिन जाये रे ॥

ए जेम सधसुं दोहियुं रे, तेम संजम ठे तेह्यो ॥
 वेठां वेठां उपन्यो रे, केम त्रेराम्य एह्यो ॥ हुं० ॥ १४ ॥
 ग्रीष्म शत्रुने तावडे रे, अणुवाणे पगे फिरशो ॥ काय
 सुकोमल एह्यो रे, केम गोचरी करशो ॥ हुं० ॥ १५ ॥
 घाघीश परिसह आकरा रे, ते केम करी सहेशो ॥
 नार महाव्रत पांचनो रे, केही चिगें वहेशो ॥ हुं० ॥
 ॥ १६ ॥ योग युक्तिनी योजना रे, योगेश्वरें तेने
 जाणी ॥ मोहनधिजयें पचासमी रे, वारु डाल व
 खाणी ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्वे गाथा ॥

॥ दोहा ॥

रण रसिया रणमंडलें, पाठा न दिये पाय ॥ नि
 रति संयम पालवा, हाम तेणे न घलाय ॥ १ ॥ संयम
 तो सुरगिरि शिखर, उंचो अपरंपार ॥ तिहांथकी
 जे कोइ लडयड्या, जूला जमे संसार ॥ २ ॥ मटक
 विरागी होयतां, संयम तो न पलाय ॥ बाजीगरना
 नृपतिसम, राज्य कितो निवहाय ॥ ३ ॥ संयम सोहिलो
 जो हुवे, तो सहु पाले एम ॥ तरुण जाव संयम
 पणे, संयम ग्रहशो केम ॥ ४ ॥ बोली नमया सुं
 दरी, अतिलूखो परिणाम ॥ संयम लेतां वारीयें
 ए नहिं उत्तम काम ॥ ५ ॥ बालक बीहाव्यो २

(१५२)

अज्ञाने करी एम ॥ पण संयम रसलालची, वचने
वीहे केम ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकावनमी ॥

चंदनरी कटकी जळी ॥ ए देशी ॥ संसारनां
सुख दाखवी, शुं जोलावो ठो तात, मनडुं हो रा
ज, सुगुण संयम पर माहरुं ॥ मूरखनुं हित कां
करो, किजे पंडित बोल ॥ म० ॥ सु० ॥ १ ॥ रोगी
कडवे औषधें, निश्चें होय नीरोग ॥ म० ॥ पण मीठा
आहारथी, केम नीरोगनो योग ॥ म० ॥ सु० ॥
॥ २ ॥ कर्मतणो रोग टालवा, संयम औषध जेम ॥
म० ॥ पण मीठो नाकारडो, करमनें कहीयें केम ॥
म० ॥ सु० ॥ ३ ॥ चाले जे बुद्धि पारकी, ते सम
मूढ न कोय ॥ म० ॥ करीयें जे मन साखि द्ये, तो
तो मनवांठित होय ॥ म० ॥ सु० ॥ ४ ॥ हुं संयम
अरथी थइ, लेइश संयम जार ॥ म० ॥ तुम वचनें
चालुं हवे, तो कुण होय आधार ॥ म० ॥ सु० ॥
॥ ५ ॥ तात आगळ नमया कहे, श्लोक अनुपम
एम ॥ म० ॥ चारित्र्यथी राची थकी, आणी परम
विवेक ॥ म० ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्वातत्वविचाराय,
स्वैव बुद्धिःक्षमा नृणां ॥ परोपदेशो विफलो, यथाऽ

सौधनदत्तवत् ॥ १ ॥ पूर्वढाख ॥ तात कहे नमया
 जणी, ते कुंण हतो धनदत्त ॥ म० ॥ कहे मूजने
 समजाववा, एम कहे उत्सुत्त ॥ म० ॥ सु० ॥ ३ ॥
 खोडुं जाखुं केम पिता, साचो ठे तेह संबंध ॥ म० ॥
 तात आगल नमया कहे, धनदत्तनो संबंध ॥ म० ॥
 सु० ॥ ७ ॥ नयर विशाखा सुंदरुं, तिहां वसतो,
 धनदत्त ॥ म० ॥ लढी परिगल मंदिरें, यौवन वय
 उन्मत्त ॥ म० ॥ सु० ॥ ८ ॥ तात जरातुर तेहनो,
 अवयव थयो घलहीन ॥ म० ॥ उपनी मस्तक वे
 दना, तेणें तेह जाखे दीन ॥ म० ॥ सु० ॥ १० ॥
 तेज्यो तेणे धनदत्तने, वेसाड्यो निज पास ॥ म० ॥
 दुःख निवेद्युं पुत्रने, सुतं सुणि करिय विखास ॥
 म० ॥ सु० ॥ ११ ॥ तात जरातुर तरफडे, पण शाता
 नवि पामंत ॥ म० ॥ धनदत्त तात दुःख देखीने,
 गदगद कंठे कहंत ॥ म० ॥ सु० ॥ १२ ॥ रेरे तात
 तुमारडी, केही अवस्था एह ॥ म० ॥ जे कांश् मन
 डांमं हुवे, कहो तेम करीयें तेह ॥ म० ॥ सु० ॥
 ॥ १३ ॥ कांश् एम दुःख जोगवो, कहो जे हूश्
 वात ॥ म० ॥ वचन सुणी धनदत्तनां, मंद खरें
 कहे ॥ म० ॥ सु० ॥ १४ ॥ रे सुत में धन

(१५४)

लव्युं, ते करी कूड प्रपंच ॥ म० ॥ लढी ठे पापानु
बंधनी, एहमां नहीं खलखंच ॥ म० ॥ सु० ॥ १५ ॥
में लढी नवि वावरी, सातें क्षेत्र मजार ॥ म० ॥
ते लढी शा कामनी, जो नवि हुवे उपगार ॥ म० ॥
सु० ॥ १६ ॥ विलसी हिज लढी नली, जाणे बाल
गोपाल ॥ म० ॥ मोहनविजयें वर्णवी, एकावनमी
ढाल ॥ म० ॥ सु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

बोली जूठां मोटकां, में ए मेढ्या दाम ॥ पण ए
साथे कोझने, नवि आया विरजाम ॥ १ ॥ सोवन
रुंगरियो करी, लोत्रीजनें अनंत ॥ पण एक कटको
हेमनो, लेश न गयो कोझ संत ॥ २ ॥ कूपक जलने
द्रव्य ए, नित नित जेम ववराय ॥ तेम तेम बिहु
खूटे नहीं, शास्त्रें एम कहाय ॥ ३ ॥ ते कारण अं
गज तमे, धन जे आपणे गेह ॥ सुकृतने वासैं
सदा, वावरजो धरि नेह ॥ ४ ॥ जो धन वावरशो
तमे, तो गति लहेशे जीव ॥ नहीं तो तुमने सांज
लो, परितापीश सदैव ॥ ५ ॥ धनदत्त नाम कहे
पिता, मनमां हुउं प्रसन्न ॥ धर्म ठाम तुम मेलवुं, वा
वरशुं ए धन्न ॥ ६ ॥

॥ लाख बावनमी ॥

केसर वरणो हो काढी कसुंवा माहूरा लाख ॥
 ए देशी ॥ सुतने वयणे हो जनक प्रसन्नो, माहूरा
 लाख ॥ ते सुरलोकें हो तुरत उपन्नो ॥ माहूरा लाख ॥
 कांति अनोपम हो सुरपुर जूपण ॥ मा० ॥ निर्मल
 देहीहो, नहीं को झूपण ॥ मा० ॥ १ ॥ धनदत्त हि
 यडे हो, ताम विचारे ॥ मा० ॥ कोइ गति तातें
 हो, कृत स्वीकारे ॥ मा० ॥ जगस्थिति दीसे हो, अ
 रघटमाला ॥ मा० ॥ उपजे विणसे हो, वस्तु विशा-
 ला ॥ मा० ॥ २ ॥ पण मुज तातनुं हो, विण संजा
 ल्युं ॥ मा० ॥ दान प्रचारुं हो, कुल अजुवाहुं ॥ मा० ॥
 जे गयो परघर हो, फेर न आवे ॥ मा० ॥ धनदत्त
 मनहुं हो, एम समजावे ॥ मा० ॥ ३ ॥ अवनित
 लमांहे हो, जे धन हुंतु ॥ मा० ॥ एणे वाहिर हो,
 कीधुं अतुं तुं ॥ मा० ॥ शत्रुकारें हो, ते धन खरचे
 मा० ॥ उलट अधिको हो, पण नवि विरचे ॥ मा० ॥
 ॥ ४ ॥ साते क्षेत्रे हो, अति धन वावे ॥ मा० ॥
 पूर्ण कमाणी हो, सबल उपावे ॥ मा० ॥ तेणे ना
 कारो हो, मुखर्षी न साख्यो ॥ मा० ॥ कृपणपणाने
 हो, दूर निवाख्यो ॥ मा० ॥ ५ ॥ वेहेंता जलधि हो,

(१५६)

ये बेहु सरीखो ॥ मा० ॥ आवे ते कनेहो, अर्थी आ
 कष्यो ॥ मा० ॥ प्राप्ति जेहवी हो, तेहवुं पामे ॥ मा० ॥
 पण नवि वारे हो, तेवहु आमे ॥ मा० ॥ ६ ॥ कीर्ति
 प्रसरी हो, धनदत्त केरी ॥ मा० ॥ वाजे जगमां हो,
 कीर्ति जेरी ॥ मा० ॥ सोखी हरखे हो, कीर्ति कसके
 मा० ॥ दोषी नर ते हो, देखी न शके ॥ मा० ॥ ७ ॥
 विप्र महोदय हो, ऐहवे नामें ॥ मा० ॥ अति खल
 निवसे हो, तिणहिज गामे ॥ मा० ॥ धनहत्तसाथे
 हो, करी मित्राइ ॥ मा० ॥ वातें रीजवे हो, करी
 पवित्राइ ॥ मा० ॥ ८ ॥ खलने मलतां हो, वार न
 लागे ॥ मा० ॥ काम सख्यार्थी हो अलगो जागे ॥
 मा० ॥ गरल अपूरव हो, खल निर्वासे ॥ मा० ॥
 श्रवण पहोते हो, विष प्रतिजासे ॥ ए ॥ विप्र प्ररू
 ये हो, मित्र महारा ॥ मा० ॥ अमे शुच वांठक हो,
 अहोनिश तहारा ॥ मा० ॥ तुज सुख सुखिया हो,
 पुण्य पवाडे ॥ मा० ॥ होय जो कूवे हो, आवे अ
 वाडे ॥ मा० ॥ १० ॥ एम धन उपरे हो, कां तुं
 रूठो ॥ मा० ॥ पुंठ विचारी हो, जोय अपुंगो ॥ मा० ॥
 जो धनधोरणि हो, ताहरे होशे ॥ मा० ॥ तो तुज
 साहसुं हो, कोहु जोशे ॥ मा० ॥ ११ ॥ धनविण

मानव हो, कोडि न पावे ॥ मा० ॥ साहसा सधनी
 हो कोडि उपावे ॥ मा० ॥ निर्धन नरने हो, कोड
 न धीरे ॥ मा० ॥ धनने आदर हो, सद्ग को उद्गीरे ॥
 ॥ मा० ॥ १२ ॥ उरगकञ्जवरहो, कोयी होंवे ॥ मा० ॥
 पण निर्धनने हो, कोड न जोवे ॥ मा० ॥ पुरुष वि
 ज्ञापण हो धन कहेवाये ॥ मा० ॥ प्रनुता विनुता
 हो धनयी थाये ॥ मा० ॥ १३ ॥ धन विदु अरु
 हो, पण गुण मोटो ॥ मा० ॥ धनयंत सानो हो,
 बीजो खोटो ॥ मा० ॥ प्रनु निर्झञ्य हो एकज पूजा
 ये ॥ मा० ॥ पण नर बीजो हो झञ्य सराये ॥ मा०
 ॥ १४ ॥ पुरुषपुण्ये हो, तुं धन पायो ॥ मा० ॥ राखी
 न जाणे हो, कोय ठगायो ॥ मा० ॥ देतां न कहे
 हो, कोइ नाकारो ॥ मा० ॥ धन सद्ग चांठे हो, आप
 पियारो ॥ मा० ॥ १५ ॥ मित्रविद्वणो हो, इम कुण
 कहेशे ॥ मा० ॥ रूडुं भुंडुं हो, तुं निर्वहेशे ॥ मा० ॥
 मारी शिक्षा हो, धनदत्त मानो ॥ मा० ॥ एम कही
 वाडव हो, रहियो ठानो ॥ मा० ॥ १६ ॥ धनदत्त मनमां
 हो, एम विचारे ॥ मा० ॥ दान देयंतो हो, कोइ न वारे
 ॥ मा० ॥ जांखी रूडी हो, ढाल वावनमी ॥ मा० ॥
 मोहनविजयें हो, विनवत थनमी ॥ मा० ॥ १६ ॥

(१५७)

॥ दोहा ॥

ए वाडव माहरो खरो, नेही इण संसार ॥ धन
पण कांइ नथी मागतो, कहे ठे हित उपगार ॥ १ ॥
एणे मुऊ साचुं कछुं, हुं तो दीजुं दान ॥ पण धन
विहूणा नर हुवे, नीरस तरण समान ॥ २ ॥ धनदत्त
ब्राह्मण वचनथी, परिहछुं देवुं दान ॥ लोच दशा
पसरि खरी, नीचसंगति निदान ॥ ३ ॥ संगति उ
त्तम कीजीयें, तो थइये वरवीर ॥ परिखा जल गंगा
गयुं, तो थयुं गंगानीर ॥ ४ ॥ जो जो संगति नी
चथी, आपद असी अमेल ॥ जो खलसंगति आदरे,
तो निष्फल नागरवेल ॥ ५ ॥ धनदत्त धन ढगला
करी, राख्या मंदिरमांहि ॥ नाकारो शीख्यो फरी,
विप्र वचनथी त्यांही ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेपनमी ॥

सासू पूठे बहु वात ॥ माला किहां ठे रे, ए
देशी ॥ भूर्ख मित्रनी वातो रे, कहो कुण माने रे ॥
एक अज्ञानिनी टोली रे, करे कुण काने रे ॥ ए
आंकणी ॥ धनदत्त ब्राह्मणथी जरमाणो, वाहला
मारा नवि मनमें शरमाणो ॥ लाज तणी तेणे
वात न राखी, यशानो रत्न गमाणो रे ॥ क० ॥ १ ॥

दान देयंतें वधती हुंती, लछी परिगल गेहें रे,
 दान निवारे धनदत्त साथें, लच्छी थइ निःस्नेही
 रे ॥ क० ॥ २ ॥ दानें लछी होय मद माती, विण
 दानें कृश थाये रे ॥ जोजनथी तनु पुष्ट होय
 तेस, जोजन विण न चलाये रे ॥ क० ॥ ३ ॥
 मणि माणिकने सोनुं रूपुं, एहथी रीशें जराणां रे ॥
 श्याम वर्ण कोपें धग धगता, हुइ अंगार समाणा रे
 ॥ क० ॥ ४ ॥ जलवट थलवट केरी लछी, तिणे ग
 ति जलनी कीधी रे ॥ जो जो धन दत्त मूढ पणायी,
 दरिद्रीने साह्य दीधी रे ॥ क० ॥ ५ ॥ सुगुण सहो
 वर सयल सनेही, तेणे पण हित चोखुं रे ॥ दीतुं
 तिहां तेणे धनदत्त छारें, दान विटपि विण मोखुं
 रे ॥ क० ॥ ६ ॥ धनदत्त निर्धनने वशे जोलो, ज
 मतो पुरमां लाजे रे ॥ पूर्व लाज अठे धनदत्तनी,
 जेह करे ते ठाजे रे ॥ क० ॥ ७ ॥ विप्र म
 होदय एहवे अवसर, धन दत्त मंदिर आव्यो रे ॥
 निर्धन दीगो तेणे नयणे, सान करी समजाव्यो
 रे ॥ क० ॥ ८ ॥ एह शी सूरि जन ताहरी अ
 वस्था, ए शुं दैवें कीधुं रे ॥ रोहण शैल समो रय
 णायर, पुंज उलाही लीधो रे ॥ क० ॥ ९ ॥ नेत्र

(१६०)

सजल थइ धनदत्त वोढ्यो, रे रे मित्र शुं कहीये रे ॥
 अतरगंतनी कहो कुण जाणे, जेह लख्युं ते लहीयें
 रे ॥ क० ॥ १० ॥ वाहला मित्रजी जइयें परदेशें,
 तिहां जइ उदर जरीशुं रे ॥ शुं करीये कहो केहने
 कहीयें, मूल मजूरी करीशुं रे ॥ क० ॥ ११ ॥ देशें
 चोरी विदेशे जिहा, एहवो वोढ्यो उखाणो रे ॥
 पण एकलडां केम सुहाये, हियडे विचारी जाणोरे ॥
 क० ॥ १२ ॥ विप्र कहे सुण धनदत्त जाई, एक
 लडो केम गोडुं रे, जो कांइ काम पडे जो ताहरे,
 शीषसहित तनु ओडुं रे ॥ क० ॥ १३ ॥ पण तुं मा
 हरा कथनमां रहेजे, धनदत्त कहे पण वारुरे ॥ ते
 बेहु चाळ्या परदेशे, पेट जराइ सारु रे ॥ क० ॥ १४ ॥
 मूकी देश विदेशे पोहता, धनदत्त वाडव साथें रे ॥
 पण कोइ उद्यम संपति केरो, नावे तेहने हाथें रे ॥
 क० ॥ १५ ॥ जे जे वाडव विधि प्रकाशे, धनदत्त तेह
 विधि चालेरे ॥ पण पूर्वापर ते न विचारे, पाठो उत्तर
 नालेरे ॥ १६ ॥ जो जो नमया ए दृष्टांतें, तात जणी
 समजावे रे ॥ अतिहि सुललित ढाल त्रेपनमी, मोहन
 कही समजावे ॥ क० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥

(१६१)

॥ दोहा ॥

एक दिन वनमां जालतां, तृपावंत धनवत्त ॥ मि
शकने मारो तिहां, पय पीवाने ऊत्त ॥१॥ मित्र कहे
दहां बेश्य तुं, हृदय धरीने भीर ॥ वनमांहुं सरवर ए
की, खेड् आबुं हुं नीर ॥ २ ॥ बेसाडी धनवत्तने,
कोइक तरवर ठांहि ॥ विप्र मित्र जख कारणे, गयो
गहन वनमांहि ॥ ३ ॥ न मित्र्युं जख ते विप्रने,
चित्ते मनमां ते एम ॥ विण पाणी निज मित्रने, वद
न देखाहुं केम ॥ ३ पूगलथी धनवत्त हवे, मित्र त
णी जोइ वाट ॥ जख नाव्युं दीतुं तेणे, चित्ते हृदय
निपाट ॥ ५ ॥ हलूये उव्यो तिहां थकी, एकाकी
धनवत्त ॥ वनमांहे जूलो जमे, जिम करिवर उन्मत्त ॥६॥

॥ ढाल चोपन्नमी ॥

मूजरो ल्योने जालिम जाटणी ॥ ए देशी ॥ धन
वत्त जोलो जी वनमां जमे, करवा विप्रनी शुद्धि ॥
तुमें फल जो जो नीचसंगति तणां ॥ ए आंकणी ॥
संगति नीचनी होये अलखामणी, प्राये निर्धन नि
वुद्धि ॥ तुण ॥ १ ॥ वनमें पारधीया खेटक रमे, ठा
ना मांडीने फंद ॥ ताणे वाण ते मृगवध कारणे, वेठा
ते मतिमंद ॥ तुण ॥ २ ॥ मृग पण आव्या तृण च

(१६२)

रता तिहां, पारधी फंद नजीक ॥ एहवे धनदत्ते ते
अजाणते, कीधी उत्तम ठीक ॥ तु० ॥ ३॥ ठीकें नाठा
ते मृग पाठा फस्या, दोड्या पारधि ताम ॥ रुष्या बोले
मृग केणे त्रासव्या, कस्युं केणे वैरीनुं काम ॥ तु० ॥ ४॥
धनदत्त दीठो पारधीये तिहां, पकड्यो दोडीने ताम ॥
नाख्यो मेदिनी लात प्रहारथी, कीधो हृदय अकाम
तु० ॥ ५ ॥ रे रे फंद पड्या मृग त्रासव्या, तेहनां
यह फल जोय ॥ बांधी चाळ्याजी तरु शाखांतरे, पा
रधी न रह्यो जी कोय ॥ तु० ॥ ६ ॥ धनदत्त आफ
ले बल घणुं करे, ठोडी न शकेजी बंध ॥ कीणही
वाटाज्यें नवि तस दीठडो, कुसुम जिश्यो निर्गंध ॥
तु० ॥ ७ ॥ एहवे वाडव वारि लेइ करी, आव्यो प्रथ
म तरुपास ॥ तेणे नवि दीठो तिहां धनदत्तने, तव
ते करेजी विखास ॥ तु० ॥ ८ ॥ अनुपम दीठो ते ध
नदत्तने, तव ते दीठो बांध्यो जी मित्र ॥ केणे माहरो
मित्र पराजव्यो, कांश्क दीसे ठे चरित्र ॥ तु० ॥ ९॥
ठोड्यो मित्रने शाखाथकी, पूठ्यो बंधविचार ॥ धन
दत्त जांखेजी वाडवआगलें, व्याध तणो अधिकार ॥
तु० ॥ १० ॥ जांखे वाडव धनदत्त आगलें, एम नवि
कीजें अबूक ॥ पुरवाहेर नर देखी तिहां, बोलीयें न

(१६३)

हीं कहुं तुज ॥ तु० ॥ ११ ॥ दीठे मारग सीधा चा
 दीयें, तो कुण दूहवे एम ॥ मान्युं धनदत्तें कहुं वि
 प्रनुं, चाढ्या आगल जेम ॥ तु० ॥ १२ ॥ आव्या
 कोइ पुरवर परिसरें, दीतुं सरोवर एक ॥ रजक नि
 हाढ्यो वस्त्र तिहां धोवतां, धनदत्त चिंते विवेक ॥
 तु० ॥ १३ ॥ हलूप हलूप सरोवर संचस्थो, केडे
 रह्यो कांइ विप्र ॥ दीठो रजकें धनदत्त आवतो, साह
 मो दोढ्यो जी क्षिप्र ॥ तु० ॥ १४ ॥ पकड्यो रजकें
 धनदत्तने, तथा रजक कहे मुख एम ॥ दिवस घणा
 नो करतो तस्करी, पकड्यो जाइश केम ॥ तु० ॥ १५ ॥
 काले लेइ गयो वस्त्रनी ग्रंथिका, बली तुं आव्यो ठे
 आज ॥ चोरनुं वितक तुजने विताडशुं, बलशे त्यारे
 तुज लाज ॥ तु० ॥ १६ ॥ रजकवचनें धनदत्त चिंतवे, हुं
 कुण चोर ठे कुण ॥ मोहनविजयें ढाख चोपन्नमी,
 पन्नणी परम अनूण ॥ तु० ॥ १७ ॥ सर्वे गाथा.

॥ दोहा ॥

रे रजक कुण चोर ठे, माहकं धनदत्तनाम ॥ नग
 री विशाखायें रहुं, व्यापारी अजिराम ॥ १ ॥ देव
 वशें इहां हुं आवियो, अणवोढ्यो इण वाम ॥ मित्र
 महोदय कथनथी, कीधां सवि आयाम ॥ २ ॥ विप्र

एम जावियो ॥ हो० ॥ तो० ॥ १॥ वेसो इहां विश्राम,
 करिने जाय जो ॥ हो० ॥ क० ॥ वचन उलंधी मुऊ,
 गमार न थाय जो ॥ हो० ॥ ग० ॥ धनदत्त तास वचन,
 रह्यो धीरज धरी ॥ हो० ॥ र० ॥ जो जो विबुधें ताम,
 विबुधता शी करी ॥ हो० ॥ वि० ॥ ७ ॥ धनदत्त देखे
 तेम, सुरेश्वरहित धरी ॥ हो० ॥ सु० ॥ नाखी अह मांहि
 रयण, अंजलि जरी जरी ॥ हो० ॥ अं० ॥ एम असमं
 जस देखी, कहे धनदत्त इस्युं ॥ हो० ॥ क० ॥ रे व्यव
 हारी ए काम, करे ठे तुं किस्युं ॥ हो० ॥ क० ॥ ए ॥ दे
 खी पेखी रयण, अहे केम नाखीयें ॥ हो० ॥
 ५० ॥ सुख दुःख अव्यने काज, सवे हुं सांखीए
 ॥ हो० ॥ स० ॥ के कोइ प्रेत विशेष, थयो ठे तुऊ
 ने ॥ हो० ॥ थ० ॥ जे कांइ हृदयमें वात, हूवे ते
 कहो मुऊने ॥ हो० ॥ हू० ॥ १० ॥ बोझोगे नाह्या
 वेण, करो कां ग्रथलता ॥ हो० ॥ क० ॥ उपहासीयी
 केम, तने नथी बीहता ॥ हो० ॥ त० ॥ तव मुर
 बोझो एम, वचन रचना करी ॥ हो० ॥ व० ॥ रे
 पंधी वड वीर, कहुं तुऊ हित धरी ॥ हो० ॥ क०
 ॥ ११ ॥ हुं तुं सारथवाह, रयण संग्रह चणो ॥ हो०
 ॥ २० ॥ एक ठे नाहरे मित्र, योगींद्र सोदानणो

॥ हो० ॥ चो० ॥ तेजे मुकने रत्न देखी, कहुं एहहुं
 ॥ हो० ॥ क० ॥ माने माहरो बोख, तो हुं तुफने
 कहुं ॥ हो० ॥ तो० ॥ १२ ॥ ए वन गहन मजार, एह
 अह कूयडो ॥ हो० ॥ ए० ॥ सुंदर सखिख गंजीर,
 पद्म अह जेवडो ॥ हो० ॥ प० ॥ तास तणे उपकंठ,
 रयण खेइ नाविये ॥ हो० ॥ २० ॥ अंजलि चरी
 चरी कोटिश, तेहमें वाविये ॥ हो० ॥ ते० ॥ २३ ॥
 एक परस मर्यादि, लगण तिहां स्थिर करी ॥ हो० ॥
 छ० ॥ प्रगटे अहथी ताम, रयणनी डुंगरी ॥ हो०
 ॥ २० ॥ मित्र वचनथी आज, इहांहुं आवियो ॥
 हो० ॥ इ० ॥ सयल रयणनो पुंज, अहांतरे वावियो
 ॥ हो० ॥ अ० ॥ २४ ॥ होशे रयणनो शैल, प्रजा
 कर कूयडो ॥ हो० ॥ प्र० ॥ साचो माहरो मित्र,
 कहे केम कूयडो ॥ हो० ॥ क० ॥ बोख्यो धनवत्त
 ताम, घणो पुलकित थइ ॥ हो० ॥ घ० ॥ ताहरी
 सारथ वाह, कहुं केम बुझि किहां गइ ॥ हो० ॥
 क० ॥ २५ ॥ कहिं अहमां रत्न, जग्यां तें साजव्यां
 ॥ हो० ॥ उ० ॥ फेरी शी तसआश के, जे गांगें ग
 व्यां ॥ हो० ॥ जे० ॥ ते जूख्यो ताहरो मित्र, जे तु
 क चंजेरीउ ॥ हो० ॥ जे० ॥ तुं जोखो जे तास, व

(१६८)

चन नवि फेरव्यो ॥ हो० ॥ व० ॥ १६ ॥ मानीश
एहवा मित्र, तणी जो शीखडी ॥ हो० ॥ त० ॥ मा
गीश सारथवाह, जली तुं जीखडी ॥ हो० ॥ ज०
॥ पंचावनमी ढाल, मोहनविजयें कही ॥ हो० ॥
मो० ॥ जे कोइ निपुण शिरोमणि, तेणे तो शर्दही
॥ हो० ॥ ते० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा. ॥

॥ दोहा ॥

वणिक रूपें कहे देवता, सांजल्य तुं धनदत्त ॥
पर उपदेशें कुशल तुं, दीसे ठे उन्मत्त ॥ १ ॥ पर्वत
पर जलती बहु, नयणे निरखे लोय ॥ पण पयतल
बलतां थकां, मूढ न देखे कोय ॥ २ ॥ पर अवगु
ण राई सरस, करे सुरशैल समान ॥ निज अव
गुण मंदर समा, राई करे अयाण ॥ ३ ॥ एक वा
र तुं ताहरी, गति सामुं तो जोय ॥ त्यार पठी पर
वृजियें, एम माह्यो शुं होय ॥ ४ ॥ धनदत्त तव नि
सुणी करी, कहे तव सुरने एम ॥ शीखामण देतां
थकां, रीष चढावो केम ॥ ५ ॥ वचन मानो जो
माहरुं, तो सुखी होउ महाराज ॥ हुं तो हेत माटे
कहुं, तव बोड्यो सुरराज ॥ ६ ॥

॥ दास उपज्ञामी ॥

जटीयाणीना गीतनी अथवा सुरती प्यारी लागे
 जिनजी ताहरी ॥ ए देशी ॥ धनदत्तने एम जांखे हो,
 व्यवहारी रूपें देवता ॥ रे जडक मतिहीन, प्रय
 मज तुं जुलवाणो हो, तेह तो तुं नथी शोचतो,
 कां न संजारे दीन ॥ ध० ॥ १ ॥ हुं तो जोगी व
 यणे हो, रयण वली थाव्यो वाववा ॥ तो तें वाख्यो
 मूढ ॥ वाडवनी तुं शीखें हो, जे एम वनमां रड
 वढे, तो कुण वारशे तुज ॥ ध० ॥ २ ॥ तुजने जें को
 तातें हो, जोलुडा वचन कशुं हतुं, न कसुं तें नि
 र्वाह ॥ वांजणनां वचनथी हो, धूताणो एम जूखो
 जमे, हजीय नथी लाजतो थाह ॥ ध० ॥ ३ ॥ ते
 माटें कहुं तुजनें हो, धनदत्तजी सुंहुं ममानशो, कहे
 वाये ए रूढ ॥ हुं जोलवाणो केहवो हो, जोलवाणो
 तुं ए विप्रथी, मूढ हुं किंवा तुं मूढ ॥ ध० ॥ ४ ॥
 पर उपदेशें काह्यो हो, ते कारण तुने हुं कहुं ॥
 जो तुं संजाली पूंठ ॥ जे कांइ तुज आगल हो, विण
 पूठये जे में उपदिश्युं, ए साचूं के फूठ ॥ ध० ॥ ५ ॥
 में तो जोगीवचनें हो, डहमांहि रत्न जे वोसख्यां ॥
 पण तुं विचारी जोय ॥ वाडवना कहाथी हो, तें

हज पुण्य प्रमार्जियुं, वली जम्यो दुर्जग होय ॥ ध० ॥
 ॥ ६ ॥ जो होइये निकलंक हो, तो परनुं कलंक प्रका
 शियें ॥ करी जाणो निर्धार, ते कारण तुमे जाउ हो ॥
 झूलशो पुरनी वाटडी, खोटा न करो उपचार ॥
 ध० ॥ ७ ॥ धनदत्त तिहां मनमांहि हो, आलोचे
 उंणी आलोचना, ए केम लहे मुज वात ॥ एणे जे
 मूज जाख्युं हो, ते साची सवली वातडी, खोटा
 नाहिं थवदात ॥ ध० ॥ ८ ॥ वाडवने कहे बुद्धो
 हो, में तातनुं वचन विसारियुं, जलो झूझो हुं
 जोर ॥ मूरखने वली होवे हो, माथें मोटां शिंगडां,
 कहेने कहुं करी शोर ॥ ध० ॥ ९ ॥ मानव तो
 नवि दीसे हो, दीसे ठे ए तो देवता, नहीं तो जाणे
 केम ॥ सारथवाहने जांखे हो, धनदत्त वेहु कर
 जोडीने, प्रगट प्रकाशी प्रेम ॥ ध० ॥ १० ॥ तमे
 कोण ठो बुद्धिवंता हो, मुज आगल साचुं जांखतो,
 दाखो प्रगट स्वरूप ॥ धनदत्तना कथनयी हो, सा
 रथपनो दंत विसर्जियो, कळुं सुररूप अनूप ॥ ध० ॥
 ॥ ११ ॥ निर्मल देही जेही हो, फाटिकनी जाणे न
 यूपिका, अंबुज परिमलपूर ॥ जूषणने संगारे हो,
 संपूजीत तन सोद्धानयो, तेजें न निठे सूर ॥

ध० ॥ १२ ॥ धनदत्तने सुर जाखे हो, सांनद्वर हुं
 हुं ताहरो, पूरव जवनी तात ॥ सुरपुरनं सुरलीला
 हो, जोगवतां अविधि प्रगुंजीयो, दीग तुज अविदात
 ॥ ध० ॥ १३ ॥ पूरव जवने नेहें हो, तुज प्रति
 बोधन आवियो, सारथवाहने वेश ॥ अहमांहे मणि
 कपटें हो नाखिने, तुज समजावियो अहो, हित
 शीख विशेष ॥ ध० ॥ १४ ॥ केम करीने चालीजें
 हो, बालूडा वूळें पारकी, कीजें मन अनुजाय ॥
 घणी घणी शी फेरी हो, जांखीजे तुजने शीखडी,
 तुजने कहुं तुं न्याय ॥ ध० ॥ १५ ॥ सुरवरने व
 चनें हो, प्रतिवृज्यो धनदत्त हियडे, दीगो तात
 सनेह ॥ देवें एक अनिमेपे हो, वनहुंती धनदत्त
 आणीयो, जीहां पूरव निज गेह ॥ ध० १६ ॥ अह
 मांहे मणि माणिक हो, सोनुं ने रूपुं सामहुं, प्रग
 ठ्यो जाकज्जमाख ॥ ठपन्नमी रतनाली हो, सुगुणीने
 हेतें ए कही, मोहनविजयें ढाख ॥ ध० ॥ १७ ॥
 सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

ते सुरवर धनदत्तने, सोंपी धण कण धाम ॥
 प्रतिबोधी सुरपुर रमा, आजरणीकृत ताम ॥ १ ॥

उच्च विवेकनुं, काया बली उद्धोल ॥ एम शिशिर
 निर्वाहशुं, करशुं रुचि कद्धोल ॥१४॥ पूर्वढाल ॥ बली
 तेमज वसंतऋतु आवे, तव किसलय तेम तरु जावे ॥
 वागे चंग मृदंग सुरागें, बली टोली गावे फागें ॥१५॥
 ठांटे केसर जरी पीचकारी, तेम लालगुलाल नरना
 री ॥ करे नाटकवत्रीश बरु, ते तो मुनिवेपें नविकी
 ध ॥१६॥ दोहा ॥ तप नवकिसलय तरु थयो, आवश्यक
 वाजीत्र ॥ अध्ययनादिक फागगति, केसर क्रिया वि
 चित्र ॥ १७ ॥ मार्दव लाल गुलाल बहु, परिसह ना
 टक कीध ॥ ऋतुवसंतमांहे अहो, मुनिने ए अनि
 पिद्ध ॥ १८ ॥ पूर्व ढाल ॥ ऋतु ग्रीष्म तपन तपे
 जोर, तेम लूक वहे चिहुं जेर ॥ रस करीये घोली
 रसीलो, सुणीये कंठ पिकवचन रसाल ॥ १९ ॥ तेम
 करे विलेपन चंदननां, ते शीतल पवन विंजनना ॥
 साकर जल जेढी पीजे, एम ग्रीष्मनो लाहो बीजें ॥
 ॥ २० ॥ दोहा ॥ क्रोधातप कृश खंतियी, लूक लो
 जनी जेह ॥ आदरशुं निःस्पृहता, वसशुं संयमगंह ॥
 ॥ २१ ॥ अनुजवरत सहकार रस, कोकिल जिनवर
 वाणी ॥ चंदन सत्य विलेपनां, उपशम व्यंजन जा
 णी ॥ २२ ॥ गुरुआणा साकर विनय, नीरतां निर

शान ॥ गुण कही प्रीति शतु जनी, निर्वहिशुं परि
 मान ॥ २३ ॥ पूर्ण दास ॥ शतु कर्माचन कर मंके,
 धारा अनिमेष न खंके ॥ शिखी दादुर नानक बोधे,
 कार्मी काम पण खोखे ॥ २४ ॥ गुणिजन आशारे
 मल्हार, बखी सुंदर नेम आहार ॥ वदे सरिता वृ
 रिता तेम धरणी, केम निर्वहशो चरण आचरणी ॥
 ॥ २५ ॥ बोद्धा ॥ मोहमहापननी ठटा, भरशुं सूप
 संवेग ॥ श्रद्धाविहग लक्षोपणा, खोखी मने भरि
 नेग ॥ २६ ॥ राग मल्हार सद्याय ठे, निःशंकी
 आहार ॥ सत्य नदी मुनिगुण हरित, ए पायस
 प्रतिचार ॥ २७ ॥ पूर्णदास ॥ शतु शरदें कमल शशी
 ऊगे, वधे तेज नयन कर पूगे ॥ ऊरे पीयूष शुक्ति
 समाय, तस पिंडुनां मौक्तिक थाय ॥ २८ ॥ योगीश्वर
 ग्रह नवरात्रि, करे याग यगन संयात्री ॥ मली कन्या
 गरवो गाइ, करी मंगल दीपक ताइ ॥ २९ ॥ अति म
 होत्सव थाणा प्रयाणां, संयमिने क्यांथी सयाणां ॥
 वसती बाहिर एकाकी, न फरे पुनि जेम ए रांकी ॥ ३० ॥
 दोहा ॥ समकित शशी अजुवालडो, तास तत्व ज्ञानांश ॥
 ज्ञान नियम निर्मल थशे, लोकालोक प्रकाश ॥ ३१ ॥
 दयाशुकिमांहि अचल, मौक्तिक धर्म सशुद्ध ॥

(१७६)

नवयोगी नव वाडि ते, नव रात्रि प्रति बुद्ध ॥ ३२ ॥
 जोली कन्या जावना, जिन गुण गरवा केली ॥ मं
 गल दीपक परम पद, कर्म नटाव अहेलि ॥ ३३ ॥
 वियावच्च आणुं जलुं, अवि र तथा मुनिनाह ॥
 शिशिर रुतुयें मुनिवर करे, एम महोटा उ
 त्साह ॥ ३४ ॥ पूर्व ढाल ॥ कह्यो पटे रुतुनो एह वि
 वाद, नवि पामी नमया विषवाद ॥ नमया चारि
 त्रनी अरथी, रागी पूरण मुनिवरथी ॥ ३५ ॥ ध
 न्य धन्य ते जव जय ठंडे, मुनि वेशें आदर मंडे
 ॥ कही सत्तावनमी ढाल, एह मोहनविजयें रसा
 साल ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

तातें घणुंये प्रीठवी, पण नवि माने तेह ॥ तातें
 अनुमति दीधली, नमयाने धरी नेह ॥ १ नमया
 अति रंजी हिये, तनू हुवो रोमंच ॥ उमाही दी
 द्वा जणी, करे नहीं खल खंच ॥ २ ॥ तातें पुर श
 णगारियुं, तिहां हय गय रह जोडि ॥ अति उत्स
 व अष्टाहिका, मांने होडा होड ॥ ३ ॥ दया पटह
 पुर फेरव्यो, दीधां अर्थीदान ॥ सयण सयल जेलां
 हुवां, दीधां तिहां बहु मान ॥ ४ ॥ वेठी नमया

सुंदरी, शिबिकाण सोत्साह ॥ तूरि तणा निधोण
हु, गय गयणांगण ताह ॥ ५ ॥ पुरजन कोतुक पे
खवा, मखियां थोका थोक ॥ थाव्यां इम गुरु संनि
धि, जोडीने कर कोक ॥ ६ ॥

॥ दात्र थहावनमी ॥

ते तरीया जाइ ते तरीया प देशी ॥ थार्य सु
हस्ती खुरीश्वर चरणे, प्रणमी नमया विनवेरे ॥
थापो मुकने चारित्र खजानो, थवसर थाव्ये एह
वे रे ॥ १ ॥ जयवंता विचरो जगमांहें ॥ ए थांकणी ॥
जे अनुसरे मुनि मुझारे, तास चरणरज तिलक
करीजे, सेवियें थइ थहुझा रे ॥ ज० ॥ २ ॥ गुरु स
हदेवतणी भहे थाणा, सघलें अनुमति दीधी रे ॥
थहो जावुके थहो नमयासुंदरी, प्रीति संयमथी
कीधी रे ज० ॥ ३ ॥ मन थिर ठे किंवा नथी ता
हरुं, संयम ठे थति दोहियुं रे ॥ सायर जल तरबुं
ठे जुजाथी, निःस्पृहने ठे सोहियुं रे ॥ ज० ॥ ४ ॥
सिंह थइने ल्यो ठो संयम, सिंह थइने निर्वहेजो
रे, जो न पाली शको प्रव्रज्या, तो गृहवासे रहेजो
रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ नमयासुंदरी विनवे गुरुने,
स्वामी कांहे विहाडो रे ॥ साहमुं बल बंधावी मु

(१७७)

ऊने, निद्रालुने जगाडो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ माहुरं
 मन ठे दृढ संयमथी, हुं आवी तुम चरणे रे ॥
 चारित्र्यथी केम होइश चंचल, उलखो एहवे आ
 चरणें रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ नमयायें भूषण सयल उ
 तास्यां, परिहरी लोन अयुनो रे ॥ वासदेवथी
 थाल नरीने, तात समीपें ऊनो रे ॥ ज० ॥ ८ ॥
 केशजाल मस्तकथी कुंच्या, जाल महामोह दावे रे ॥
 आचारय करवा संग्रहीने, नर्मदा मस्तक नावे रे ॥
 ज० ॥ ९ ॥ धर्म सिंधुर कुंतम्यल वेग, गुरु एम
 देशना जांखे रे. पंचशालि कण जेम महाव्रत, जे
 ग्रहे ते सुख चाखे रे ॥ ज० ॥ १० ॥ एह संसार
 असार विचारी, पाखजो मूर्खी शिखा रे ॥ पंच म
 हाव्रत नार निर्वहेजो, ए सहगुहनी शिखा रे ॥ ज०
 ॥ ११ ॥ ग्रणम्या पुरजन नमयाने चरणे आंसुजूरं
 ते नयणे रे ॥ अहो नमया धन्य धन्य तुम जीवन.
 एम उल्लापे वयणें रे ॥ १२ ॥ राखजो धर्म गनेह अम
 उपर, बंदावजो बली अमने रे ॥ तुम गुण मीना
 केम विसरशे, वणुं विनवीयें शुं तमने रे ॥ ज० ॥
 ॥ १३ ॥ सहदेवादिक नयणथी वरसे, आंसुनिपें
 जलधारा रे ॥ जांखे नमया साधवी तेहने, मीनां

(१७७)

वचन उदारा रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ धर्मोद्यम करजो
सहु प्राणी, एम कही दीधी शीखो रे ॥ नमयाने
आशीष कहे एम, जीवजो कोडी वरीसो रे ॥ ज०
॥ १५ ॥ जनकादिक सहु मंदिर आव्या, हवे सह
गुरुजहासे रे, नमया साध्वीने हित आणी, सोंपी
साधवी पासे रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ साधु मारग शी
खाव्यो वारु, करे जिन आगल साखी रे ॥ अछा
वनमी ढाल सलूणी, मोहनविजयें जांखीरे ॥ ज० ॥
॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥

॥ दोहा ॥

अहनिश साध्वी नर्मदा, करे ज्ञान अज्यास ॥ चा
रित्र चंद्र प्रद्योतयी, करे मन कुमुद विकास ॥ १ ॥
जयणा गंगा सुरसरी, जिहां हित प्रगटतरंग ॥
तीहां जीवे थइ हंसली, करे पवित्र निज थंग ॥ २ ॥
अंबर मुनि आचारनां, जक्ति तणो मुख कोश ॥
संवर केसर घोले बहु, विनय पखाले अदोष ॥ ३ ॥
स्तवना कुसुम मनोहर, समकित दीप उद्योत ॥
अद्वैत अनुभव रूपना, ध्यान धूप सिद्धोत ॥ ४ ॥
एम पूजा जिनराजनी, साहसयी नितमेव ॥ रवे
कर्म चकचूरवा, सा साध्वी नितमेव ॥ ५ ॥

॥ ढाल उगणसाठमी ॥

आइ आइ हो ढोला आइ हो श्रावण त्रीज,
 माहरी प्रोले पडहा वाजीया होराज ॥ वारी जाव
 राज, जीवनप्यारा राज ॥ लाडीरा लाडा राज ॥
 राज मृगानयणीयी मांझुं रूसणुंजी ॥ वा० ॥ जीव
 न० ॥ लाडी० ॥ रा० ॥ ए देशी ॥ मांझ्यो मांझ्यो हो
 तेणे नमयाए पूरण प्रेम, रतनाली सुमति गुप्ति सा
 हेलीशुंजी ॥ ठांड्यो ठांड्यो हो तेणें कुमति सा
 हेली संग, लय लागी ते अलवेलीशुंजी ॥ १ ॥
 कळुं मनजावें, नमयाए कुमतियी रूसणुं जी ॥ ए
 आंकणी, तास मंदिर हो नही सुंदर नामें आरंज,
 तेहनी तो गोडी शेरडी जी ॥ आवी वेगी हो तव
 उपशम गेह, जस संयमशेरी न चेरडी जी ॥ क० ॥
 ॥ २ ॥ तव जयणाने हो कळुं नमयायें बेनडी मूळ,
 इहां कुमतिने हो मत्र देजो पेसवा जी ॥ मुळ जो
 लावी हो एणें एता दीह, अनंत स्थिरताए न दीधी
 पेसवा जी ॥ क० ॥ ३ ॥ एहवे कुमतिए हो मेझी हिं
 सा दासी कुरूप, नमयाने बाळुं विप्रतारवा जी ॥ कांइ
 जोडी हो ठांडे पातळपणुनो नेह, ससनेही केम केम
 वीतारवां जी ॥ क० ॥ ४ ॥ तेहने अहिंसायें हो

कही कहुवा कहुवा बोल, घर बाहेर काडी गल
 हल देखने जी ॥ कहे कुमतिने हो तेह, दासी अहिं
 साए मुज, कहे नांडी आवडे आवडे जी ॥ क० ॥ ५ ॥
 थइ जांखी हो कटुकवचनं कुमति तेवार, नमयाने
 मूकी संचारवा जी ॥ करे सुमतिथी हो नित रंग
 कल्लोल, श्रुतज्ञाननी गोष्टि विचारवा जी ॥ क० ॥ ६ ॥
 मति ज्ञानने हो तिहां वेंच्यां फोफल पान, बहु
 हूवां रंग वधामणां जी ॥ तव उपन्युं हो नमयाने
 अवधिज्ञान, मोहादिक हुवां दयामणां जी ॥ क० ॥
 ॥ ७ ॥ हवे अनुक्रमं हो, करे जूतल तेह विहार,
 हूइ महासती ताम पवत्तणी जी ॥ पडीवोहें हो,
 जवि चातुर जवियण वृंद, देवे देशना अतिही
 सोहामणी जी ॥ क० ॥ ८ ॥ जेणे सांचली हो तस
 देशना श्रवणे जव्य, तेणें जाण्युं पीयुष पीधलुंजी ॥
 जस दीधी हो मुख धर्माशीप मनोइ, ते तो अ
 व्यय जीवित दीधलुंजी ॥ क० ॥ ९ ॥ बहु साहू
 णीहो, मली महासतीने परिवार, एक एकथी
 अधिक गुणें करीजी ॥ तपें कीधो हो जेणें पावन
 आपण देह, उपदेश महारयणे जरी जी ॥ क० ॥
 ॥ १० ॥ नमयां महासती हो, पामी सहगुरुनो आ

धरे अधर्मने जीव ॥ काच कामखी रोगें मदे, गंख
 विचित्र तदीव ॥ ३ ॥ हसतां अथवा क्रोधयी, बंध
 निकाचित कर्म ॥ केम नूटे विण जोगव्यां, साख नरे
 जिनधर्म ॥ ४ ॥ पामे पूरवकर्मयी, सतीउं पण थप
 वाद ॥ कर्म विपाक मही जतां, केम करियें विपवाद
 ॥ ५ ॥ अठतां पण सतीउं जणी, चोहटे जेह कलंक ॥
 ते नर विलसे चापडा, जववारिधि निःशंक ॥ ६ ॥

॥ ढाल साठमी ॥

कर्म परीक्षा कारणं कुमर चख्योजी ॥ ए देशी ॥
 कहे दृष्टांत तिहां धनवती तणो, पति प्रतिबोधवा
 काज ॥ पोण्यो अछुत रस देशना विपेजी, निसुणी
 नर नरराय ॥ १ ॥ कर्म कुटिलथी वल नहीं कोशुं
 जी, शिवपुर पंथ विशाल ॥ आठ लूटांक ते हेरे हे
 रणांजी, करी परिकर जंघाल ॥ क० ॥ २ ॥ शावस्ती
 नगरीयें वसतो हुतोरे, व्यवहारी पुण्यपाल ॥ धन
 वती तेहनी अनोपम अंगना जी, मुख्य सती सुवि
 शाल ॥ क० ॥ ३ ॥ अनुक्रमें कंथविदेशे चालतां रे,
 धनवतीनी तेणीवार ॥ दीधी जलामण आपणा मि
 त्नेरे, उपस्थित करण रोजगार ॥ क० ॥ ४ ॥ केता
 दिवस पठी धनवती जणी जी, प्रार्थें कंथनो मित्र ॥

(१७४)

सुख जोगव्य तुं मुज्ज्ही सुंदरी रे, यौवन कस्य तुं
पवित्र ॥ क० ॥ ५ ॥ निर्त्रंढ्यो धनवतीए तेहने जी,
ते पण पाम्यो रोष ॥ तेणे पुरमे कही कही शाकिनी
जी, दीधो सतीने दोष ॥ क० ॥ ६ ॥ न शके नयरी
मांहे फरी सतीजी, तिहां पण पीहर गइ परगाम ॥ ते
धनवती निजबंधू घरे वसे जी, जो जो कर्मनां काम
॥ क० ॥ ७ ॥ धनवती बंधू सुतने हुलरावती जी, ना
खती निःश्वास ॥ तिहां पण प्रार्थे विषय सुख कार
णे जी, निज सहोदरनो दास ॥ क० ॥ ८ ॥ तेहने
पण सतीचे निर्त्रंढ्यो जी, दास थयो विणप्रेम ॥
दासे बाल विणाश्यो क्रोधथी जी, सा हुलरावती जे
म ॥ क० ॥ ९ ॥ प्रात थयो धनवतीचे बालने जी,
दीठो विनाश्यो जाम ॥ करी आक्रंद कुटुंब सवि
मेलव्युं जी, आव्यो दास पण ताम ॥ क० ॥ १० ॥
दास कहै सहू लोको सांजलो जी, ए सतीनुं विरु
द्ध ॥ कहो कूण सोंपे सुत शाकिनी कन्है जी, जेम
सांजारने दूध ॥ क० ॥ ११ ॥ शावस्ती लोकें मली
एहने जी, काढी वनह मजार ॥ कीहांथी आवी
रंभा शाकिणी जी, बांधवने आगार ॥ क० ॥ १२ ॥
अति शरमाणी ते धनवती सती जी, परिहरी पी

हर ताम ॥ आधी एकान्ते गहनवनांतरें जी, बडतसे
 प्रसो विश्राम ॥ क० ॥ १३ ॥ गुहड विहंग रयणी
 नर तरुशिरे जी, सहित बाखक परिवार ॥ बीट नि
 चय देखीने बाचडा जी, गुण पूठे तेणीवार ॥ क० ॥
 ॥१४॥ कुष्ट शमे ते विट प्रजावर्धी जी, पंखीपति कहे
 एम ॥ धनवतीचे गुण जाणी संग्रही जी, विट नणी
 धरी प्रेम ॥ क० ॥ १५ ॥ तिहांथी आधी कोइ पुरवरे जी,
 कीधो पुरुपनो वेश ॥ टाले कुष्ट ते बीट प्रयोगथी
 जी, यश थयो देश विदेश ॥ क० ॥ १६ ॥ मोटा म
 होल बनाव्या मोजमां जी, चाहे वाल गोपाल ॥
 मोहनविजयें ए नणी साठमी जी, श्रोता सांजलो
 थइ उजमाल ॥ क० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा.

॥ दोहा ॥

एहवे धनवती वल्लहो, आव्यो निजपुर जाम ॥
 पण मंदिरमां अंगना, तेणे नवि नीरखी वाम ॥ १ ॥
 प्रीत्यो मानव मुखयकी, दयितानो अधिकार ॥ अ
 ति जांखो हूँ थको, पहोतो मित्र छार ॥ २ ॥ दी
 वो कुष्टी मित्रने, सती कलंक प्रजाव ॥ पुण्यपाल
 समज्यो हिये, कुटिल सुहृदनो दाव ॥ ३ ॥ एहवे
 पुरमांहे कह्युं, वैद्य विदेशे एक ॥ टाले कुष्ट उपाय

श्री, जन्मांतरिय विवेक ॥४॥ पुण्यपाल निज मित्रने,
 तेडी चाले जाम ॥ सती बंधुनो दास पण, कुष्टी आ
 व्यो ताम ॥ ५ ॥ बिहुने तेडी अनुक्रमें, आव्या ते
 परदेश ॥ जेणे पुर धनवती रहे, रचि पुरुषनो वेश
 ॥ ६ ॥ वालम दीठो आवतो, पामी परमानंद ॥
 पण पियुने समजाववा, रचशे रामा फंद ॥ ६ ॥

॥ ढाल एकसठमी ॥

अणसणरा हो योगी ॥ ए देशी ॥ कहे पुण्यपाल
 तदा कर जोडी, तुज कीरतें आव्यो तुं दोडी रे ॥
 वैद्य जी करो करुणा ॥ ए आंकणी ॥ ए वेहु कुष्टीने
 साजा कीजें, वली मूख भागो ते दीजें रे ॥ वै० ॥ १ ॥
 सा कहे वैद्यरूप ते नेही, करुं औषधी पण निःस्पृही
 रे ॥ वै० ॥ पण ए रोगी साचुं कहेशे, तो एहने
 औषध गुण देशे रे ॥ वै० ॥ २ ॥ सहु सांचलतां
 कहेतां जो लाजे, तो वेसो एण वाजे रे ॥ वै० ॥ पड
 दो रहे जेणे वाते करीयें, नवि दंज कोइ अनुस
 रियें रे ॥ वै० ॥ ३ ॥ कोइ धनवतीनो जेद न जाणे ॥
 सवि सत्य करी प्रमाणे रे ॥ वै० ॥ उठी पुण्यपाल
 ते अलगा वेगो, तेह चिकित्सक पडदे वेगो रे ॥
 वै० ॥ ४ ॥ कहे पुण्यपालनं हलूइ विख्यातो, तुं तु

एजे कुटिलनी वातो रे ॥ वै० ॥ एम कही आवें वेय
 फरीने, वर आयध फांट जरीने रे ॥ वै० ॥ ५ ॥
 रे रोगीयो नहि जूवे राचूं, केम रोग थयो कहो
 साचूं रे ॥ वै० ॥ बोढ्यो प्रथम पीयुमित्र कुसंगी,
 कहूं प्रगट सुणो एक रंगें रे ॥ वै० ॥ ६ ॥ ए पुण्य
 पावतणी हुंती नारी, नामे धनवती मनोहारी रे ॥
 वै० ॥ कामवशे में प्रार्थी तेहने, करी वेहेन गणी
 हुंती जेहने रे ॥ वै० ॥ ७ ॥ माहरं वचन नहि मान्युं
 तेणे, में आय्यो रोप हियडेरे ॥ वै० ॥ कही कही
 शाकिनी घणूं अवेहेली, एतो लाजी गइ पुर महेली
 रे ॥ वै० ॥ ८ ॥ जूठ कलंक चढाव्युं माटे, कुष्ट रोग शरीरें
 उच्चाटे रे ॥ वै० ॥ एम तेहने तव अणबोढ्यो राख्यो ॥
 तेह दास जणी संजाख्यो रे ॥ वै० ॥ ९ ॥ में पण याची
 तेहज नारी, तेणे निर्त्रय्यो मुजने जारी रे ॥ वै० ॥ में
 तव शेठनो तनुज विणाश्यो, वली शाकिनी दोष प्र
 काश्यो रे ॥ वै० ॥ १० ॥ निकली तिहांथी अतिहीं
 लजाती, तेनी खबर किसी न जणाती रे ॥ वै० ॥ कर्म
 कहाणीए केहने कहीयें, हवे तुमे कहो ते वहीये रे
 ॥ वै० ॥ ॥ ११ ॥ पडदांतरे ते वातो जाणी, पुण्यपालें
 कंधरा धूणी रे ॥ वै० ॥ मुज कामिनीने कलंक दीधुं,

(१००)

अइ मित्र ए शुं काम कीधुं रे ॥ वै० ॥ १२ ॥ एहवे
 धनवती पडदे आवी, ते वेहुनी वातो जणावी रे ॥
 वै० ॥ पेठी घरमां वेश उताख्यो, स्त्रीवेषें वपु शण
 गाख्यो रे ॥ वै० ॥ १३ ॥ रम जम करती पियुने चर
 रणे, सा प्रणमें नरी आचरणें रे ॥ वै० ॥ उलखी प्रमदा
 पोता केरी, वधी प्रीति लता अधिकेरी रे ॥ वै० ॥ १४ ॥
 औषधें वेहुनो रोग गमाव्यो, एम गुणसज्जनो
 गणाव्यो रे ॥ पुण्यपाल निज धनवती संगें, आव्यो
 शावस्ती मन रंगें रे ॥ साची सती करी पुरमें जाणी,
 जेणे विसारी अपवाणी रे ॥ वै० ॥ अनुक्रमें धन
 वती शिवसुख पामी, एम नमया कहे गुणधामी रे ॥
 वै० ॥ १५ ॥ कहे महेश्वरदत्तनी आगे, सतीने पण
 लंठन लागे रे वै० ॥ ए एकसठमी ढाल सुरंगी,
 कहे मोहन सुगुण प्रसंगी रे ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥
 ॥ दोहा ॥

कहे नमया पवत्तणी, कर्म तणी गति एम ॥
 जेणे धर्म न अच्यस्यो, ते गति वेहशे केम ॥ १ ॥ ते
 श्री जिनवर धर्मना, शास्त्रमांहे अधिकार ॥ चौदरा
 ज्य ए शास्त्राची, प्रगट लहीजें सार ॥ २ ॥ नरय
 माणुय तिरिय देव गइ, इत्तीद्वारा पर्यंत ॥ नाण हुवे

व. शास्त्री, गीताई होय गर्जन ॥ ३ ॥ कोदक
 एहरी शास्त्रे, जेहू जने अघाप ॥ सरणी लक्षण
 जाणिये, रूप रंग गुण व्याप ॥ ४ ॥ पण स्वरलक्षण
 बातही, मूरखने न कदाय ॥ साहामो गुण अवगुण
 करे, अहिपप पानता न्याय ॥ ५ ॥ तेहू कारण
 धृति शास्त्रनो, करजो स्वप सहु घोष ॥ जेहूची उत्तम
 संपदा, एहू कथाची होय ॥ ६ ॥

॥ दाख यासठमी ॥

कपुर होय अति ऊजखो रे ॥ एवरी ॥ महेश्वरवत्त
 चित्त चमकीयो रे, निमुणी कथा कलोल ॥ धन्यधन्य
 एम पयत्तणी रे, धर्मची रंग ठे चोख रे ॥ १ ॥ चेतन
 चेते नही कां मूढ, लही उपशम अगुढ रे ॥ चे० ॥
 पण एणें स्वरलक्षण खणुं रे, ते साचो उद्वास ॥
 महेश्वरवत्त मांनियो रे, नमयानो पश्चात्ताप रे ॥
 चे० ॥ २ ॥ सही मुज नमया थंगना रे, जणी हशे
 लक्षण शास्त्र ॥ गायन लक्षण कणुं हतुं रे, वेठे ठते
 यानपात्र ॥ चे० ॥ ३ ॥ पण में मूढ अजाणते रे,
 कीधुं अधमनुं काम ॥ वनमां सतीने परहरी रे, थड
 निष्कृप अजिराम रे ॥ चे० ॥ ४ ॥ मुज वनिता हती
 महासती रे, पण हुं थयो अज्ञान ॥ मुज सरीखो

संसारमें रे, निर्धृण नहि को निदान रे ॥ चे० ॥ ५ ॥
 शी गति थइ हशे तेहनी रे, रजनीचरने क्षीप ॥
 अहो अहो हुं महापातकी रे, तुळ मति उद्दीप रे ॥
 चे० ॥ ६ ॥ अति चिंतातुर कंथने रे, देखी पवत्तणी
 ताम ॥ कहो तुमें चिंतातुरा रे, अहो महानुजाव
 आस रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ कहे महेश्वर कर जोडीने रे,
 पूरवलो उदंत, आंसु ऊरंते लोयणें रे, नारी गुण
 विलपंत रे ॥ चे० ॥ ८ ॥ बोली ताम पवत्तणी रे, तेह
 हुं अवर न कोय ॥ जे तमे विसर्जी वनमां रे, नयण
 उघाडी जोय रे ॥ चे० ॥ ९ ॥ ताहरो दोष नहीं कि
 णो रे, ए मुऊ कर्मनो दोष ॥ शुं फुरेठे बापडा रे,
 हुं नथी धरती रोष रे ॥ चे० ॥ १० ॥ आपवीती बातो
 कही रे, महेश्वरदत्त ते सर्व, आदखुं में साहुणी पणुं
 , ठांडी क्रोध ने गर्व रे ॥ चे० ॥ ११ ॥ आवी हुं इहां
 मुऊने रे, प्रतिबोधनने काज ॥ लमज तुं गति संसार
 तीरे, उलख तुं जिनराज रे ॥ चे० ॥ १२ ॥ नर्मदासुंदरी
 लखी रे, लाज्यो महेश्वरदत्त ॥ निज अपराध खमा
 वेयो रे, लह्यो बैराग्य उन्मत्त रे ॥ चे० ॥ १३ ॥ कहे
 महेश्वर मुऊ कीजीए रे, ज्ञान दर्शन चारित्र ॥ नम
 णा कहे सूरि अठे रे, आर्यसुहृस्ती पवित्र रे ॥ चे० ॥

॥ १४ ॥ रुपिदत्ता पण शुज परें रे, अति पामी प्रति
 बोध ॥ चारित्र्य लेवा सुंडियां रे, टाखि सयल विरोध
 रे ॥ चे० ॥ १५ ॥ अनुक्रमे विचरंता आविया रे, आ
 र्यसुहस्ती गुरुराय ॥ महेश्वरदत्त हरख्यो हिये रे,
 रुपिदत्ता हित लाय रे ॥ चे० ॥ १६ ॥ दीक्षा वेहु
 ए आदरी रे, ठोडी सयल जंजाल ॥ मोहनविजयें
 जली कही रे, ए वासठमी ढाल रे ॥ चे० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

रुपिदत्ता दीक्षा ग्रही, पाले निरतीचार ॥ आयु
 वशें जइ उपनी, निर्जरने थागार ॥ १ ॥ मुनि
 महेश्वरदत्त पण, दिक्षातणे प्रभाव ॥ नवसायर हे
 लांतरे, वेसी धर्मने नाव ॥ २ ॥ अनुक्रमें पान्या पु
 ण्यथी, सुरपर्यंत संयोग ॥ विलसे निजदेवी थकी,
 विषयादिकनो चोग ॥ ३ ॥ जो जो नमया महा
 सती, करियो ए उपकार ॥ महापतित पतिने कियो,
 महोटो सुर शिरदार ॥ ४ ॥ सुंदर नमया महासती,
 वसुधा करे विहार ॥ करे मार्तंड प्रजापरें, नवि
 कैरव विस्तार ॥ ५ ॥ कहेणीं रहेणीं विहु सरिस, तेह
 वो नाण प्रकाश ॥ कर्मतणीं करे निर्जरा, उपश
 मने थावास ॥ ६ ॥

(१९२)

॥ ढाल त्रेसठमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ नमया सुंदरी महासती, स
धो संयम पावे जी ॥ ध्यानानल संयोगें सुपरें, कर्म
समिध प्रजावे जी ॥ न० ॥ १ ॥ अवधि ज्ञान तणे अनु
सारें, आयुष कर्म विचारी जी ॥ मास तणी हित आ
णी दाखे, संक्षेपणा सुखकारी जी ॥ न० ॥ २ ॥
लाख चोराशी जीव खमावी, सम जावें मन आणी
जी ॥ शुद्ध देव गुरु धर्म त्रि करणें, निश्चल चित्तें
ध्याइ जी ॥ तृप्ति जाव जाव्यो मन शुद्धें, परम म
होदय पाइ जी ॥ ३ ॥ नमया सुंदरी ताम वियजो,
पोहती निकट सुर लोक जी ॥ देवपणे सुर सुख
लीलायें, जोगवे अतिहें अशोक जी ॥ न० ॥ ४ ॥
पंक्ति तांडव नित्य अखंभित, देव पडह पट वाजे
जी ॥ विविध तूरिनिर्घोष प्रसारें, विबुध गृहांगण गा
जे जी ॥ न० ॥ ५ ॥ एम सुपर्व तणी प्रभुताइ, जो
गवे महासती जीव जी ॥ पुनरपि मानव जव पडि
वजशे, महा विदेहे तदीव जी ॥ न० ॥ ६ ॥ लक्ष्मेशे
नृप पदवी ससद्गुणी, जीतशे अरियण वृंद जी ॥
विषय तणां सुख निज वनिताश्री, अनुभवशे एह
अमंद जी ॥ न० ॥ ७ ॥ सह गुरु वाणी श्रवणे सु

णशे, जाणशे अगिर संसार जी ॥ परदरी गण्य रा
 मा तेम प्रमदा, याशे शुनि अखगार जी ॥ न०
 ॥ ७ ॥ पावशे निरतिनारे संयम, अष्ट कर्म कुरु
 करशे जी ॥ केवल ज्ञान महासुख दाता, तेह ति
 हा अनुसरशे जी ॥ न० ॥ ८ ॥ करशे सुखर क
 मलनी रचना, देशना मधुरी देशे जी ॥ अक्षय प
 दर्बी अक्षय लीला, परमोदयर्षी लहेश जी ॥ न०
 ॥ १० ॥ एह चरित्र नमया सतीतुं, शील संबंधें गा
 युं जी ॥ जाणी गेहली नमया यज्ञे, राखुं शील
 सवायुं जी ॥ न० ॥ ११ ॥ एह संबंध ठे शील कुला
 में, जो जो सुगुण जगीसं जी ॥ जरहेसर बाहुय
 क्षि वृत्ति, प्रगट संबंध प दीसे जी ॥ न० ॥ १२ ॥ ए
 संबंध ठे साचो पण कोई, कल्पित करी मत जाणो
 जी ॥ आविर्भूत संबंध अपर जे, कवि रचना ते प्र
 माणो जी ॥ न० ॥ १३ ॥ धन्य धन्य नमया महा
 सती केरी, सरस कथा में गाइ जी ॥ कीधी पावन
 सुंदर रसना, सरस सुखद उपाइ जी ॥ न० ॥ १४ ॥
 एह महासतीनी परें कोइ, पालशे शील अजंग
 जी ॥ ते पण वांछित सुख अनुभवशे, लेहशे ज्ञान
 तरंग जी ॥ न० ॥ १५ ॥ चोथुं व्रत निवृत्तिनुं कार

(१९४)

ए, तेम सौजाग्य प्रदाता जी ॥ यति उपदेशें एम
सुखहुंती, शील महोदय शाता जी० ॥ न० ॥ १६ ॥
नमयासुंदरी केरुं रच्युं ठे, चरित्र अनोपम एह
जी ॥ कवि कुल कोइ हांसी न करजो, करजो शुचि
ससनेह जी ॥ न० ॥ १७ ॥ मेंतो सुकवि जरुंसो आ
णी, रास रच्यो ठे साचें जी ॥ नहीं तो शी मति मा
हरी जे हुं, होड्य करुं करी वांचे जी ॥ न० ॥ १८ ॥
तेह कारण ए रास रसीलो, नमया सुंदरीकेरो जी
॥ कंठाजरण पणे सहु करजों, पण दूषण मत हेरो
जी ॥ न० ॥ १९ ॥ विधिमुख शिवमुख रुषि
इंडु (१७५४) संवत संझा एहजी ॥ मास पोष
वदी तेरश दिवसें, उशना वार गुण गेह जी ॥ न०
॥ २० ॥ तुंगया नगरी उपमा पामे, समी नयरी सु
विशेषे जी ॥ चतुरपणें चोमासुं कीधुं, सद्गुरुने
आदेशें जी ॥ न० ॥ २१ ॥ तप गढ गगन विकाशन
दिनमणी, विजयरत्नसूरि राजें जी ॥ रचना रास
तणी ए कीधी, आग्रह संघने काजें जी ॥ न० ॥ २२ ॥
श्री विजयसेन सूरेश्वर सेवक, कीर्तिविजय उव
द्याया जी ॥ तस पद पंकज षट्पद उपमा, मान वि
जय कविराया जी ॥ न० ॥ २३ ॥ जास शिष्य क

(१७५)

वि कुल वक्रःस्थल, मंडन नूपण दिव्य जी ॥ रूपवि
जय पंडित सुपसार्ये, कीर्ति सुधा सम सेव्य जी ॥
न० ॥ २४ ॥ कृपा प्रसाद लहीने तेहनो, मोहनवि
जयें जह्वास जी ॥ त्रेसठमी ढाले करी गायो, नर्मदा
केरो रास जी ॥ न० ॥ २५ ॥ जे कोइ जणशे गणशे
सुणशे, ते लहेशे परमानंद जी ॥ मंगल प्राप्ति सदा
घर अंगण, शोचशे शोचा वृंद जी ॥ न० ॥ २६ ॥
घर घर लीला मंगल लखी, प्रगटे पुण्य प्रकाश जी
॥ श्रोता जन श्रुति धरजो सहु को, मोहन वचन वि
लास जी ॥ न० ॥ २७ ॥ इति श्री पंडित श्री मोहन
विजय विरचित नर्मदा सुंदरीरास शीलविषये
संपूर्णः ॥ शुभं भवतु ॥



(१९४)

ए, तेम सौजाग्य प्रदाता जी ॥ यति उपदेशें एम
 सुखहुंती, शील महोदय शाता जी० ॥ न० ॥ १६ ॥
 नमयासुंदरी केरुं रच्युं ठे, चरित्र अनोपम एह
 जी ॥ कवि कुल कोइ हांसी न करजो, करजो शुचि
 ससनेह जी ॥ न० ॥ १७ ॥ मेंतो सुकवि जरुं सो आ
 णी, रास रच्यो ठे साचें जी ॥ नहीं तो शी मति मा
 हरी जे हुं, होख्य करुं करी वांचे जी ॥ न० ॥ १८ ॥
 तेह कारण ए रास रसीलो, नमया सुंदरीकेरो जी
 ॥ कंठाज्जरण पणें सहु करजों, पण दूषण मत हेरो
 जी ॥ न० ॥ १९ ॥ विधिमुख शिवमुख कृपि
 इंडु (१७५४) संवत संज्ञा एहजी ॥ मास पोष
 वदी तेरश दिवसें, उशना वार गुण गेह जी ॥ न०
 ॥ २० ॥ तुंगया नगरी उपमा पामे, समी नयरी मु
 विशेषे जी ॥ चतुरपणें चोमासुं कीधुं, सद्गुरुने
 आदेशें जी ॥ न० ॥ २१ ॥ तप गठ गगन विकाशन
 दिनमणी, विजयरत्नसूरि राजें जी ॥ रचना रास
 तणी ए कीधी, आग्रह संवने काजें जी ॥ न० ॥ २२ ॥
 श्री विजयनेन सूरेश्वर सेवक, कीर्तिविजय उव
 द्याया जी ॥ तस पद पंकज पट्टपद उपमा, मान वि
 जय कविराया जी ॥ न० ॥ २३ ॥ जास शिष्य क

वि कुल वक्रःस्थल, मंडन जूपण दिव्य जी ॥ रूपवि
 जय पंडित सुपसायें, कीर्ति सुधा सम सेव्य जी ॥
 न० ॥ २४ ॥ कृपा प्रसाद लहीने तेहनो, मोहनवि
 जयें जल्लास जी ॥ त्रेसठमी ढाले करी गायो, नर्मदा
 केरो रास जी ॥ न० ॥ २५ ॥ जे कोइ जणशे गणशे
 सुणशे, ते लहेशे परमानंद जी ॥ मंगल प्राप्ति सदा
 घर अंगण, शोचशे शोचा वृंद जी ॥ न० ॥ २६ ॥
 घर घर लीला मंगल लछी, प्रगटे पुण्य प्रकाश जी
 ॥ श्रोता जन श्रुति धरजो सहु को, मोहन वचन वि
 लास जी ॥ न० ॥ २७ ॥ इति श्री पंडित श्री मोहन
 विजय विरचित नर्मदा सुंदरीरास शीलविषये
 संपूर्णः ॥ शुभं भवतु ॥
